# चौथी पुस्तक

## पाठ १

## प्रार्थना और उपदेश

( १ )

कब से तुम्हारी राह दिन रात देखता हूँ.
दया-धन, दया कर दया दिखलाओ तुम।
यह तो बताओ तुम छिपे किस लोक में हो.
आओ शीघ्र मुझे मत और तरसाओ तुम॥
राधा के सहित करो मेरे उर में निवास
और सब मेरी भव-बाधा को मिटाओ तुम।
जाऊं मैं कहाँ गोपाल शरण तुम्हारी छोड़
नाम के ही नाते अब मुझे अपनाओ तुम॥

( २ )

न्याय, दया, सत्य, प्रेम को ही अपनाओ तुम
यदि तुम्हें जग में कहाना दिव्य नर है।
सबकी भलाई करो सुयश कमाओ खूब
मर कर भी जो तुम्हें बनना अमर है॥

---

# चौथी पुस्तक

## पाठ १

## प्रार्थना और उपदेश

( १ )

कब से तुम्हारी राह दिन रात देखता हूँ,<br>
दया-धन, दया कर दया दिखलाओ तुम ।<br>
यह तो बताओ तुम छिपे किस लोक में हो,<br>
आओ शीघ्र मुझे मत और तरसाओ तुम ॥<br>
राधा के सहित करो मेरे उर में निवास<br>
और सब मेरी भव-बाधा को मिटाओ तुम ।<br>
जाऊँ मैं कहाँ गोपाल शरण तुम्हारी छोड़<br>
नाम के ही नाते अब मुझे अपनाओ तुम ॥

( २ )

न्याय, दया, सत्य, प्रेम को ही अपनाओ तुम<br>
यदि तुम्हें जग में कहाना दिव्य नर है ।<br>
सबकी भलाई करो सुयश कमाओ खूब<br>
मर कर भी जो तुम्हें बनना अमर है ॥

मत करवाओ कभी उससे कठोर काम
सोचो जरा कितना तुम्हारा मृदु कर है।
आने दो न उर में कदापि मद मत्सर को
क्या न जानते हो वह ईश्वर का घर है॥

कठिन शब्द—

**दया-धन, भव-बाधा, दिव्य, मृदु, मत्सर, उर**

प्रश्न—

( १ ) तरसाओ क्रिया किस शब्द से बनी है ?
( २ ) प्रथम पद्य की अन्तिम दो पंक्तियों में क्या भाव है ?
( ३ ) अमर बनना और राह देखना का क्या अर्थ है ?

---

पाठ २

# महाराज पञ्चम जार्ज और महारानी मेरी

तुम यह जानते हो कि आजकल भारतवर्ष में अँगरेजों का राज्य है और पञ्चम जार्ज हम लोगों के महाराज हैं और मेरी महारानी है। आज हम उनके सम्बन्ध में तुम्हें कुछ बातें बतलाना चाहते हैं।

महाराज पञ्चम जार्ज स्वर्गीय महाराज सप्तम एडवर्ड के पुत्र हैं। परन्तु ये उनके ज्येष्ठ पुत्र नहीं हैं। इसी से इन्हें अपने बाल्यकाल में युवराज के समान ठाटबाट से जीवन व्यतीत नहीं करना पड़ा। अँगरेजी भाषा और धर्म की शिक्षा पा लेने के बाद वे जहाज पर काम सीखने के लिये गए। उस समय उनकी अवस्था केवल तेरह वर्ष की थी। जहाज पर वे एक साधारण मल्लाह की भाँति रहते और काम करते थे। नाविक विद्या सीखने के लिये उन्हें बड़ा परिश्रम करना पड़ता था। यही कारण है कि महाराज पञ्चम जार्ज को मल्लाहों और मजदूरों के प्रति बड़ी सहानुभूति है। सन १९०१ में अपने ज्येष्ठ भ्राता की मृत्यु हो जाने पर वे युवराज हुए। इँग्लैंड में युवराज प्रिन्स आव् वेल्स कहा जाता है। पिता की मृत्यु हो जाने पर सन १९१० में वे लंदन में राजगद्दी पर बैठे।

यों तो जब से भारतवर्ष में अँगरेजों का राज्य स्थापित हुआ है, तब से भारतवर्ष का सम्बन्ध इँगलैंड के राजाओं से हो गया है: पर सन १८५८ ई० तक यहाँ ईस्ट इंडिया कम्पनी ही शासन करती रही है। सन १८५७ ई० के विद्रोह के पश्चात ईस्ट इंडिया कम्पनी के अधिकार का अन्त हो गया और महारानी विक्टोरिया भारतवर्ष की प्रथम महारानी हुईं। उन्होंने एक घोषणा प्रकाशित की। उसमें

अनुराग स्वाभाविक ही है, पर अपनी प्रजा के प्रति भी उनका व्यवहार सदैव प्रेम-पूर्ण रहता है। महाराज पञ्चम जार्ज और महारानी मेरी का गार्हस्थ्य जीवन बड़ा ही सुखमय है। भगवान उन्हें दीर्घायु करें।

कठिन शब्द—

**नाविक विद्या, सहानुभूति, घोषणा, हस्तक्षेप, उद्यम और व्यवसाय, अनुराग, भाग्योदय, गार्हस्थ्य जीवन, दीर्घायु।**

प्रश्न—

( १ ) आज-कल प्रिंस आव् वेल्स कौन हैं ?
( २ ) महारानी विक्टोरिया की घोषणा क्या थी ?

---

पाठ ३

## एक घिसे पैसे की कहानी

मेरा नाम पैसा है। पहले मैं ताँबे की खान में रहता ।। वहाँ मैं कब से रहता था इसका मुझे कुछ भी पता .ं। वहाँ मेरे चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार था। .ार में कहाँ क्या हो रहा है, इसको मुझे कुछ भी

खबर न थी। मै बहुत चाहता था कि बाहर चलूँ और देखूँ कि संसार में क्या हो रहा है। पर खेद की बात है कि मैं बाहर निकलने में असमर्थ था। वहाँ मेरा ऐसा रूप न था जैसा आप अब देख रहे हैं। वहाँ मैं ताँबे के ढेर में गड़ा पड़ा था। वहाँ पड़े-पड़े मेरा जी जैसा घबड़ा रहा था उसे मैं ही जानता हूँ।

परमात्मा की लीला बड़ी विचित्र है। किसी के दिन सदा एक से नहीं रहते। दुःख के बाद सुख और सुख के बाद दुःख, यह बराबर होता ही रहता है। इसीलिये मेरी भी दशा बदली। अब वह कथा सुनिए, जिस तरह मुझे नया रूप मिला।

एक दिन एक मजदूर ने उस अँधेरे घर से मुझे खोद निकाला। वहाँ से मैं गाड़ी में लदकर कलकत्ते की टकसाल में गया।

कलकत्ते के कारीगरों ने मुझे आग में गलाया और साँचे में ढाल कर गोल बनाया। भट्ठी में तपाने से मेरा रङ्ग सोने की नाईं चमकने लगा। सैकड़ों-हजारों वर्षों का जमा हुआ मेरा मैल आग ने भस्म कर डाला।

फिर मेरी पीठ पर मेरा नाम और मेरा जन्म-संवत और छाती पर महाराज पञ्चम जार्ज का नाम और चि

छाप दिया गया। इतना सब हो जाने पर मुझे बाहर निकलने का अवसर मिला।

मैं अकेला नहीं हूँ; मेरे बहुत से भाई हैं। हम सब देखने मे एक ही से है। हम सब द्विज हैं। हमारा भी जन्म दो बार होता है। पहला जन्म हमारा खान मे होता है और दूसरा टकसाल में। इसलिये हमारी गणना भी द्विजों में होनी चाहिए।

अच्छा, अब आगे का हाल सुनिए। एक दिन एक बनिया हम सबको एक थैली में भर कर अपने घर ले गया। तभी से मैं बराबर हाथों-हाथ घूम रहा हूँ। सहस्रों आदमियों के हाथों पर मैं घूम आया हूँ। मै बड़ी-बड़ी परदेवाली स्त्रियों तक के हाथों मे हो आया हूँ। यहाँ तक कि कई बार राजमहलों में भी मैं बेखटके चला गया। मुझे वहाँ किसी पहरेदार ने नहीं रोका। मै लोगों को बड़ा प्यारा हूँ। मुझे लोग बड़ी सावधानी से रखते हैं। कोई थैली में रखता है तो कोई सन्दूक में रखता है। कोई-कोई तो मुझे भूमि मे भी गाड़ देते हैं।

इसी भाँति घूमता हुआ एक बार मैं प्रयाग के माघ-[illegible] में जा पहुँचा। उस साल बड़ा मेला भरा था। घूमता [illegible] मैं एक भूखे साधु के हाथ मे जा पड़ा। वह मुझे [illegible]कर बहुत प्रसन्न हुआ।

यों तो मुझे जो पाते हैं वे ही प्रसन्न हो जाते हैं पर वह लँगड़ा साधु मुझे पाकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसकी प्रसन्नता देखकर मैंने चाहा कि अब मैं इसी साधु के पास रहूँ। पर वह भी मुझे न रख सका। रख कहाँ से सकता? बेचारा मारे भूख के तड़प रहा था। दो दिन से उसे एक टुकड़ा भी न मिला था। उसने मुझे एक दूकानदार को देकर भुने हुए चने ले लिए और उन्हें खाकर उसने अपने प्राण बचाए। दूकानदार ने एक छेद से मुझे एक बक्स में डाल दिया। बक्स में जाने पर मुझे वहाँ मेरे बहुत से भाई मिले। मैं अपने भाइयों के पास थोड़ी देर भी न बैठने पाया था कि बनिये के लड़के ने मुझे एक हलवाई की दूकान पर जा फेंका और मेरे बदले में मिठाई लेकर खा गया। मैं इसी प्रकार, कितनी ही दूकानों, कितने ही राजमहलों और कितनी ही छोटी-छोटी झोपड़ियों में घूमता रहा हूँ। मैं अपने घूमने की सारी कहानी कहने लगूँ तो महाभारत का दूसरा पोथा तैयार हो जाय।

घूमते-घूमते मेरा सारा शरीर घिस गया। मैं अपने बुढ़ापे में कलकत्ते की टकसाल में हूँ। अब मैं यहाँ से बाहर नहीं जा सकता। मैं फिर से गला कर

जाऊँगा। जब मैं नए रूप में बाहर निकलूँगा तब फिर मेरा आदर होने लगेगा।

कठिन शब्द—

**लीला, टकसाल, द्विज।**

प्रश्न—

(१) पैसा द्विज कहलाने में अभिमान क्यों समझता है?

(२) टकसाल से निकलने पर पैसे के भ्रमण का कुछ हाल अपने मन से कहो।

---

पाठ ४

## नाव

चला करती पाँतों पर रेल।
सड़क पर मोटर करती खेल॥
हवा में वायुयान का ढंग।
देखकर होते हैं हम दंग॥
इन्हें हम समझ न पाते हैं।
न जाने, क्यों चकराते हैं॥

अहा ! पानी पर चलती नाव ।
देख लो, दिखलाती है चाव ॥
हृदय में भरती है आनंद ।
हमें तो है यह अधिक पसंद ॥
हमें यह सुख पहुँचाती है ।
हमारा जी बहलाती है ॥

गगन में घिरते जब घन घोर ।
बरसता है पानी अति जोर ॥
ताल नद हो जाते हैं पूर ।
फैलता पानी अति ही दूर ॥
नजर हम जिधर घुमाते हैं ।
उधर बस पानी पाते हैं ॥

निरखने नव बरसात-बहार ।
नाव पर हो हम लोग सवार ॥
जहाँ तक लोग न सकते तैर ।
वहाँ तक करते हैं हम सैर ॥
घूमने का सुख पाते हैं ।
गीत वर्षा के गाते हैं ॥

रेल से लेते तनिक न काम।
नहीं मोटर का लेते नाम ॥
चाहते नहीं हवाई-यान।
नाव पर ही बस तम्बू तान ॥
घूमने को हम जाते हैं।
घूमकर वापस आते हैं ॥

नाव गहरे जल पर जिस काल।
चपल चलती है डगमग चाल ॥
अहा! करती तब, खूब कमाल।
देखते ही बनता है हाल ॥
कभी वह दौड़ लगाती है।
अजी मोटर बन जाती है ॥

चलाते माँझी डाँड़ सुधार।
एक ही साथ, अनेकों बार ॥
डाँड़ दिखते ज्यों पंख पसार।
बही जाती चिड़िया जलधार ॥
नाव चिड़िया बन जाती है।
और उड़ती-सी जाती है ॥

रेल का इञ्जिन, मोटरकार।
जहाँ सब रहते हैं बेकार॥
न हाथी, घोड़े देते काम।
वहाँ पर नाव कमाती नाम॥
अनोखा काम दिखाती है।
बड़प्पन भारी पाती है॥

नाव पर होकर लोग सवार।
बड़ी नदियों को होते पार॥
मनों रख अपने ऊपर भार।
नाव देती उस पार उतार॥
खेल का खेल खिलाती है।
काम का काम बनाती है॥

देखिए, जरा समय का फेर।
नाव पर होता जो अंधेर!
नाव थी जिस गाड़ी पर रही।
नाव पर गाड़ी है अब वही॥
समय जब पलटा खाता है।
काम उलटा हो जाता है॥

कठिन शब्द—

**ढंग, चाव, गगन, निरखते, यान, अनोखा, चपल, कमाल, साँझी।**

प्रश्न—

(१) पलटा खाना, नाम कमाना, चाव दिखलाना और देखते बनना से क्या अभिप्राय समझते हो ?

(२) "खेल का खेल" और "काम का काम" का क्या अर्थ है ?

---

पाठ ५

## पशु-पक्षियों का आपसी मेल

यह तो सभी जानते हैं कि हमारी भाँति पशु-पक्षी भी खाते-पीते, सोते-जागते और मरते-जीते हैं। परन्तु बहुत से लोग यह नहीं जानते कि पशु-पक्षी भी आपस में मेल रखते हैं। हम तुम्हें पशु-पक्षियों की सच्ची कहानियाँ सुनाते हैं।

लोग बहुधा कुत्ते पालते हैं। कुत्ता अपने स्वामी को बहुत चाहता है, यह तो सभी जानते हैं। परन्तु कुत्ता दूसरे पशु-पक्षियों से भी मेल रख सकता है। यह कम लोग जानते हैं।

एक मनुष्य को पशु-पक्षी पालने का बड़ा शौक था। उसने यह देखने के लिये कि पशु-पक्षी परस्पर कैसा व्यवहार करते हैं, अनेक पशु-पक्षी पाले। उस मनुष्य ने जब इन सबको एक ही स्थान में रक्खा तब पहले उन्हें बहुत बुरा मालूम हुआ। कभी कभी वे परस्पर लड़ने लगते थे परन्तु धीरे धीरे उनमें मेल होने लगा और वे पड़ोसियों की भाँति रहने लगे। यही नहीं, कुछ दिनों में उनमें ऐसा मेल हो गया जैसा कि एक ही परिवार के लोगों में होता है।

कभी कभी मुर्गी कुत्ते की पीठ पर बैठ जाती थी और कुत्ता बुरा न मानता था। बिल्ली और तोते का बैर प्रसिद्ध है, परन्तु यहाँ तोता और बिल्ली भी हिलमिल कर रहने लगे। ये सब पशु-पक्षी ऐसे हिल-मिल गए कि एक दूसरे के बिना उन्हें चैन नहीं पड़ता था।

अब दूसरी कहानी सुनो। एक घर में कई बच्चे थे। उन्होंने एक बिल्ली पाल रक्खी थी। कुछ दिनों के उपरान्त उन बच्चों के लिये उनके माँ-बाप ने कहीं से कई खरगोश के बच्चे भी मँगाए। ये बच्चे इतने छोटे थे कि वे अभी अपने आप दूध भी न पी सकते थे। कपड़े के टुकड़े को दूध में भिगोकर और मुँह में निचोड़कर उन्हें दूध पिलाया जाता था। दिन भर तो लड़के इन बच्चों को लेकर मार

खेलते रहे। जब संध्या हुई तब यह चिन्ता हुई कि रात में खरगोश के बच्चों को कहाँ सुलाया जाय। डर यह था कि कहीं ऐसा न हो कि बिल्ली उन पर टूट पड़े और उन्हें मार डाले। इस बात की जाँच करने के लिये उन लोगों ने बच्चों को बिल्ली के आगे डाल दिया। बिल्ली उन्हें देखकर न गुर्राई और न झपटी। यही नहीं, वह अपनी जीभ से उन्हें चाटचाट कर अपना स्नेह प्रकट करने लगी। तब से वे बच्चे बिल्ली ही के साथ रहने लगे। वे रात को उसी के पास सोते थे। बिल्ली स्नेहपूर्वक उनकी देखभाल करती थी। जब बच्चे बड़े हो गए तब वे कभी कभी छेड़-छाड़ कर बिल्ली को तंग भी किया करते थे। परन्तु इससे बिल्ली बुरा न मानती थी।

जिन लोगों के यहाँ गाय और कुत्ता दोनों पले रहते है उन्होंने अवश्य उनको स्नेहपूर्वक खेलते देखा होगा। कभी कभी वे झूठी लड़ाई भी करने लगते हैं। परन्तु यह लड़ाई प्यार की होती है। वे एक दूसरे को चोट नहीं पहुँचाते।

घोड़े अपने स्वामी से बहुत प्यार रखते हैं। युद्ध में सवारों को घोड़ों से बड़ी सहायता मिलती है। कई बार ऐसा हुआ है कि घोड़े ने अपने प्राण देकर अपने स्वामी के प्राण बचाए है। चारों ओर से गोलियाँ छूटती

रहती हैं तो भी घोड़ा अपने स्वामी के पास खड़ा रहता है।

सिंह बड़ा भयानक पशु है। उसके हृदय में दया नहीं होती। परन्तु वह भी मनुष्यों से हिल मिल जाता है। एक सरकस करनेवाली कम्पनी के पास कई सिंह थे। एक रात को खेल हो रहा था। जब घोड़ों के तरह-तरह के चमत्कार दिखाए जा चुके तब सिंह की बारी आई। एक पहलवान ने सिंह से कुश्ती लड़ी। पहलवान ने सिंह के मुँह में हाथ डाल दिया। वह कुछ न बोला। ऐसा प्रतीत होता था मानो वह एक पालतू कुत्ता है। फिर एक बकरा भी सिंह के साथ खेलता रहा। कभी कभी वह उसके ऊपर चढ़ जाता था और कभी नीचे से होकर निकल जाता था। सच्ची बात यह है कि क्या मनुष्य और क्या पशु-पक्षी सभी में प्रेम का भाव छिपा हुआ है।

कठिन शब्द—

**स्नेहपूर्वक, भयानक, चमत्कार, प्रतीत, भाव।**

प्रश्न—

(१) उस मनुष्य ने पशु-पक्षी क्यों पाले ?

(२) बिल्ली ने खरगोश के बच्चे क्यों न मार डाले ?

(३) सरकस में सिंह ने क्या क्या खेल किए ?

---

पाठ ६

## राजिम

सिहावा के पहाड़ों से निकल कर महानदी धमतरी के समीप से बहती हुई राजिम पहुँचती है। धमतरी के समीप खेत सींचने के लिये नहरें बनाई गई हैं जिनमें महानदी का जल लिया जाता है। राजिम में राजीवलोचन का मन्दिर है। राजिम के समीप पैरी तथा सोढ़ नदियों का सङ्गम हुआ है। सङ्गम के पास रेत में एक पक्के टीले पर कुलेश्वर महादेव का मन्दिर है जिसके ऊपर एक छतनार पीपल का वृक्ष है। कभी कभी मन्दिर का चबूतरा नदी की जलधारा में डूब जाता है।

पहले जब रेल न थी तब उत्तरी भारत के लोग राजिम होकर अथवा रत्नपुर से शबरीनारायण होकर जगन्नाथजी की यात्रा को जाते थे। कोई कोई सम्बलपुर पहुँच कर महानदी में नौका द्वारा यात्रा करते, और जगन्नाथजी पहुँचते थे। वर्षा में राजिम या शबरीनारायण से नौका द्वारा जाना भी संभव है क्योंकि उस समय नदी मे जल पर्याप्त रहता है। जगन्नाथजी के यात्रियों का विश्रामस्थान होने के कारण राजिम, शबरीनारायण आदि स्थान तीर्थ माने जाने लगे। वहाँ मन्दिर, घाट, धर्म-

शालाएँ आदि बन गईं तथा संस्कृत-पाठशालाएँ भी खुल
गईं। शिवरात्रि के अवसर पर कुलेश्वर महादेव के दर्शन
के लिये बड़ी भीड होती है, वही भीड़ राजीवलोचन भगवान
के दर्शनों को आती है। वही समय राजिम के मेले का है।

भगवान राजीवलोचन का मंदिर एक ऊँचे चबूतरे
पर एक बड़े घेरे के भीतर बना है। बाहरी खंभे के काले
पत्थर पर एक शिलालेख है। इस मंदिर के पुजारी ब्राह्मण
नहीं हैं। आस-पास और भी कई एक मंदिर हैं और कुछ
मंदिरों के खँडहर हैं जिससे अनुमान होता है कि राजिम
प्राचीन काल से हिन्दुओं का तीर्थस्थान है।

शिवरात्रि से प्रारम्भ होकर एक मास तक यहाँ मेला
लगता है। एक महीना खूब चहल पहल रहती है। मेले
के बाजार में यात्रियों की आवश्यकताओं की विविध वस्तुएँ
मिलती हैं। कई व्यापारियों की वार्षिक आमदनी
का समय यह मेला ही है। मेले में खिलौने तथा विनोद
के पदार्थ खूब बिकते हैं। व्यापारियों से जो बाजार-कर
लिया जाता है वह मेले के प्रबंध में व्यय होता है। बङ्गाल
नागपुर रेलवे की एक छोटी शाखा रायपुर से अभनपुर
होती हुई राजिम के सामने की बस्ती, नवापारा तक
आती है। इसी लाइन की एक दूसरी शाखा अभनपुर से
धमतरी चली जाती है।

प्रायः देखा जाता है कि प्राचीन प्रसिद्ध स्थानों में बड़े बड़े इमली के वृक्ष बहुतायत से पाये जाते हैं। युक्त-प्रदेश में अयोध्या और मध्यप्रदेश में धमधा तथा रत्नपुर इसके प्रमाण हो सकते हैं। राजिम में भी इमली के वृक्ष बहुत थे। परन्तु वे कोयला बनाने के लिए काट डाले गए हैं। फिर भी बहुतेरे वृक्ष खड़े हैं। उन्हें देखकर इस स्थान की प्राचीनता का अनुभव होता है।

संस्कृत-पाठशाला के अतिरिक्त यहाँ एक अच्छे शालाभवन में एक वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल भी लगता है।

राजिम से ५ मील की दूरी पर महानदी के तट पर चम्पारण्य नामक एक पवित्र स्थान है, वहाँ पर कभी किसी जैन साधु ने निवास किया था। अब भी जैन बहुधा उस स्थान के दर्शनों की अभिलाषा से वहाँ जाते और ठहरते हैं।

कठिन शब्द—

**सम्भव, पर्याप्त, शिलालेख, अनुमान, राजीवलोचन, अनुभव, अभिलाषा।**

प्रश्न—

(१) कुलेश्वर महादेव का मन्दिर कहाँ बना है?

(२) राजिम की प्रसिद्धता का कारण क्या है।

(३) राजिम का मेला कब लगता है?

---

# आनन्द का स्वरूप

भीख माँगकर नित खाते हैं,
चिथड़े भी पा जाते हैं।
जोड़-जाड़कर जिन्हें ओढ़ ये,
अपना समय बिताते हैं॥

कहाँ रात को सोना होगा,
खटका रहता है दिन-रात।
गर्मी जाड़ा सभी समय में,
हो चाहे अविरल बरसात॥

सुख का कुछ भी नाम नहीं है,
तो भी देखो है यह हाल।
खड़े यहाँ ये यों हँसते हैं,
मानो हाथ लगा हो माल॥

किन्तु नहीं, यह बात नहीं है,
हुआ इन्हें है प्रभु का ध्यान।
इसीलिये दुख भूल गया है,
उनकी करुणा मन में जान॥
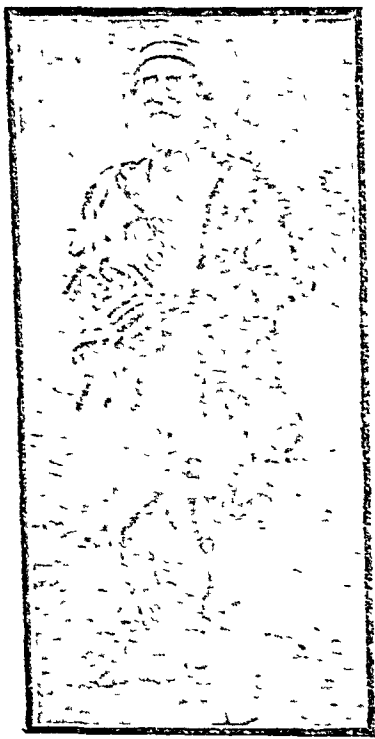
आनन्द का स्वरूप

कठिन शब्द—

**अविरल, माल, करुणा।**

प्रश्न—

(१) असली आनन्द क्या है ?
(२) धनी से अधिक साधु क्यों प्रसन्न रहता है ?

---

पाठ ८

# ध्रुव-चरित्र

ऐसा कौन पढ़ा-लिखा हिन्दू होगा जो मनु महाराज के नाम से परिचित न हो। ये बड़े धर्मात्मा राजा हो गए हैं। इन्हीं के पुत्र उत्तानपाद के यहाँ ध्रुव ने जन्म लिया। ध्रुव की माता का नाम सुनीति था। इनकी एक सौतेली माता भी थीं, जिनका नाम सुरुचि था। उत्तम इसी सौतेली मा का बेटा था। उत्तानपाद सुनीति और ध्रुव को कम तथा सुरुचि और उत्तम को अधिक प्यार करते थे।

एक दिन राजा उत्तानपाद अपने दूसरे बेटे उत्तम को गोदी में लिए हुए बैठे थे। समीप ही उत्तम की

माता सुरुचि भी बैठी थीं। ध्रुव खेलते-खेलते राजा के पास पहुँचकर गोदी में बैठने का हठ करने लगे। सुरुचि से यह न देखा गया। उसने ध्रुव से कहा—बच्चा! तुम्हारा जन्म दूसरी माता से हुआ है, अतः तुम इनकी गोदी में नहीं बैठ सकते। यह गोदी केवल मेरे ही पुत्र के लिये है।

क्षत्रिय-बालक ध्रुव यह वचन न सह सका। उसके कोमल हृदय में बड़ी चोट लगी। वह रोता हुआ अपनी माता के पास गया। सुनीति ने उसको पुचकारकर उसके रोने का कारण पूछा। ध्रुव ने सारी वार्ता कह सुनाई। अपने बच्चे के प्रति सौत का यह कठोर व्यवहार देखकर सुनीति बड़ी उदास हुई। उसने दुःख के साथ ध्रुव से कहा—हे पुत्र, यह सत्य है कि तुम अपने पिता के प्यारे नहीं हो। जान पड़ता है कि हम लोगों ने पूर्व-जन्म में कोई बड़ा पाप किया है, जिसका फल अब हम लोगों को भोगना पड़ रहा है। अस्तु, तुम्हें सन्तोष करना चाहिए; जो प्रारब्ध में होता है वही मिलता है। यदि इन बातों से दुःख हुआ है तो पुण्य करो, धर्मात्मा और सबके मित्र बनकर रहो। यदि तुम ऐसा तो संसार की सारी सम्पत्तियाँ तुम्हारे पीछे-पीछे लगेंगी।

यह सुनकर ध्रुवजी ने कहा—हे माता, सुरुचि के दुर्वचनों ने मेरे हृदय पर ऐसी चोट पहुँचाई है कि तुम्हारी बात उसमें नहीं ठहरती। अब तो मेरे जी में यही है कि कोई अनूठा कार्य्य करके मैं ऐसा पद प्राप्त करूँ जो आज तक किसी को न मिला हो। मेरे भाई उत्तम पिताजी का दिया हुआ राज्य भोगें। मुझे दूसरे की दी हुई वस्तु लेना पसन्द भी नहीं। मैं ऐसी वस्तु लूँगा जो आज तक मेरे पूज्य पिताजी को भी प्राप्त नहीं हुई।

यह कहकर ध्रुवजी घर से निकल पड़े। किसी अरण्य में कुछ ऋषिगण ठहरे हुए थे। उनसे ध्रुवजी ने अपनी सब व्यथा कही और उनसे सहायता माँगी। मरीचि नामक ऋषि ने उनसे कहा—हे राजकुमार ! जो लोग अविनाशी परमात्मा की आराधना नहीं करते उनको ऊँचा स्थान नहीं मिलता। इसलिये, तुम अविनाशी भगवान की आराधना करो। इसी तरह प्रत्येक ऋषि ने उन्हें परमेश्वर की आराधना करने को ही कहा। तदुपरान्त ध्रुवजी ने उनसे आराधना करने की रीति बतलाने की प्रार्थना की। ऋषियों ने उन्हें इसकी यथेष्टरूप से शिक्षा दी।

सब बातें जानकर ध्रुवजी सबको प्रणाम कर वहाँ से मधुवन को चल दिए। वहाँ पहुँचकर, जिस तरह ऋषियों

ने बतलाया था उसी तरह, वे तपस्या करने लगे। उन्होंने अपनी इन्द्रियों और मन को रोक लिया। वे ईश्वर की आराधना में ऐसे लग गए कि उन्हें कुछ खबर ही न रही। वे समझने लगे कि हमारे हृदय में भगवान हैं। वे उन्हीं का ध्यान करने लगे।

अच्छे काम में तो अनेक विघ्न हुआ ही करते हैं। एक दिन कोई स्त्री सुनीति का रूप बनाकर ध्रुवजी के पास आकर कहने लगी—प्यारे पुत्र, तुम्हारी आयु अभी तप करने योग्य नहीं है, अभी तो तुम्हारे खेलने-कूदने का ही समय है। इस कठिन तपस्या को त्याग दो। यदि तुम इस हठ को नहीं छोड़ोगे तो तुम्हारे सामने ही मैं अपने शरीर का अन्त कर दूँगी। जब इस पर भी ध्रुवजी का ध्यान न डिगा तो वह यह कहकर चली गई कि हे पुत्र, देख, ये भयङ्कर राक्षस शस्त्र लिए हुए तेरे सामने खड़े हैं। यहाँ से भाग जा।

सुनीति के चले जाने पर देवताओं के भेजे हुए अनेक भयङ्कर राक्षस उनकी तपस्या में नाना प्रकार से विघ्न डालने लगे। पर, ध्रुवजी पूर्ववत ध्यान में मग्न रहे। तब राक्षसगण हारकर चले गए।

यह देखकर देवता बहुत डरे। वे झट भगवान के

पास जाकर प्रार्थना करने लगे कि हे महाराज, ध्रुव को शीघ्र ही प्रसन्न करना चाहिए, वह बड़ी घोर तपस्या कर रहा है। हे प्रभो ! कृपया तुरन्त जाकर उसकी कामना पूरी कीजिए।

यह प्रार्थना करके देवता अपने-अपने निवास-स्थान को लौटकर चले गए। और भगवान ध्रुवजी के पास पहुँचकर बोले—प्यारे ध्रुव ! तुम्हारी तपस्या, प्रेम और कठिन आराधना से हम प्रसन्न हुए हैं। अब तुम जो चाहो सो वर माँगो।

भगवान का वचन सुनते ही ध्रुवजी प्रेम से विह्वल हो गए। उन्होंने आँखें खोलीं। वे भगवान की स्तुति तो करना चाहते थे, पर करते कैसे ? उन्होंने पढ़ा-लिखा तो था ही नहीं। झट उनके चरणों पर गिर पड़े और भगवान से कहने लगे कि यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो ऐसी कृपा कीजिए कि जिससे मैं आपकी स्तुति कर सकूँ। मैं चाहता हूँ कि आपकी महिमा गाऊं, पर असमर्थ हूँ। यह सुनकर भगवान ने अपना शङ्ख ध्रुवजी के मुँह से लगा दिया। उसके लगते ही ध्रुवजी, बिना पढ़े ही, सब विद्याओं में पारङ्गत हो गए और स्तुति करने लगे।

स्तुति के उपरान्त भगवान ने ध्रुव से वर माँगने को कहा, पर ध्रुवजी ने उत्तर दिया कि आपके प्रसन्न होने

से मेरा सब श्रम सफल हुआ। अब मुझे किसी वस्तु की चाह नहीं रही। परन्तु भगवान ने वरदान के सम्बन्ध में आग्रह किया। तब ध्रुव ने कहा कि आप अन्तर्यामी हैं। फिर भी, मैं कहता हूँ कि मेरी सौतेली मा ने मेरा निरादर किया है, इसलिये आप मेरे लिये कोई ऐसा स्थान दीजिए जो आज तक किसी को न मिला हो।

भगवान ने कहा कि अच्छा, तुमने जो माँगा सो मैने दिया। तुम्हारी माता भी तुम्हारे पास ही ऊंचे लोक में तारा बनकर रहेगी।

ध्रुवजी की मनोकामना पूरी करके भगवान चले गए। ध्रुवजी भी बहुत दिन तक सुख भोग कर अपने लोक को चले गए। उनकी माता भी उन्हीं के साथ सबसे ऊँचे लोक में गईं। आकाश के जिस तारे को ध्रुव-तारा कहते हैं वही ध्रुवजी का लोक है।

कठिन शब्द—

**कोमल, पुचकार, अस्तु, प्रारब्ध, सम्पत्तियाँ, अरण्य, व्यथा, अविनाशी, तदुपरान्त, आराधना, यथेष्टरूप, विघ्न, पूर्ववत, विह्वल, पारंगत, आग्रह, अन्तर्यामी, निरादर, मनोकामना।**

प्रश्न—

(१) किस बात से ध्रुव के चित्त में इतनी चोट पहुँची कि वे तपस्या करने के लिये वन में चले गए?

(२) ऊँचा स्थान किसको मिलता है? ऊँचा स्थान पाने के लिये कौन सा साधन है?

(३) ध्रुवतारा किसे कहते हैं?

---

पाठ ९

## सुरभी का सन्तति-प्रेम

देवलोक में सुरभी नाम की एक गौ थी। उस लोक की सब गो-जाति इसी से उत्पन्न हुई थी। एक दिन सुरभी देवताओं के राजा इन्द्र के सामने जा खड़ी हुई। उसके बड़ी बड़ी सुन्दर आँखों से आँसू बह निकले। इन्द्र ने पूछा—माता! तू ऐसी बिलख बिलख कर क्यों रो रही है? तुझे ऐसा कौन सा कष्ट है जिसके कारण तू ऐसी व्याकुल है? क्या तुझ पर कोई आपत्ति आ गई है?

सुरभी—देवराज, मुझ पर तो कोई आपत्ति नहीं आई और न मुझे अपने लिये कुछ कहना ही है। मेरा

सारा दुःख मेरी सन्तान के कारण है। जिस माता की सन्तान का जीवन इतना कष्टकर हो वह सुख से कैसे रह सकती है ?

इन्द्र—भला बता तो सही, तेरी सन्तान को क्या कष्ट है ?

सुरभी—महाराज ! उसके कष्टों का ठिकाना है ? आप भी देखते होंगे कि किसान जिन बैलो के कठिन परिश्रम से इतना अन्न उत्पन्न करते है उन्हीं के साथ कैसा बुरा वर्ताव करते हैं। उन्हें हल मे जोतते और उनसे दिन भर कठिन परिश्रम लेते हैं। उनमें से कई भूखों मरने के कारण निर्बल हो जाते हैं और खेतो के ढेलों पर पैर न जमने के कारण गिर गिर पड़ते हैं। तिस पर भी ये निष्ठुर किसान उनकी पूँछ मरोड़ मरोड़ और मार मार उन्हें पीड़ा पहुँचाते हैं। गाड़ीवान तथा बंजारे भी मेरे इन पुत्रों पर तनिक भी दया नही करते। इन्ही के दुःख से मै सदा दुःखित रहा करती हूँ और आपकी शरण में न्याय की प्रार्थना करने आई हूँ।

इन्द्र—तेरे पुत्रों में से कितने ऐसे दुःखी है ? क्या संख्या अधिक है ?

सुरभी—महाराज ! अधिक क्या, प्रायः सभी की यो दशा है। हे भगवन ! इन कष्टों को देखकर मुझे

कठोर पीड़ा होती है। इसीसे मैं इतनी व्याकुल हो दिन रात रोती रहती हूँ।

महाराज इन्द्र भी सुरभी का दुःख देख उसके पुत्रों के क्लेश कम करने के लिये प्रयत्न करने लगे। उनकी आज्ञा पाते ही मेघों के दल आकाश में फैल पानी बरसाने लगे। भूमि के गीली होने से बैलों का कुछ कष्ट दूर हो गया।

कठिन शब्द—

**देवलोक, सन्तति-प्रेम, विलख, दल।**

प्रश्न—

(१) सुरभी इन्द्र के पास क्यों गई?

(२) सुरभी ने अपनी सन्तान के दिन किन कष्टों को सुनाया?

(३) इन्द्र ने किस प्रकार सुरभी की सहायता की?

---

पाठ १०

## रहीम के दोहे

अमरबेलि बिन मूल की, प्रतिपालत है ताहि।
रहिमन ऐसे प्रभुहिं तजि, खोजत फिरिए काहि॥ १॥
दीनहि सब कहँ लखत हैं, दीन लखत नहिं कोय।
जो रहीम दीनहिं लखत, दीनबंधुसम सोय॥ २॥

रहिमन याचकता गहे, बड़े छोट ह्वै जात।
नारायण हूँ को भयो, बावन आँगुर गात ॥ ३॥
नाद रीझ तन देत मृग, नर धन हेत समेत।
ते रहीम पशु ते अधिक, रीझेहु कछू न देत ॥ ४॥
जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो लगै, बढ़े अँधेरो होय ॥ ५
रहिमन अँसुआ नयन ढरि, जिय दुख प्रगट करेय।
जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देय ॥ ६
जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाड़त छोह ॥ ७
दुरदिन पड़े रहीम कहि, दुरथल जैयत भागि।
ठाढ़े हूजत घूर पर, जब घर लागति आगि ॥ ८

कठिन शब्द—

**बेलि, दीनबन्धु, याचकता, बावन, गात, नाद, बारे, बढ़े, मीन, घूर।**

प्रश्न—

(१) नारायण बावन आंगुर कैसे हुए ?
(२) बारे और बटे इन दो शब्दों को समझाओ।
(३) 'तऊ न छाड़त नेह' का अर्थ समझाओ।

—

पाठ ११

## पृथ्वी

पृथ्वी देखने में चपटी जान पड़ती है। परन्तु वह चपटी नहीं है, वह नारङ्गी के समान गोल है। उसके ऊपर और नीचे का भाग थोड़ा चपटा है।

पृथ्वी के गोल होने के कई प्रमाण हैं। पहला प्रमाण तो यह है कि जो मनुष्य पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने को निकलते हैं वे प्रदक्षिणा करके जहाँ से चलते हैं वहीं आ जाते हैं। यदि पृथ्वी गोल न होती तो मनुष्य कहीं से कहीं पहुँच जाते।

दूसरा प्रमाण ग्रहण का है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमते घूमते जब सूर्य और चन्द्रमा के मध्य में आ जाती है तब उसकी गोलाकार छाया चन्द्रमा पर पड़ती है। इस छाया को देखने से जान पड़ता है कि पृथ्वी गोल है।

तीसरा प्रमाण यह है कि समुद्र में दूर से जब जहाज किनारे की ओर आते हैं तब एक साथ ही वे पूरे नहीं दिखलाई देते। पहले उनका ऊपरी भाग दिखलाई देता है, फिर कुछ देर में उनके बीच का भाग दिखलाई देता है और अन्त में उनके नीचे का भाग दिखलाई

देता है। यदि पृथ्वी गोल न होती, तो ऐसा न होता दृष्टि पड़ते ही जहाज पूरा दिखलाई देने लगता।

पृथ्वी की गति दो प्रकार की है। एक का नाम दैनिक गति और दूसरी का नाम वार्षिक गति है। चौबीस घंटे में पृथ्वी एक बार अपनी धुरी पर घूम जाती है। इस घूम जाने को दैनिक गति कहते हैं। दिन और रात इसी दैनिक गति के कारण होते हैं। पृथ्वी का जो भाग सूर्य के सामने रहता है वहाँ दिन होता है। और जो उसके सामने नहीं रहता वहाँ रात होती है।

पृथ्वी अपनी कील पर घूमती हुई आगे को बढ़ती जाती है और ३६५ दिन ६ घंटे में सूर्य के चारों ओर घूम आती है। इस गति का नाम वार्षिक गति है। सूर्य के चारों ओर घूमने में पृथ्वी को जितना समय लगता है उसको वर्ष कहते हैं। एक वर्ष ३६५ दिन का होता है; परन्तु प्रतिवर्ष सूर्य की प्रदक्षिणा में पृथ्वी को प्रायः ६ घंटे अधिक लग जाते हैं। इसलिये हर चौथे वर्ष फरवरी महीने में १ दिन बढ़ाकर उसको २९ दिन का करना पड़ता है।

रेल पर सवार होने से जैसे किनारे के वृक्ष चलते हुए दिखाई देते है वैसे ही हम लोगों को सूर्य चलता हुआ

दिखलाई देता है और पृथ्वी अचल जान पड़ती है। परन्तु यह बात ठीक नहीं है। पृथ्वी के घूमने के कारण ही सूर्य सवेरे पूर्व की ओर और सन्ध्या के समय पश्चिम की ओर दिखलाई देता है।

कठिन शब्द—

**प्रदक्षिणा. दैनिक. अचल. धुरी।**

प्रश्न—

(१) पृथ्वी की गोलाई ग्रहण के समय कैसे प्रमाणित होती है ?
(२) पृथ्वी की दो प्रकार की गति के नाम लो।
(३) दिन और रात होने का कारण क्या है ?

---

पाठ १२

## फसल के शत्रु

किसान जिस दिन से खेत बोता है उसी दिन से उसे कितने ही शत्रुओं का सामना करना पड़ता है। तैयार होने के पहले फसल पर कई धावे होते हैं। कहीं जङ्गली पशु फसल चर लेते हैं, कहीं चिड़ियां दाने चुग जाती हैं और कहीं कीड़े उसका सत्यानाश

कर देते हैं। फिर भी ईश्वर की दया से इतना अच्छा है कि फसल के इन शत्रुओं में आपस में भी वैर रहता है। वे एक-दूसरे को भी खा जाते हैं। बड़ी-बड़ी चिड़ियाँ छोटी चिड़ियों को मार डालती हैं और छोटी चिड़ियाँ कीड़े-मकोड़े खाकर फसल को बचा लेती हैं। यदि ऐसा न होता तो किसान की कुशल नहीं थी।

फिर भी इन शत्रुओं से बहुधा फसल को बड़ी हानि होती है। बेचारा किसान तो गर्मी-सर्दी सहकर उसे तैयार करता है और ये लोग उसे खा जाते हैं। पहले यह बतलाया जा चुका है कि खेती के शत्रु जंगली पशु या पक्षी होते हैं। ये खेतों को कभी-कभी एक सिरे से दूसरे सिरे तक उजाड़ देते हैं। घर के पालतू पशु भी कभी-कभी फसल नष्ट कर डालते हैं।

पशुओं और पक्षियों से खेत की रखवाली की जा सकती है, इसलिये वे किसान को अधिक नहीं अखरते। आवश्यकता होने पर वह खेत में झोपड़ी डालकर रहने लगता है और पशु-पक्षियों को भगाता रहता है। परन्तु किसान के लिये छोटे-छोटे कीड़ों का सामना करना बहुत कठिन है। ये कीड़े खेत के स्वामी के सामने ही खेत को नष्ट करते रहते हैं। बात यह है कि ये इतने छोटे-छोटे और संख्या में इतने अधिक होते हैं कि किसान उनका कुछ

भी नहीं कर सकता। केवल कुछ चिड़ियाँ ही ऐसी होती है जो इन कीड़ों को खा जाती है। गलगलिया, मैना, कठफोड़क, कौआ और दहियल आदि पक्षी ऐसे कीड़ों को खाया करते है।

अब हम फसल को नष्ट करनेवाले कीड़ों का कुछ वर्णन करेंगे। दीमक ऐसे कीड़ों में से एक है। यह कीड़ा धरती के भीतर रहता और पौधों की जड़ें खा डालता है। इससे बचने के लिये खेत में पानी देते रहना चाहिए और दो चार तीतर भी पाल लेना चाहिए क्योंकि तीतर दीमकों को खा जाते हैं। दीमक जिस खेत में लग जाती है उसके पौधे सूख सूखकर गिरने लगते हैं। दीमक बहुधा ईख के खेतों में लगती है। इससे बचने के लिये लोग गन्ने के बीज (ईख के टुकड़ों) में तारकोल लगा कर बोते हैं या नीम की खली पानी में घोलकर उससे खेत सींचते है।

तितली को तो सभी ने उड़ते देखा होगा। पहले तितली एक कीड़े के रूप में रहती है। वह भी बहुत हानि करती है। उसके अंडे पत्तियाँ खाकर ही बढ़ते है।

एक कीड़ा माहूँ होता है। वह अलसी, सरसों आदि मे बहुत लगता है। यह कीड़ा बहुत छोटा, राई के दानों

के समान, होता है। फल, फूल, पत्तियाँ और शाखें इन सभी को यह कीड़ा खा लेता है। इसके लग जाने से फसल किसी काम की नहीं रह जाती।

एक कीड़ा मकोड़ा कहलाता है। यह ज्वार और ईख के पौधों में लगता है। पौधे का वह भाग, जहाँ यह लगता है, भीतर से खोखला होकर लाल रंग का हो जाता है।

इनके सिवाय और भी न जाने कितने प्रकार के कीड़े होते हैं, जो खेती को नष्ट करने मे लगे रहते हैं। बहुत से कीड़े जिस रंग के वे स्वयं होते हैं उसी रंग के पौधों मे रहकर अपने को छिपाए रहते हैं। इससे चिड़ियाँ उन्हें खोज नहीं पातीं। ये कीड़े फसल के साथ साथ रंग भी बदला करते हैं। जब फसल हरी होती है तो वे भी हरे रंग के रहते हैं। जब वह पककर भूरी होने लगती है तो वे भी भूरे हो जाते हैं।

इन कीड़ों से बचने के भी कई उपाय हैं. जैसे. बीज बदल-बदल कर बोना। जिस पौधे के जो कीड़े होते हैं. उस पौधे के न पाने से वे मर जाते हैं। इसी तरह बीज मिलाकर बोने से भी लाभ होता है। यदि कीड़ा आरम्भ मे कुछ थोड़े पौधों में लगा हो. तो उन्हें उखाड़ कर जला देने से बहुत लाभ होता है। धुआँ कर देने से भी कीड़े भग जाते है। खेतों की मेंड़ों पर रात को आग जला देने से कीड़े प्रकाश देखकर उसके पास आते हैं और जल कर मर जाते है। कीड़े खानेवाले पक्षियों को खेतों में पाल रखने से भी कीडे कम हो जाते हैं। किसान को बड़ी सावधानी के साथ इन कीड़ों से अपनी फसल की रक्षा करनी चाहिए।

कठिन शब्द—

वत्यानाश, अखरते. तारकोल।

प्रश्न—

(१) पशु और पक्षियों से किसान फसल की रक्षा किस प्रकार कर सकता है ?

(२) फसल को दीमक से बचाने के उपाय बतलाओ।

(३) अन्य कीड़ों से फसल की रक्षा करने के कुछ उपाय बतलाओ।

---

पाठ १३

# कवीर के दोहे

साँच वरावर तप नहीं झूठ वरावर पाप।
जाके भीतर साँच है ताके भीतर आप ॥१॥
शील रत्न सव ते वड़ो सव रत्नन की खान।
तीन लोक की संपदा वसी शील मे आन ॥२॥
गोधन गजधन वाजिधन सवै रत्न धन खान।
जव आवै संतोष धन सव धन धूरि समान ॥३॥
मेरा मुझको कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपता क्या लागे है मोर ॥४॥
दुरवल को न सताइए जाकी मोटी हाय।
मुई खाल की साँस सों लोह भस्म ह्वै जाय ॥५॥
या दुनिया में आइ के छांड़ देइ तू ऐंठ।
लेना है सो लेइ ले उठी जात है पैठ ॥६॥
ऐसी वानी वोलिए मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै आपो शीतल होय ॥७॥
माटी कहै कुम्हार सों तू क्या रूँधे मोहिं।
इक दिन ऐसा होइगा मैं रूँधूँगी तोहिं ॥८॥
जहाँ दया तहँ धर्म्म है जहाँ लोभ तह पाप।
जहाँ क्रोध तहँ काल है जहाँ छमा तहँ आप ॥९॥

साँचे श्राप न लागई साँचे काल न खाइ।
साँचे साँचा जो चले ताको काह नसाइ ॥१०॥

कठिन शब्द—

**साँच. बाजि. धूरि. पैंठ. शीतल. श्राप. नसाइ।**

प्रश्न—

(१) सत्य, शील और संतोष की महिमा वर्णन करो।
(२) दुर्बल को सताने से क्या होता है ?
(३) जहाँ दया तहँ धर्म है—इसका क्या अर्थ है ?

---

पाठ १४

## रैमसे मैकडानल्ड

मेरा जन्म स्काटलैण्ड के एक छोटे से ग्राम में हुआ था। इस गाँव के बहुत से लोग कृषक हैं। वे मछली मारकर अपना जीवन-निर्वाह करते हैं। मैं उन्हीं किसानों में एक था।

मेरा विद्यार्थी-जीवन साधारण था। मैं सुन्दर बगीचों मे घूमा करता और टीलों पर खेला करता था। मेरी और

मेरे मित्रों की गिनती उपद्रवी बालकों में थी। मुझे स्मरण है कि मेरा कोई मित्र देश का नेता नहीं बना।

नेता बनने की मेरी बड़ी अभिलाषा थी। यद्यपि मैं दीनकुल में जन्मा था, पर अपने को किसी भी धनी से कम न समझता था।

विद्याभ्यास समाप्त होते ही मुझे जीविका की चिन्ता हुई। प्रथम मैंने कृषि प्रारम्भ की। कृषि के कार्य्य में

मेरा मन बहुत लगता था। मुझे कृषक-जीवन बहुत ही प्यारा था। किसान हल चलाते और गाते तथा मैं वीणा बजाता था। वसन्त मे सारा देहात उनके मधुर संगीत से भर जाता था।

मेरी इच्छा विश्वविद्यालय में भी पढ़ने को थी। दीनता के कारण वह सफल नहीं हुई। पर मुझे उसके लिये दुःख नहीं है। मेरा तो प्रबल विश्वास है कि विश्वविद्यालय में पढ़कर बहुत से लोग सुधरने की जगह बिगड़ जाते हैं।

विज्ञान पढ़ने की मेरी बड़ी अभिलाषा थी। परन्तु मेरे पास पैसा न था। मैं लन्दन गया। मेरे कई दिन नौकरी की खोज में ही लग गए। उस समय मेरे पास एक फूटी कौड़ी भी न थी। मुझे पहला काम, जो वहाँ मिला, वह लिफाफों पर पता लिखना था। पर वह काम भी थोड़े दिनों का था। उन दिनों मुझे बड़ी चिन्ता थी, क्योंकि मैं जानता था कि लन्दन में बिना पैसे और बिना नौकरी के दिन काटना कठिन है। अन्त में मुझे एक मुनीम का स्थान मिल गया। उस समय मेरा वेतन १८ रुपये प्रतिसप्ताह था। इसी में अपना निर्वाह करता था. कुछ रुपया अपनी मा को भेज देता था और कुछ रुपये फीस में खर्च करता था। तुम पूछोगे कि

मैं यह सब कैसे कर लेता था। इँग्लैंड के समान महँगे देश में इतनी कम तनख्वाह में मैं ये सब काम कैसे चला लेता था। मैं सादा और सस्ता भोजन करता था। कभी कभी तो भूखा ही सो जाता था। चाय मैं नहीं खरीद सकता था। अतएव इसके बदले गरम जल पीकर काम चला लेता था। मुझे यह बहुत पसन्द था। इस भाँति किफायत करके मैं कुछ बचा भी लेता था।

घर मे मैं रात दिन कार्य्य करता था। इससे मैं एक बार बहुत बीमार पड़ गया। बीमारी से उठते ही फिर काम करने लगा। काम न करता तो खाता क्या? इस तरह विज्ञान की पढ़ाई मुझे बहुत ही कठिन प्रतीत हुई। तब मैं लेख लिखने लगा। इससे मुझे कुछ आमदनी भी होने लगी। इसके बाद मैं संपादक हो गया।

मुझे मजदूरों से बड़ा प्रेम है। मैने उनके लिये सभाभवन और पुस्तकालय खोले। मजदूरों के बालकों को अपने घर पर बुलाकर पढ़ाने में मुझे बड़ा सुख प्राप्त होता था। मजदूर-दल के जन्म के तीन वर्ष बाद ही मैं उस दल का मेम्बर हो गया। तब से आज तक मैं बराबर उस दल का मेम्बर हूँ। धीरे धीरे देश में मजदूरों का प्रभाव इतना बढ़ा कि शासन की बागडोर उन्हीं के हाथ में आगई

और मैं दो बार इंग्लैंड के प्रधान मंत्री के पद तक पहुँच गया। ईश्वर की कृपा से नेता बनने की मेरी अभिलाषा पूर्ण हो गई।

कठिन शब्द—

**जीवन-निर्वाह, संगीत, विश्वविद्यालय, विज्ञान, संपादक, सभाभवन, पुस्तकालय।**

प्रश्न—

(१) मैक्डानल्ड साहब विश्वविद्यालय में क्यों न पढ़ सके ?
(२) मजदूरदल किसे कहते हैं ?

---

पाठ १५

# सावित्री

मद्र देश के राजा अश्वपति की सावित्री नाम की एक कन्या थी। वह कन्या बड़ी सुशील और घर के कार्य में चतुर थी। जब वह बड़ी हुई तब राजा को उसके विवाह की चिन्ता हुई, परन्तु कोई योग्य वर न मिला। तब उन्होंने उसे अपना वर आप ही ढूंढ लेने की आज्ञा दी। वह कन्या, कुछ लोगों को साथ ले इधर उधर घूमती एक

आश्रम में पहुँची। वहाँ एक राजा अपनी रानी और पुत्र के साथ रहते थे। उनका राज्य छिन गया था। राजकुमार उनकी सेवा करता था। माता-पिता की सेवा करनेवाले, सत्यवान नामक उस राजपुत्र को, सावित्री ने अपने योग्य वर मान लिया और लौटकर पिता को अपना निश्चय सुनाया। उस समय महाराज अश्वपति के समीप नारदजी विराजमान थे। वे बोले—सावित्री, तुमने यह ठीक नहीं किया, क्योंकि राजकुमार सत्यवान विवाह के एक वर्ष पश्चात मर जायगा। तब महाराज ने सावित्री से कहा कि तुम दूसरा वर ढूंढ़ो। सावित्री बोली—महाराज, जैसे काठ की हाँडी एक ही बार आग पर चढ़ सकती है और केला एक ही बार फलता है, वैसे ही कन्या एक ही बार पति को स्वीकार करती है। अब तो मेरा निश्चय हो चुका। मैं किसी दूसरे से विवाह नहीं कर सकती। कन्या का आग्रह देख, नारदजी को भी कहना पड़ा कि वह विवाह स्वीकार किया जाय।

विवाह हो गया और सावित्री अपने पति सत्यवान के साथ आश्रम में निवास करने लगी। उसने अपने राजसी ठाठ छोड़ दिए। वल्कल वसन पहन कर वह पति-देव के साथ सास-ससुर की सेवा करने लगी। वह देवताओं का पूजन और व्रत-उपवास आदि भी करती

थी। धर्माचरण में उसका प्रेम देख सास-ससुर प्रसन्न रहते थे। धीरे धीरे वर्ष बीत गया और नारदजी की बतलाई हुई वह घुघड़ी भी समीप आ पहुँची।

जब केवल तीन दिन शेष रह गए, तब सावित्री ने अन्न-जल त्याग कर उपवास प्रारम्भ किया। सास-ससुर ने उसे समझाया पर वह अपने विचार पर स्थिर रही। चौथे दिन सत्यवान जब लकड़ी काटने वन को जाने लगा, तब सावित्री वन की शोभा देखने के लिये, सास-ससुर की आज्ञा ले, पति के साथ वन को गई। सत्यवान ने वट के वृक्ष पर चढ़कर लकड़ी काटी। इतने में उसके सिर में पीड़ा होने लगी। वह वृक्ष से उतर आया और सावित्री के समीप लेट गया। उसे निद्रा आगई। सावित्री का हृदय उस दिन बहुत विकल था।

कुछ काल पश्चात उसने हाथ में रस्सी लिये हुए एक डरावनी मूर्ति को आते देख पूछा—महाराज! आप कौन हैं? उस मूर्ति ने उत्तर दिया—मैं यमराज हूँ।

सावित्री—महाराज! मैं सुनती हूँ कि प्राण हरण के लिये आपके दूत आते हैं। आप स्वयं क्यों पधारे?

यमराज—सावित्री! पुण्यात्मा जनों के लिये मैं स्वयं आता हूँ। सत्यवान सच्चरित्र हैं, इसीलिये मुझे आना

पड़ा। तुम भी धार्मिक हो, इससे मुझे देख सकीं, नहीं तो मुझे या मेरे दूतों को कोई देख नहीं सकता।

ऐसा कह यमराज ने सत्यवान के प्राण निकाल, फाँस में बाँध लिए और दक्षिण की ओर चल पड़े। सावित्री को पीछे आते देख यमराज ने उसे लौट जाने को कहा पर वह लौटी नहीं। उसने यमराज से विनय की कि वे सत्यवान के प्राण लौटा दें। यमराज उसका प्रेम देख प्रसन्न हो गए और सत्यवान को फिर से जीवित कर दिया।

सत्यवान सावित्री के साथ घर लौटा। वहाँ उसके माता-पिता विलम्ब से व्याकुल हो रहे थे। दूसरे दिन सावित्री ने विलम्ब का सब कारण कह सुनाया। उसे सुन सास-ससुर गद्गद हो गये और बोले—बहू! तुमने वह काम कर दिखाया जो अब तक किसी ने न किया था। तुम्हारा सौभाग्य बना रहे। कुछ दिन बीतने पर राजा को उसका राज्य फिर मिल गया और वे सब सुख से रहने लगे।

हमारे देश में प्रतिवर्ष जेठ बदी अमावस को स्त्रियाँ वट-सावित्री की पूजा करके सावित्री की याद बनाए रखती हैं।

कठिन शब्द—

**सुशील, आग्रह, निवास, वल्कल, वसन, धर्माचरण, विकल, कुघड़ी, सच्चरित्र, विलम्ब।**

प्रश्न—

(१) स्वयंवर किसे कहते हैं ? क्या सावित्री ने स्वयंवर करके अपना विवाह किया था ?

(२) लकड़ी काटने जाते समय सत्यवान के साथ साथ सावित्री क्यों गई ?

(३) वट-सावित्री की पूजा कब और क्यों होती है ?

---

पाठ १६

## कर्म-वीर

देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न, घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग के दुख भोग पछताते नहीं॥
काम कितना ही कठिन हो किन्तु उकताते नहीं।
भीड़ में चञ्चल बने जो वीर दिखलाते नहीं॥
हो गए एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले फले॥१॥
आज करना है जिसे करते उसे हैं आज ही।
सोचते, कहते हैं जो कुछ, कर दिखाते हैं वही॥
मानते जी की है, सुनते हैं सदा सबकी कही।
जो मदद करते हैं अपनी इस जगत में आप ही॥

भूलकर वे दूसरों का मुंह कभी तकते नहीं ।
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं ॥२॥

जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं ।
काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं ॥
आज कल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं ।
यत्न करने से कभी जो जी चुराते हैं नहीं ॥
बात है वह कौन जो होती नहीं उनके किये ।
वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिये ॥३॥

चिलचिलाती धूप को जो चाँदनी देवें बना ।
काम पडने पर करें जो शेर का भी सामना ॥
जो कि हँस हँसकर चबा लेते हैं लोहे का चना ।
'है कठिन कुछ भी नहीं' जिनके है जी में यह ठना ॥
कोस कितने ही चलें पर वे कभी थकते नहीं ।
कौन सी है गाँठ जिसको खोल वे सकते नहीं ॥४॥

पर्वतों को काट कर सड़कें बना देते हैं वे ।
सैकड़ों मरु-भूमि में नदियाँ बहा देते हैं वे ॥
गर्भ में जलराशि के बेड़ा चला देते हैं वे ।
जङ्गलों में भी महा मङ्गल रचा देते हैं वे ॥
भेद नभतल का उन्होंने है बहुत बतला दिया ।
है उन्होंने ही निकाली तार की सारी क्रिया ॥५॥

सब तरह से आज जितने देश हैं फूले फले।
बुद्धि, विद्या, धन, विभव, के हैं जहाँ डेरे डले॥
वे बनाने से उन्हीं के बन गए इतने भले।
वे सभी हैं हाथ से ऐसे सपूतों के पले॥
लोग जब ऐसे समय पाकर जनम लेंगे कभी।
देश की औ जाति की होगी भलाई भी तभी॥६॥

कठिन शब्द—

**यत्न, गाँठ, सम्पदा, गगन, मरुभूमि, गर्भ में, जलराशि, नभतल, विभव, आन।**

प्रश्न—

आशय समझाओ—

हो गए एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिये॥
कौन सी है गाँठ जिसको खोल वे सकते नहीं।

पाठ ७

# सिंहगढ़-विजय

जब महाराज छत्रपति शिवाजी औरङ्गजेब के बंधन से मुक्त होकर सकुशल स्वदेश लौट आए, तब उन्होंने फिर से लड़ाई छेड़ दी और लगभग दो वर्ष तक मुगलों से लड़ते रहे। परन्तु अंत में शिवाजी और औरङ्गजेब के बीच संधि हो गई। मुगल-बादशाह ने शिवाजी को मरहठों का राजा स्वीकार कर लिया। दो साल तक दोनों के बीच शांति रही।

महाराज शिवाजी ने इस समय में अपनी शक्ति खूब प्रबल कर ली और शासन के प्रबंध की नींव भी पक्की कर ली। महाराष्ट्र-सेना के संगठन में भी महाराज ने पूर्ण उद्योग किया। परन्तु वास्तव में यह सभी जानते थे कि मुगलों और मरहठों के बीच में बहुत दिन तक शांति नहीं रह सकती। लड़ाई फिर छिड़ गई। मरहठों ने मुगल-राज्य में लूट-मार प्रारम्भ कर दी। बहुत से किलों पर, जो मुगलों के हाथ में थे, मरहठो ने आक्रमण किया और कुछ को ले भी लिया।

कोंडना नामक किला भी इस समय मुगलों के अधीन था। वह अपनी मजबूती के लिये दक्षिण में प्रसिद्ध

था। उसका शासक उदयभान नामक एक राजपूत सरदार था। महाराज शिवाजी ने अपने वीर सरदार तानाजी मालसरे को आज्ञा दी कि जाओ इस किले को जीत लो। तानाजी अत्यन्त साहसी, पुरुषार्थी तथा चतुर सैनिक थे। उन्होंने अपने स्वामी की आज्ञा को शिरोधार्य कर कोंडना के जीतने का प्रण किया।

वीरवर तानाजी ने केवल ३०० वीर सिपाहियों को साथ ले और शिवाजी को प्रणाम कर, प्रस्थान किया। ये सिपाही यद्यपि गिनती में कम थे, किन्तु वीरता में एक से एक बढ़े-चढ़े थे। कोली जाति के लोगों ने रात्रि के गहरे अंधकार में सरदार तानाजी और उनके वीर सिपाहियों को रास्ता दिखाया। वे लोग आस-पास की भूमि के कोने-कोने को जानते थे। यह सब ऐसे चुपके से हुआ कि किले में किसी को जरा भी खटका तक न हुआ।

किले के कल्याण नामक फाटक के पास पहाड़ी दीवाल कुछ कम ऊंची थी और उस पर चढ़ाई भी अधिक सीधी न थी। दबेपांव वीर तानाजी अपने ३०० बहादुरों के साथ रस्से की सीढ़ी बनाकर किले की दीवाल पर रात के सन्नाटे में चढ़ गए। वहां देखा तो संतरी पहरा दे रहे थे। उन्हें उन्होंने मार गिराया। इतने ही में राजपूत लोग जग तो पड़े परन्तु कपड़ा पहिनने और हथियार आदि

के लेने में उन्हें कुछ समय लग गया। बस इतनी सी देर में मरहठों ने उनमें से कितनों ही का काम तमाम कर दिया।

राजपूत बड़ी वीरता से लड़े परन्तु मरहठों के सामने उनके पैर उखड़ गए। तब अन्त में मरहठा-सरदार तानाजी और राजपूत-सरदार उदयभान तलवार लेकर आपस में भिड़ गए। मरहठे "हर! हर! महादेव!" की ध्वनि से एक दूसरे को उत्साहित कर रहे थे। तानाजी और उदयभान बड़ी वीरता से लड़े। अन्त में दोनों एक दूसरे की तलवार से घायल होकर गिर पड़े। तानाजी के भूमिशायी होने पर उनके भाई सूर्याजी ने मरहठों को और भी अधिक आवेश से लड़ने के लिये प्रोत्साहित किया। अन्त में १२०० राजपूत खेत रहे और किला मरहठों के हाथ में आ गया।

गढ़ के विजय हो जाने पर मरहठो ने अन्दर के समस्त झोंपड़ों को जला दिया। इससे इतनी ऊँची लपट निकली कि वहाँ से ९ मील दूर रायगढ़ में बैठे हुए शिवाजी महाराज ने भी उसे देखा और यह अनुमान कर लिया कि वीर-रत्न तानाजी ने विजय प्राप्त कर ली है।

शिवाजी महाराज हर्ष और उत्साह के साथ दूसरे दिन प्रातःकाल अपने लाड़ले सरदार तानाजी के आने

और उन्हें गले लगाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। परन्तु जब उन्होंने सुना कि तानाजी ने अपने प्राणों का होम करके अपने प्रण का पालन किया तब उनके दुःख का पारावार न रहा। कोंडना की विजय के लिये इस पुरुष-सिंह ने अपना जीवन तक अर्पण कर दिया। इस घटना को अमर करने के लिये शिवाजी महाराज ने कोंडना का नाम सिंह-गढ़ रक्खा। यह किला अभी तक उस वीर-श्रेष्ठ की कीर्ति को अजर-अमर बनाए हुए है।

कठिन शब्द—

संगठन, वास्तव, पुरुषार्थी, प्रस्थान, शौर्य, सूरमा, संतरी, ध्वनि, प्रोत्साहित, प्रतीक्षा, पारावार।

प्रश्न—

(१) कोंडना का नाम सिंहगढ़ क्यों रक्खा गया ?

(२) अर्थ बताते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग करो—

एक से एक, काम तमाम करना, होम करना, कोने कोने, पैर उखड़ना, भिड़ जाना, हाथ आना, दबे पाँव, खेत रहे।

(३) शिवाजी ने विजय का समाचार कैसे पाया ?

पाठ १८

# देहाती बैंक

हमारे देश में जितने मनुष्य खेती करते हैं उतने और किसी देश में नहीं करते। यहाँ भूमि का अभाव नहीं है, इसीसे यहाँ किसानों की संख्या बहुत अधिक है। परन्तु, बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनके कारण यहाँ के किसान दीन रहते हैं। ऐसे बहुत कम किसान देखने में आते हैं जो खेती करके भली भाँति अपनी जीविका चलाते हों। अधिक संख्या तो ऐसे लोगों की है जो खाने-पहनने के लिये भी दुखी रहते हैं। उनके घरों में व्याधि सदैव बनी रहती है। उनके पास हल-बैल तक के लिये पैसे नहीं होते।

यह दशा होने के कारण किसान सदा खाली हाथ रहते हैं। यदि कहीं एक फसल में पानी न बरसा या और कोई विपत्ति आ गई, तो फिर दूसरी फसल के लिये उनके पास कोई साधन नहीं रहता।

किसानों की दशा गाँव के सभी लोग जानते हैं। उन्हें कोई भी रुपया देने को तैयार नहीं होता और यदि रुपया मिला भी तो बहुत अधिक ब्याज माँगा जाता है।

किसान बेचारा निरुपाय होकर महाजन के फ़न्दे में फँस जाता है।

प्रायः देखा जाता है कि किसान ऋण तो ले लेता है पर ब्याज की भारी दर होने के कारण उसे पटा नहीं पाता। उसका ऋण प्रत्येक वर्ष बढ़ता चला जाता है। महाजन लोग बहुधा रुपया वसूल करने के लिये नालिश कर देते हैं। इस प्रकार किसान का बहुत सा समय मुकदमेबाजी में चला जाता है। अन्त में उसके हल-बैल, घर-द्वार और लोटा-थाली सब नीलाम पर चढ़ जाते हैं। बेचारा किसान किसी काम का नहीं रह जाता। उसे एक-एक के दस-दस देने पड़ते हैं और घर-द्वार भी छिन जाता है।

ऐसे किसानों की स्थिति में सुधार करने के लिये ही देहाती बैंक खोले गये हैं। इन बैंकों का यह काम है कि वे आवश्यकता के अनुसार किसानों की सहायता करें। उन्हें थोड़े ब्याज पर रुपया उधार दें और किसानों को किन किन हथियारों, और यंत्रों से काम करना चाहिए यह बतलाएँ। उन्हें खेती में सहायता देने के लिये अच्छे बैल, अच्छी खाद और अच्छे बीज कहाँ से मिल सकते हैं, इन सब बातों को बतलाने में भी बैंक उनकी सहायता करे। इन बैंकों से किसान बहुत कुछ लाभ उठा सकते हैं और उनकी

दशा भी सुधर सकती है। यह भी काम बैंक का है कि वह किसानों की उपज को अच्छे दामों पर बेचने के लिये प्रबन्ध करे; क्योंकि बहुधा किसान अपनी वस्तुओं को बेचने की रीति नहीं जानते। कुछ चालाक लोग फसल के अवसर पर गाँवों में पहुँचकर बहुत सस्ते मूल्य पर उनकी उपज खरीद लेते हैं। सारांश यह है कि बैंक किसानों की पूरी तरह से सहायता करे और किसान भी सचाई के साथ बैंक का रुपया चुकाकर शेष रुपया अपने काम में लाएँ।

कठिन शब्द—

**साधन, व्याधि, मुकदमेबाजी, सारांश।**

प्रश्न—

(१) देहाती बैङ्कों के काम बतलाओ।

(२) देहाती बैङ्कों से किसानों को क्या लाभ है?

पाठ १९

## वर्षा-काल

( १ )

आया यह अब वर्षा-काल,
जग का हुआ और ही हाल ।
नहीं कहीं अब हाहाकार,
गर्मी से न व्यथित संसार ॥

( २ )

नहीं लूह अब सन सन चलती,
अब न आग-सी धरती जलती ।
'प्यास प्यास, पानी पानी' नर
चिल्लाते अब नहीं कहीं पर ॥

( ३ )

अब न कहीं पर उड़ती धूल,
मुरझाते न लता-तरु-फूल ।
रहा न रवि-किरणों का त्रास,
घिरा बादलों से आकाश ॥

( ४ )

बरस रहा जल चारों ओर,
मेंढक सुख से करते शोर ।

कहीं पपीहा करता शोर,
कहीं नाचते प्रमुदित मोर ॥

( ५ )

पृथ्वी, खेत, बाग, वन, तरुवर,
हरे हरे दिखलाते सुन्दर।
वीरबहूटी की छवि न्यारी,
आंखों को लगती अति प्यारी ॥

( ६ )

शीतल पवन वेग से बहता,
छिपा बादलों में रवि रहता।
झड़ी रात-दिन की लग जाती,
दिन की रजनी हो हो जाती ॥

( ७ )

बिजली चमक चमक रह जाती,
झिल्ली है झंकार मचाती।
पृथ्वी की हरियाली सुन्दर,
लगती कैसी भली मनोहर ॥

( ८ )

चला रहे हल कहीं किसान,
कहीं मगन हो बोते धान।

कहीं प्रेम से मेंड़ बनाते,
बैल गाय हैं कहीं चराते ॥

( ९ )

झूले पड़े हुए हैं घर-घर,
अतिप्रफुल्ल-मन हैं नारी-नर ।
ललना झूल-झूल सुख पातीं,
कजली औ मलार सब गातीं ॥

( १० )

मोदमयी अतिशय सुखकारी,
वर्षा-ऋतु सबको है प्यारी ।
कृषिप्रधान है देश हमारा,
हमें इसी से पावस प्यारा ॥

कठिन शब्द—

**व्यथित, लता-तरु-फूल, त्रास, प्रमुदित, तरु, छवि, रजनी, ललना, मोदमयी ।**

प्रश्न—

(१) वर्षा के आने से दुनिया में क्या परिवर्तन आ जाता है ?
(२) तुमको वर्षा क्यों प्यारी है ?
(३) वर्षा में दिन रात के समान क्यों हो जाता है ?

—

पाठ २०

## अहल्याबाई की योग्यता

लगभग डेढ़ सौ वर्ष की बात है कि विन्ध्याचल पहाड़ के रहनेवाले भील, अपने एक सर्दार की आज्ञा से, अपनी इन्दौर की महारानी अहल्याबाई के विरुद्ध बलवा करने का दृढ़ संकल्प कर जिले के अफसर की आज्ञा के विरुद्ध काम करने लगे। न तो जिले के अफसर के बुलाने से कोई आता और न कोई उसके कहने पर ध्यान ही देता। सब अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार विचरने और ढिठाई करने लगे।

दिन पर दिन दशा बिगड़ती देख जिले का अफसर डर गया। उसके पास सरकारी रुपया भी हर वक्त रहता था, इसलिये उसे और भी अधिक भय हुआ। जहाँ तक जल्द हो सका, उसने इसकी खबर महारानी के कानों तक पहुँचाई। महारानी ने खबर पाते ही दो पत्र स्वयं अपने हाथ से, एक भीलों के सरदार को और दूसरा जिले के अफसर को, लिखकर अपने मन्त्री को दिए और आज्ञा दी कि आप इन पत्रों को स्वयं जाकर दीजिए।

महारानी ने जिले के अफसर के नाम जो पत्र लिखा था उसका भावार्थ यह था—"विद्रोह, उपद्रव और अनेक प्रकार की अशांति का बीज वहाँ बोया जाता है जहाँ

महारानी अहल्यावाई

अन्याय और अत्याचार होता हो, प्रजा को तरह-तरह के कष्ट दिये जाते हों, उनके स्वत्वों का ध्यान न

रख, हाकिम लोग उस खजाने को, जो उनकी धरोह
होती है, बुरी तरह खर्च करते हो। परन्तु मेरे राज्य
तो, जहाँ तक मैं जानती हूँ, ये बातें नहीं हैं। मैं स
वैसे बुरे दिन को दूर रखने का यत्न करती रहती हूँ
फिर इस अशांति के बीज बोने का क्या कारण है?
मन्त्री साहब को भेजती हूँ। आशा है कि ये सब
ठीक कर देंगे।"

महारानी ने भीलों के सरदार को लिखा—"जहाँ की प्रजा की कठिनाइयाँ दूर करने के लिये राजा तैयार न हो, जहाँ उनकी किसी बात पर विचार न किया जाता हो, जहाँ उनके स्वत्व और अधिकारों की रक्षा न होती हो, जहाँ अन्याय और अत्याचार से उनका रक्त चूसा जाता हो, वहाँ प्रजा राजा के विरुद्ध होने को विवश होती है। परन्तु मेरे यहाँ तो सबके लिये दरवाजा सदा खुला हुआ है और मै ,तन, मन और धन से प्रतिक्षण तुम्हारी रक्षा करने को तैयार हूँ। हे मेरी प्यारी प्रजा! तुम्हें किसने यह नीच काम करने को उतारू किया? मै चाहती हूँ कि तुम आकर स्वयं अपने दुःख मुझसे कहो। मन्त्री तुम्हारे यहाँ भेजे जाते हैं। आशा है, ये तुम्हारे लिये उचित प्रबन्ध कर देंगे।"

कुछ दिन बाद भील सरदार अहल्याबाई के दर्शन

के लिये आए, परन्तु विद्रोही के रूप में नहीं—सच्चे राज-भक्त के रूप में।

क्या इससे भारतीय महिलाओं की भूतकाल की योग्यता नहीं प्रकट होती ?

कठिन शब्द—

**विचरने, संकल्प, विद्रोह, स्वत्व, विवश।**

प्रश्न—

(१) अहल्याबाई कहाँ राज्य करती थी ?
(२) अहल्याबाई ने विद्रोह दूर करने का क्या उपाय किया ?
(३) राज्य में विद्रोह कैसे होता है ?

---

पाठ २१

## सुखी देहाती

[प्रभात के समय हलधर नामक किसान और उसकी पत्नी राजेश्वरी अपने खेत पर खड़े बातचीत कर रहे हैं]

हलधर—अब और कोई बाधा न पड़े तो अब की उपज अच्छी होगी। कैसी मोटी मोटी बालें निकल रही हैं !

राजेश्वरी—यह तुम्हारे कठिन परिश्रम का फल है

हलधर—नहीं, यह तो सब तुम्हारी सहायता से हुआ है।

राजेश्वरी—अगले साल तुम एक मजदूर रख लेना। अकेले काम करते करते थक जाते हो।

हलधर—मैं तो अकेले इसके दुगुने खेत जोत लूँ, पर खेत मिलें तब न!

राजेश्वरी—मैं तो इस साल एक गाय अवश्य लूँगी। गाय के बिना घर सूना लगता है।

हलधर—मैं पहले तुम्हारे लिए कङ्गन बनवा कर तब दूसरी बात करूँगा। महाजन से रुपये ले लूँगा।

राजेश्वरी—कङ्गन की इतनी जल्दी क्या है?

हलधर—जल्दी क्यों नहीं है? तुम्हारे मैके से बुलावा आएगा ही। नए गहने बिना जाओगी तो तुम्हारे गाँव भर के लोग मुझे हँसेंगे या नहीं?

राजेश्वरी—तो तुम बुलावा फेर देना। मैं ऋण लेकर ...न न बनवाऊँगी। हाँ, गाय पालना आवश्यक है। ...के घर गोरस न हो तो किसान कैसा! तुम्हारे ...ये दूध रोटी का कलेवा लाया करूँगी। बड़ी गाय ..., चाहे दाम कुछ अधिक देना पड़ जाय।

हलधर—मै तो पहले कङ्गन बनवाऊँगा. फिर और कुछ देखा जायगा।

[फत्तू मियाँ का प्रवेश]

फत्तू—हलधर, नजर नहीं लगाता: पर अब की तुम्हारी खेती गांव भर से ऊपर है। तुमने जो आम लगाए है वे भी खूब बौरे हैं।

हलधर—दादा, यह सब तुम्हारा आशीर्वाद है। खेती न लगती तो पिता की बरसी कैसे होती ?

फत्तू—हाँ बेटा, भैया [अर्थात हलधर के पिता] का काम दिल खोलकर करना।

हलधर—तुम्हें मालूम है दादा, चाँदी का क्या भाव है। एक कङ्गन बनवाना है।

फत्तू—सुनता हूँ अब रुपये तोला हो गई है। कितने की चाँदी लोगे ?

हलधर—यही कोई चालीस पचास रुपये की।

फत्तू—जब कहोगे चल कर ले दूंगा। हाँ, मेरा इरादा शहर जाने का है। तुम भी चलो तो अच्छा। एक अच्छी भैंस खरीद लाना। तुमने जो गुड़ बेचा था उसके रुपये तो अभी रक्खे होंगे ?

हलधर—कहाँ दादा, वे सब तो महाजन को दे दिए।

फत्तू - महाजन से तो भाई कभी गल्ला ही नहीं छूटता।

हलधर—दो साल भी तो लगातार ठीक उपज नहीं होती: गल्ला कैसे छूटे ?

फत्तू—[एक सवार को आते देख कर] वह घोड़े पर कौन आ रहा है ? कोई अफसर है क्या ?

हलधर—नहीं, अपने ठाकुर साहब [मालगुजार] तो हैं। घोड़ा नहीं पहचानते ?

[सबलसिंह मालगुजार आता है। दोनों आदमी झुक झुक कर जुहार करते हैं। राजेश्वरी घूँघट निकाल लेती है।]

**सबल**—[फत्तू से] कहो बड़े मियाँ, गाँव में सब खैरियत है न ?

फत्तू—जी हुजूर।

सबल—अभी किसी अफसर का दौरा तो नहीं हुआ

फत्तू—नहीं सरकार, अभी तक तो कोई नहीं आया।

सबल—और न शायद आएगा ही। परन्तु यदि कोई आ भी जाए तो गाँव से किसी तरह की बेगार न देना साफ कह देना कि बिना मालगुजार की आज्ञा के हम लोग कुछ नहीं दे सकते। मुझसे जब कोई पूछेगा तो देख

लूँगा। [मुस्कुरा कर हलधर की ओर देखते हुए] हलधर! क्या गौना लाये हो? हमारे घर बैना नहीं भेजा?

हलधर—हजूर मैं किस योग्य हूँ।

सबल—यह तो तुम तब कहते जब मैं तुमसे मोतीचूर के लड्डू माँगता। प्रेम से सत्तू के लड्डू भेज देते तो वही बहुत था। अच्छा, हलधर, एक दिन मैं तुम्हारी दुलहिन के हाथ का बनाया हुआ भोजन करना चाहता हूँ। देखूँ यह मैके से क्या गुण सीख कर आई है। परन्तु भोजन बिलकुल किसानों का सा हो।

हलधर—हम लोगों का रूखा सूखा भोजन सरकार को पसंद आएगा?

सबल—हाँ, बहुत पसंद आएगा।

हलधर—तो कब की तैयारी करूँ सरकार?

सबल—यह तो तुम जानो। जिस दिन कहो उसी दिन आ जाऊँगा। [फत्तू से] फत्तू, इसकी बहू काम-काज में चतुर है न?

फत्तू—हजूर मुँह पर क्या बखान करूँ, ऐसी मिहनती औरत गाँव में दूसरी नहीं है। खेती का ढंग जितना यह समझती है उतना हलधर भी नहीं समझता।

सबल—बहुत अच्छा है। बहुत अच्छा है। तो अब मैं चलूँगा। हलधर, निमंत्रण की बात न भूल जाना।

[illegible]

राजेश्वरी—आदमी काहे का है, देवता है। मेरा तो जी चाहता था कि उनकी बात ही सुना करूँ। एक हमारे गाँव का मालगुजार है कि प्रजा को चैन नहीं लेने देता। नित्य एक न एक बेगार, कभी बदल्ला, कभी कुड़की उसके सिपाहियों के मारे छप्पर पर कुम्हड़े तक नहीं बचने पाते। और एक ये है जो अपने किसानों से भाई-बन्द की तरह मिलते है।

हलधर—निमत्रण सचमुच करूँ कि दिल्लगी करते थे?

राजेश्वरी—दिल्लगी नहीं करते थे। देखा नही, चलते चलते तक कह गए। खाएंगे तो क्या; बड़े आदमी छोटे का मन रखने के लिए ऐसी बातें किया करते हैं, पर आएंगे जरूर।

हलधर—उनके खाने लायक भला हमारे यहाँ क्या बनेगा?

राजेश्वरी—तुम्हारे घर वह अमीरी खाना खाने थोड़े ही आएगे। पूरी मिठाई तो नित्य ही खाते है। मैं तो कुटे [illegible] जौ की रोटी, बथुये का साग, मटर की मसालेदार [illegible] और दो तीन तरह की तरकारी बनाऊंगी। परन्तु [illegible] बनाया खाएंगे? वे तो ठाकुर हैं न?

हलधर—खाने पीने का इनको कोई विचार नहीं है। कहते हैं कि खाने पीने से जात नहीं जाती, जाति खराब काम करने से जाती है। ऊँची जातिवाले अपने दुर्गुणों से शूद्र और शूद्र अपने अच्छे गुणों से ऊँची जातिवाले हो सकते हैं।

राजेश्वरी—बहुत ठीक कहते हैं। अच्छा, तो पूनो के दिन बुलावा भेज देना। उनके मन की बात रह जाएगी।

हलधर—खूब मन लगाकर भोजन बनाना।

राजेश्वरी—जब हमारे मालगुजार इतने प्रेम से भोजन करने आएँगे तो कोई बात उठा थोड़े ही रक्खूँगी। बस इसी पूनो को बुला भेजो, अभी पाँच दिन हैं।

हलधर—अच्छा तो, चलो पहले घर की सफाई तो कर डालें।

कठिन शब्द—

**सूना, बुलावा, बरसी, जुहार, खैरियत, गौना, दौरा, निमंत्रण, बेदखली, कुड़की।**

प्रश्न—

(१) अच्छा मालगुजार अपने किसानों से कैसा व्यवहार करता है?

(२) सबलसिंह के खाने पीने के बारे में क्या विचार थे?

॥ॐ॥

# गिरधर की कुण्डलिया

गुन के गाहक सहस नर बिन गुन लहै न कोय।
जैसे कागा कोकिला शब्द सुनै सब कोय॥
शब्द सुनै सब कोय कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ को एक रङ्ग, काग सब भये अपावन॥
कह गिरधर कविराय सुनो हो ठाकुर मन के।
बिन गुन लहै न कोय सहस नर गाहक गुन के॥१

झूठा मीठे वचन कहि ऋण उधार लै जाय।
लेत परम सुख ऊपजै लैके दियो न जाय॥
लैके दियो न जाय ऊच अरु नीच बतावै।
ऋण उधार की रीति माँगते मारन धावै॥
कह गिरधर कविराय रहै जनि मन में रूठा।
बहुत दिना ह्वै जाय कहै तेरो कागद झूठा॥२

साईं ये न विरोधिए गुरु, पण्डित, कवि, यार।
बेटा, वनिता, पौरिया, यज्ञ करावनहार॥
यज्ञ करावनहार, राजमन्त्री जो होई।
विप्र, परोसी, वैद, आपको तपै रसोई॥
कह गिरधर कविराय युगन ते यह चलि आई।
इन तेरह सों तरह दिए बनि आवै साईं॥३॥

बिना बिचारे जो करे सो पाछे पछताय ।
काम बिगारे आपनो जग में होत हँसाय ॥
जग में होत हँसाय चित्त में चैन न पावै ।
खान पान सन्मान राग रँग मनहिं न भावै ॥
कह गिरधर कविराय दुःख कछु टरत न टारे ।
खटकत है जिय माहिं कियो जो बिना बिचारे ॥४॥

साईं अपने चित्त की भूल न कहिये कोय ।
तब लग मन में राखिए जब लग कारज होय ॥
जब लग कारज होय भूल कबहूँ नहिं कहिए ।
दुर्जन तानो होय आप सीरे है रहिए ॥
कह गिरधर कविराय बात चतुरन के ताईं ।
करतूती कह देत आप कहिए नहि साईं ॥५॥

साईं अपने भ्रात को कबहुँ न दीजै त्रास ।
पलक दूर नहिं कीजिए सदा राखिए पास ॥
सदा राखिए पास त्रास कबहूँ नहिं दीजै ।
त्रास दियो लंकेश ताहि की गति सुन लीजै ॥
कह गिरधर कविराय राम सों मिलियो जाई ।
पाय विभीषण राज्य लंकपति बाज्यो साईं ॥६॥

नैया मेरी तनक सी बोझी पाथर भार ।
चहुँ दिशि अति भौरें उटत केवट है मतवार ॥

केवट है मतवार नाव मझधारहिं आनी।
आँधी चलत उदण्ड तेहुँ पर बरसै पानी॥
कह गिरधर कविराय नाथ हो तुमहिं खिवैया।
उठहि दया को डाँड़ घाट पर आवै नैया॥७॥

कठिन शब्द—

**लहै, गाहक, अपावन, रूठा, साईं, बनिता, पैरिया, तरह दिए, सन्मान, सीरे, त्रास, भौंरे, केवट, मझधार, उद्दण्ड।**

प्रश्न—

(१) काग और कोकिला मे समानता तथा भेद क्या है ?
(२) किन लोगों से विरोध न करना चाहिए ?
(३) भाई से मेल क्यों रखना चाहिए ?
(४) सातवीं कुण्डलिया मे नैया का अर्थ क्या है ?

---

पाठ २३

## दिल्ली

दिल्ली आजकल हमारे देश की राजधानी है। प्राचीन में यहाँ हिन्दू राजा थे। सबसे अन्तिम हिन्दू-सम्राट पृथ्वीराज यहीं रहते थे। उनके पश्चात यहाँ मुसलमान

बादशाह रहे। शाहजहाँ बादशाह ने इस नगर की बहुत उन्नति की। इस बादशाह को इमारतें बनवाने का बड़ा शौक था। आगरे में ताजमहल या ताजबीबी का रौजा, जो सुन्दरता में संसार भर में प्रसिद्ध है, उसी बादशाह
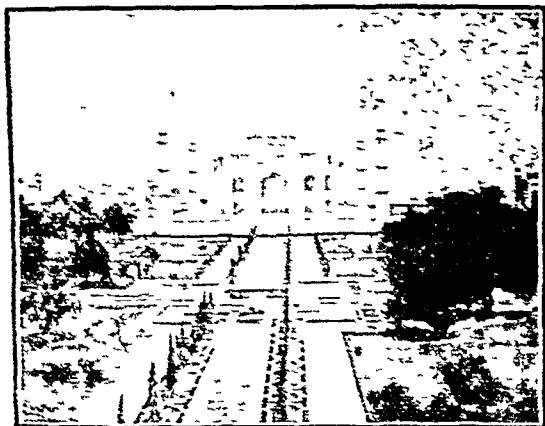
आगरे का ताजमहल

ने बनवाया था। दिल्ली में भी इसने बहुत सी अच्छी-अच्छी इमारतें बनवाई थीं।

यमुना नदी के किनारे अपने रहने के लिये इसने एक सुन्दर महल बनवाया था। ठीक इस महल के सामने एक छोटी-सी पहाड़ी पर जुम्मा मसजिद है जिसके सुन्दर

गुम्बज और ऊंचे ऊंचे मीनार देखने योग्य हैं। लोग कहते हैं कि पांच सहस्र मनुष्यों ने बराबर छः वर्ष तक काम करके यह मसजिद बनाई थी। बादशाह अपने नाम पर इस शहर का नाम शाहजहानाबाद रखना चाहता था, पर
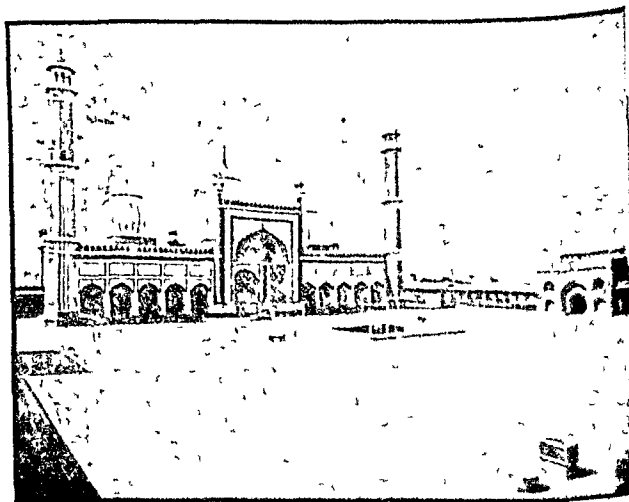
जुम्मा मसजिद

नाम का बदलना सरल काम नहीं है। यह शहर अभी तक दिल्ली के नाम से प्रसिद्ध है।

दिल्ली के किले की दशा अब उतनी अच्छी नहीं है जितनी मुगल बादशाहों के समय में थी। किले के चारों

ओर लाल पत्थर की चहारदीवारी बनी हुई है और उसके नीचे चौड़ी खाई है।

महल का भीतरी भाग भी खाली पड़ा है। एक समय था कि इसके बड़े आँगन में सैकड़ों सरदार और नौकर-चाकर घूमा करते थे, पर आज वहाँ एक आदमी भी दिखाई नहीं देता। हाँ, जब हमारे बादशाह दिल्ली-दरबार के लिये वहाँ पधारे थे तब, कुछ दिनों के लिये, इन पुराने महलों में चहल-पहल मच गई थी।

दीवाने-खास
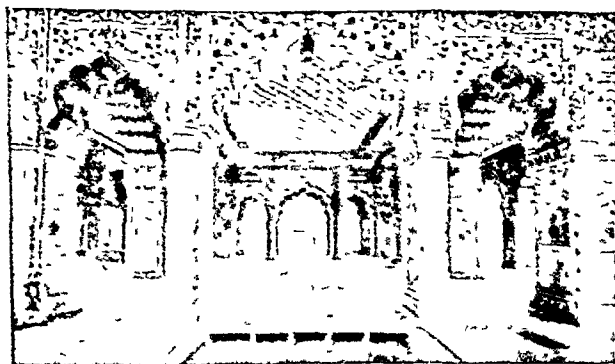
किले में सबसे पहले जो इमारत मिलती है वह दीवाने-आम है। यहाँ,बादशाह अपनी प्रजा की फर्याद सुना

करते थे। बादशाह के बैठने के लिये ऊँचा सिंहासन बना हुआ था, और नीचे फ़र्श पर वज़ीर के बैठने के लिये स्थान था। मुग़ल बादशाहों का यह नियम था कि इनकी प्रजा उनके पास सुगमता से पहुँच सकती थी।

दीवाने आम के पूर्व में दीवाने ख़ास है। यहाँ बादशाह अपने मन्त्रियों और सरदारों के साथ राज-काज में सलाह किया करते थे। यह इमारत बिलकुल सफ़ेद संगमर्मर की बनी हुई है। बीच बीच में सोने के फूल जड़े हुए हैं। पहले इसकी छत बिलकुल चाँदी की बनी हुई थी। प्रसिद्ध मयूर-सिंहासन इसी महल में रक्खा रहता था, जिसको नादिरशाह ले गया।

जिस चबूतरे पर मयूर-सिंहासन रक्खा रहता था उस पर एक फ़ारसी की कविता लिखी हुई है, जिसका अर्थ यह है कि यदि पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो वह यहीं है यहीं है, यहीं है।

महल में संगमर्मर के स्नानागार बने हुए हैं, जहाँ बादशाह नहाया करते थे। इनमें स्वच्छ पानी के फव्वारे छूटा करते थे। फव्वारे तो अब टूट गए हैं, पर संगमर्मर का फ़र्श अभी तक बना हुआ है। चहारदीवारी के भीतर सुप्रसिद्ध मोती मसजिद है जो श्वेत संगमर्मर की बनी हुई है।

मुसलमानों की बादशाहत के पहले भी दिल्ली में यमुना के किनारे के लंबे-चौड़े मैदान में और भी बहुत से पुराने शहर बस चुके हैं, जिनके खंडहर अब तक दिखाई देते हैं। दक्षिण की ओर एक बहुत पुराने किले की दीवालें इस समय तक खड़ी हुई है। उन्हें लोग कौरव पाण्डव का महल कहते हैं। यहाँ एक लोहे का स्तम्भ गड़ा हुआ है जिसको लोग कहते हैं कि यह प्राचीन इन्द्रप्रस्थ नगर का चिह्न है।

कुतुबमीनार

दक्षिण की ओर प्रसिद्ध कुतुब मीनार है। यह मीनार देखने में बहुत ही सुन्दर है। अभी तक लोगों का विचार था कि कुतुबुद्दीन ऐबक नाम के मुसलमान बादशाह ने इसे
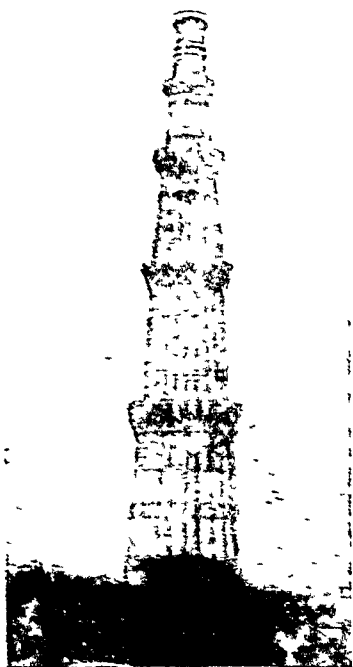
बनवाया है। पर अब विद्वानों की यह राय है कि अलतमश ने इस मीनार को बनवाया था। इसकी उँचाई २३८ फुट है। इसमें ३७९ सीढ़ियाँ लगी हुई है। मीनार के दक्षिण में तुगलकाबाद शहर की टूटी-फूटी दीवालें दिखाई देती हैं। यहाँ गयासुद्दीन तुगलक की राजधानी थी। कुतुबमीनार और नई दिल्ली के बीचवाले मैदान पर सैकड़ों इमारतें, मकबरे और मसजिदें टूटी-फूटी दशा में खड़ी है, जो हमको कितने ही प्राचीन राजाओ और बादशाहों का स्मरण कराती हैं। नई दिल्ली में बहुत-सी देखने योग्य इमारतें बन गई हैं। राजधानी की इमारतें जिस स्थान पर बनी हैं उस स्थान का नाम रायसीना है।

कठिन शब्द—

**चहारदीवारी, फर्याद, स्नानागार, मकबरा, मीनार, स्तम्भ, फर्श।**

प्रश्न—

(१) मयूरसिंहासन के रखने के चबूतरे पर क्या लिखा है ?
(२) दिल्ली किस किस जाति के राजाओं की राजधानी रही है ?
(३) कुतुबमीनार के बारे में तुमने क्या पढा है ?
(४) दिल्ली की प्रसिद्ध ऐतिहासिक इमारतें कौन कौन है ?

पाठ २४

# म्युनिसिपैल्टी

रामचन्द्र गणेश आगरकर अपने पिता गणेश लक्ष्मण आगरकर के साथ टिमरनी से रामटेक जा रहा था। गाड़ी पर से नागपुर के पुतलीघरों को देख उसने अपने पिता से पूछा—पिताजी, वहाँ कई स्थानों से धुआँ क्यों निकल रहा है?

गणेश—वहाँ बहुत से पुतलीघर हैं। उन पुतलीघरों में कलों को चलाने के लिये आग जलाई जाती है। आग का धुआँ ऊँची ऊँची चिमनियों से निकलता है ताकि वह ऊपर ही रह जाय; शहर में न फैलने पाए।

राम०—क्या लौटते समय नागपुर में ठहर कर आप मुझे पुतलीघर दिखा देंगे?

गणेश—अच्छा, दिखा दूंगा।

लौटते समय नागपुर में ठहर कर रामचन्द्र ने पुतलीघर तथा कई दूसरे स्थान देखे। वे सन्ध्या के समय शुक्रवारी तालाब के पास पहुँचे। वहाँ एक बगीचा था जिसमें कई बेंचें पड़ी हुई थीं। वे लोग एक बेंच पर जा बैठे और बातचीत करने लगे।

राम० पिताजी, यह बेंच किसने बनवा दी है?

गणेश—यह बेंच, बगीचा तथा बिजली की रोशनी आदि सब प्रबन्ध म्युनिसिपैल्टी ने किया है।

राम०—म्युनिसिपैल्टी किसे कहते हैं?

गणेश—शहरों तथा नगरों में, जहाँ जन-संख्या आठ हजार से अधिक होती है, लोगों के सुभीते, स्थान की स्वच्छता तथा बालकों की शिक्षा के प्रबन्ध के लिये एक संस्था बनाई जाती है। उस संस्था को म्युनिसिपैल्टी कहते हैं।

राम०—क्या यह कार्य सरकार नहीं करती?

गणेश—लोगों की रक्षा आदि कामों का प्रबन्ध सरकार करती है। पर अपने अपने गाँवों तथा नगरों के कुछ लाभदायक प्रबन्ध जनता के हाथ में दे दिए गए हैं।

राम०—म्युनिसिपैल्टी को इन कामों के लिये रुपया कहाँ से मिलता है?

गणेश—कुछ रुपया सरकार देती है; कुछ रुपया लालटेन, बिजली और जलकल पर जो कर (टैक्स) लगाया जाता है, उससे निकल आता है। कुछ रुपया बाजारों की दुकानों के भाड़े तथा बिक्री पर लगाए कर से मिल जाता है। टौन ड्यूटी, स्कूलों की फीस तथा काजी हौस से भी कुछ आमदनी हो जाती है।

राम०—टौन ड्यूटी से रुपया किस प्रकार मिलता है ?

गणेश—म्युनिसिपैल्टी की सीमा के भीतर जो कुछ बिकने आता है, उस पर जो कर म्युनिसिपैल्टी लेती है उसे टौन ड्यूटी कहते हैं।

राम०—म्युनिसिपैल्टी अपनी आमदनी को कैसे खर्च करती है ?

गणेश—म्युनिसिपैल्टी अपनी सीमा के भीतर स्वच्छता का प्रबन्ध करती है। वह सड़कें तथा नालियाँ बनवाती है। उनको साफ कराती है। प्रकाश के लिये लम्प लगवाती है। बाजारों में सफाई रखती है। सड़ी, गली, गन्दी चीजों की बिक्री पर देखरेख रखती है। स्वच्छ जल के लिये नल लगवाती है। रोगियों के लिये चिकित्सा तथा ओषधि का प्रबन्ध करती है। शीतला तथा प्लेग के टीके लगवाती है और उनसे बचने के लिये भाँति भाँति की सहायता देती है। बालकों की शिक्षा के लिये कई प्रकार की शालाएँ खोलती है, स्वच्छ वायु के लिये बगीचे बनवाती है। वह ऐसे अनेक कार्य करती है जिनसे जनता को लाभ पहुँचे।

राम०—म्युनिसिपैल्टी में कौन लोग काम करते हैं ?

गणेश—म्युनिसिपैल्टी की सभा (कमेटी) के अधिकतर मेम्बर जनता चुनती है। सरकार भी कुछ लोगों को अपनी

ओर से चुनती है। कुछ सरकारी कर्मचारी भी सभा में भेज देते हैं। प्रबन्ध का अधिकार सभा के हाथ में रहता है। इनके अतिरिक्त म्युनिसिपैल्टी आवश्यकता के अनुसार कर्मचारी नियत कर लेती है, जैसे चिकित्सा के लिये डाक्टर, शिक्षा के लिये शिक्षक, सड़क, जलकल तथा बिजली के लिये इंजीनियर और कारीगर, कर उगाहने के लिये नौकर इत्यादि इत्यादि। इतने में बिजली का प्रकाश एकाएक सड़कों पर फैल गया। उसे देख रामचन्द्र बहुत प्रसन्न हुआ।

राम०—ये बिजली के खम्भे कितनी दूर तक लगे होंगे ?

गणेश—सीमा के भीतर सभी बड़ी सड़कों पर ये खम्भे लगे होंगे। छोटी गलियों में जहाँ तहाँ लम्प भी लगे होंगे। जो म्युनिसिपैल्टी अधिक खर्च नहीं कर सकती वह बिजली का प्रबन्ध न कर केवल लम्प ही लगा देती है।

थोड़ी देर यों ही बातचीत करके वे अपने डेरे को चले गए।

कठिन शब्द—

**चिमनियाँ, जन-संख्या, संस्था, अधिकतर, जनता, चिकित्सा, ओषधि, इंजीनियर।**

प्रश्न—

( १ ) म्युनिसिपैल्टी की सभा (कमेटी) कैसे बनाई जाती है ?
( २ ) म्युनिसिपैल्टी की आमदनी कहाँ से होती है ?
( ३ ) म्युनिसिपैल्टी का खर्च किस प्रकार होता है ?
( ४ ) टौन ड्यूटी और टैक्स किसे कहते हैं ?

---

पाठ २५

## वन-यात्रा

निकसि वशिष्ठ द्वार भए ठाढ़े ।
देखे लोग विरहदव दाढ़े ॥
कहि प्रिय वचन सकल समुझाए ।
विप्र-वृंद रघुवीर बोलाए ॥
गुरु सन कहि वरशासन दीन्हें ।
आदर दान विनय वस कीन्हें ॥
जाचक दान मान सन्तोषे ।
मीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥
दासी दास बोलाइ बहोरी ।
गुरुहिं सौंपि बोले करजोरी ॥

सब कै सार सँभार गोसाईं ।
करबि जनक जननी की नाईं ॥
बारहिं बार जोरि जुग पानी ।
कहत राम सब सन मृदुबानी ॥
सोइ सब भाँति मोर हितकारी ।
जेहितें रहइ भुआल सुखारी ॥

दोहा—मातु सकल मोरे बिरह जेहि न होहिं दुख दीन ।
सोइ उपाय तुम्ह करेहु सब पुरजन परम प्रवीन ॥

एहि बिधि राम सबहिं समुझावा ।
गुरु-पदपदुम हरपि सिरु नावा ॥
गनपति गौरि गिरीस मनाई ।
चले असीस पाइ रघुराई ॥
राम चलत अति भयेउ बिषादू ।
सुनि न जाय पुर आरत नादू ॥
कुसगुन लङ्क अवध अति सोकू ।
हरप बिषाद बिबस सुरलोकू ॥
गइ मुरछा तब भूपति जागे ।
बोलि सुमंत्रु कहन अस लागे ॥
रामु चले बन प्रान न जाहीं ।
केहि सुख लागि रहत तन माहीं ॥

एहितें कवन व्यथा बलवाना।
जो दुखु पाइ तजिहि तनु माना॥
पुनि धरि धीर कहइ नरनाहू।
लेइ रथ संग सखा तुम जाहू॥

दोहा—सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकसुता सुकुमारि।
रथ चढ़ाइ देखराइ बनु फिरेहु गये दिन चारि॥

जो नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई।
सत्य-संध दृढ़-व्रत रघुराई॥
तौ तुम्ह विनय करेहु कर जोरी।
फेरिय प्रभु मिथिलेसु-किसोरी॥
जब सिय कानन देखि डेराई।
कहेहु मोरि सिख अवसरु पाई॥
सासु ससुर अस कहेउ सँदेसू।
पुत्रि फिरिय वन बहुत कलेसू॥
पितुगृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी।
रहेहु जहाँ रुचि होइ तुम्हारी॥
एहि विधि करेहु उपाय कदम्बा।
फिरइ त होइ प्रान अवलम्बा॥
नाहिंत मोर मरनु परिनामा।
कछु न बसाइ भये विधि वामा॥

अस कहि मुरुछि परे महि राऊ।
राम लषनु सिय आनि देखाऊ॥

दोहा—पाइ रजायसु नाय सिरु रथु अति वेगु बनाइ।
गयेउ जहाँ बाहर नगर सीय सहित दोउ भाइ॥

कठिन शब्द—

**विरहदव दाढ़े, बरशासन, जाचक, पुनीत परितोषे, जनक-जननी, जुग पानी, सार, भुआल पदपदुम, विषादू, बिबस, सुरलोकू, व्यथा, नरना सुठि, सत्यसंध, दृढ़-व्रत, मिथिलेसु-किसोरी, कद बसाइ, रजायसु।**

प्रश्न—

(१) नीचे लिखे शब्दों का अन्तिम 'उ' निकाल देने से क्या अर्थ कुछ बदल जायगा?

मातु, सोकू, लोकू, समयु, रामु, तनु, नरनाहू, बनु, मिथिलेसु अवसर, मासु, सँदेसू, कलेसू, मरनु, रजायसु, रथु, बगु।

(२) वन जाते समय रामचन्द्रजी सब भार किस पर छोड़ गए?

(३) सीता जी के लिये दशरथजी ने क्या सँदेसा कहलाया?

---

पाठ २६

## हम्मीर की माता

( १ )

एक बार चित्तौर के राणा लक्ष्मणसिंह के ज्येष्ठ पुत्र अरिसिंह आखेट के लिये अन्दावा नामक एक वन को गये। अरिसिंह तथा उनके साथी एक जंगली सुअर को देखकर उसके पीछे दौड़े। सुअर इन लोगों को अपने पीछे आते हुए देखकर एक खेत में घुस गया। इस खेत के स्वामी की एक कन्या थी। उस समय वही मचान पर बैठकर खेत की रक्षा कर रही थी। सुअर ने खेत में प्रवेश किया है। राजपुत्र सेवक आदि के साथ साथ उसके खेत में प्रवेश कर सुअर को मारेंगे। खेती बिलकुल नष्ट हो जायगी। इस भय से किसान की बेटी ने मचान पर खड़ी होकर अरिसिंह से कहा—राजकुमार! आप खेत में घुसकर खेती को नष्ट न कीजिए। मैं सुअर को अभी मार लाती हूँ। सब लोग रुक गए।

किसान की लड़की ने खेत में से एक पौधा काटकर उसके आगे के हिस्से को खूब चोखा कर लिया। फिर खेत में प्रवेश कर उसी से सुअर को मारकर वह राजकुमार के सम्मुख ले आई। किसान की लड़की का पुरुषों से

उस कन्या ने कहा—राजपुत्र, आपकी कृपा और क्षमा ही मेरे लिये बहुत है। मैं और कोई पुरस्कार आपसे नहीं चाहती। दीन प्रजा का स्मरण रखिएगा, यही प्रार्थना है। राजपुत्र को प्रणाम कर वह अपने काम पर चली गई।

( २ )

अरिसिंह अपने साथियों के साथ राजधानी की ओर जा रहे थे, मार्ग में उन लोगों को फिर वही कन्या दिखलाई दी। वह सिर पर एक बड़ी दूध की कलसी रक्खे और दोनों हाथों से दो बड़ी-बड़ी भैंसों को रस्सी से बाँधकर खींचती हुई जा रही थी। राजकुमार के एक साथी ने यह विचारा कि इस लड़की ने हम सबको बड़ा नीचा दिखलाया है: इसको धक्का देकर गिरा देने का यह बहुत अच्छा अवसर है। यह विचार कर उसने उसकी ओर इस प्रकार से घोड़े को चलाया कि उस कन्या के सिर से दूध की मटकी पृथ्वी पर गिर पड़े। उस कन्या ने भी उसके मन की बात ताड़ ली और तनिक मुस-कराकर भैंस के रस्से को उसके घोड़े के पैर में ऐसा फँसाया कि वह सिपाही घोड़े से गिर पड़ा।

सबके सब खिलखिलाकर हँसने लगे। राजपुत्र ... ह सेवक कौतुक करने चला था, किन्तु वह स्वयं

भी अधिक बल तथा साहस देख सबके सब मुग्ध हो उसकी प्रशंसा करते हुए पड़ाव को लौट गए।

पड़ाव पर लौटकर जिस समय राजकुमार तथा उनके साथी नदी के तीर पर स्नान-पूजा इत्यादि कर रहे थे, उसी समय पत्थर का एक बड़ा टुकड़ा अरिसिंह के घोड़े के पैर पर आ गिरा। घोड़ा उसी समय पृथ्वी पर गिर पड़ा। सबने देखा कि उसी किसान की बेटी मचान पर से पशु-पक्षियों को भगाने के लिये पत्थर फेंक रही है। एक पत्थर इतनी दूर आकर पड़ा और उसी से घोड़े का पैर टूट गया! किसान की बेटी की शक्ति का दूसरा परिचय पाकर सबके सब दंग हो गए। किसान की बेटी राजकुमार के घोड़े की दशा देख लज्जित हुई और डरती हुई निकट आकर बोली—राजकुमार! मुझे क्षमा कीजिए, मैंने असावधानी से आपके घोड़े को चोट पहुँचाई। मैं स्त्री हूँ—आपकी प्रजा हूँ, मेरा अपराध क्षमा कीजिए।

अरिसिंह ने हँस कर कहा—तुम्हारी शक्ति देखकर मुझे अत्यन्त आश्चर्य हुआ है। तुम्हारे सदृश स्त्रियाँ यदि और भी इस देश में हों तो प्रत्येक के हाथ से ऐसे-ऐसे दस घोड़ों के पैर टूटने का भी मुझे दुःख नहीं। मुझे यही दुःख है कि इस समय मेरे पास तुम्हें उचित पुरस्कार योग्य कोई वस्तु नहीं है।

पर दौड़ रहा है। उसने पीछे फिरकर देखा। कोई सौ गज की दूरी पर एक बड़ा भारी पशु आरहा था। वह देखते ही घबड़ा गया। उसने कॉप कर कहा बिहारी! अरे बाप रे! बिहारी! जरा देख तो! बिहारी ने घूम कर देखा। एक जानवर झपटते हुए आरहा था। वह टट्टू के बराबर बड़ा था। बिहारी ने देखते ही कहा—ओह! यह बच्चे की मा है!

उसी क्षण दोनों को सब समझ में आगया। बच्चे के रक्त को सूँघती हुई मादा आ रही थी। उन्हें ऐसा जान पड़ा जैसे साक्षात मृत्यु आ रही हो। मादा ने भी इन लोगों को देख लिया। उसने क्रोध के मारे अपनी चाल दूनी कर दी। उसके रोंगटे खड़े हो रहे थे। उसने अपना बैल सा सिर ऊपर उठाया और सुअर सा लम्बा मुँह फैला दिया और आँधी के समान पत्तियाँ उड़ाती उन लोगों पर झपटी। बिहारी ने भालू का बच्चा ले लिया और अहेरी से कहा—बाण चलाओ। पर अहेरी सिर से पैर तक कॉपता खड़ा रह गया। बिहारी ने फिर कहा—चलाओ जी! देखते क्या हो? अहेरी ने बाण न चलाया। वह भाग कर एक वृक्ष पर चढ़ने लगा। यह देख बिहारी भी बच्चा ले एक वृक्ष की ओर झपटा और उस पर चढ़ गया। भागते हुओं को मादा अवश्य पकड़ लेती परन्तु वह

थोड़ी देर रुक कर बच्चे को सूँघने लगी। वह जान गई कि बच्चा मर चुका है। तब वह घोर शब्द करती हुई बिहारी पर झपटी। बिहारी कुछ ऊपर पहुँच गया था। मादा ने मारे क्रोध के पेड़ की छाल नोच डाली और ऊपर चढ़ने लगी। बिहारी इधर-उधर देखने लगा कि किसी दूसरे वृक्ष पर कूद पड़े परन्तु उसकी पहुँच के भीतर कोई वृक्ष न दिखाई पड़ा।

नीचे कूदने में भी कुशल न थी। उसने सोचा अब मरना ही है। तब लड़ कर ही क्यों न मरूँ। उसने झुक कर एक डाल खूब कसकर पकड़ ली और छुरी हाथ में ले. मादा के आक्रमण की राह देखने लगा। बिहारी जानता था कि छुरी का मादा पर कुछ असर न होगा क्योंकि छुरी उसके घने बाल और मोटे चमड़े को न भेद सकेगी। परन्तु दूसरा उपाय ही क्या था?

इस समय अहेरी ने साहस किया। उसने पेड़ से नीचे उतर धनुष चढ़ा एक बाण चलाया। बाण मादा के पैर में लगा। वह पीड़ा के कारण गुर्राई। उसने सिर घुमा कर देखा। बिहारी ने कहा—अब यह तुझ पर लौट रही है। दौड़. वृक्ष पर चढ़। यह सुन मादा फिर बिहारी की ओर बढ़ी। कदाचित उसने सोचा कि पहले एक का काम समाप्त कर लूँ तब दूसरे को देखूँगी।

मादा चोट खाकर और भी क्रोधित हो गई थी। उसकी आँखें आग के समान चमक रही थीं। वह दाँत किटकिटा रही थी। यह देख विहारी की हिम्मत और भी टूट गई। वह डर के मारे काँपने लगा। मादा अब बिलकुल पास आगई थी और चाहती थी कि विहारी पर चोट करे कि अहेरी ने नीचे से फिर एक बाण छोड़ा। अब की बार बाण मादा के पेट में घुस गया। वह कराहती हुई वृक्ष पर से गिर पड़ी। उसके गिरने से शाखा हिलने लगी। विहारी घबड़ाया तो था ही; वह अपने को न सम्हाल सका। वह भी वृक्ष के नीचे जा गिरा। इस समय भाग्य ने उसकी रक्षा की। वह मादा के ऊपर गिरा। इस कारण उसे चोट न आई। अहेरी ने दौड़कर उसे उठाया। मादा मर चुकी थी। दोनों अपने घर की ओर झपटे। वे लोग गाँव से बहुतेरे साथी और मशाल लेकर आए और अपना शिकार उठा ले गए।

कठिन शब्द—

**साक्षात, मादा, परिणाम।**

प्रश्न—

(१) विहारी और अहेरी में अधिक साहसी तुम किसे समझते हो?

(२) अहेरी के प्राण कैसे बचे?

———

पाठ २८

# राजा का रोग

( १ )

मोटा-ताजा था शरीर से, और पेट भर खाता था।
जब-तब बीन बजाकर के वह, मधुर राग से गाता था॥
सुख से रहता तो भी अपने को रोगी बतलाता था।
ऐसा एक घमंडी राजा, यों ही ठाट दिखाता था॥

( २ )

दूर-दूर से वैद्य बुलाकर, करवाता औषध-उपचार।
नहीं लाभ कुछ होता लखकर, झट देता उनको दुतकार॥
उसकी इस लीला से व्याकुल हुए कर्मचारी मतिमान।
समझ दुष्टता अपने मन में, वे सबके सब थे हैरान॥

( ३ )

आखिर आया एक वैद्यवर, और सुना उसने सब हाल।
कहा—ले चलो मुझको भाई, दूँगा कर निरोग तत्काल॥
राजा को उसने जा देखा, ध्यान-पूर्वक भले प्रकार।
नाड़ी पकड़ निदान मिलाया, किया रोग का पूर्ण विचार॥

( ४ )

कहा—रोग है बड़ा भयङ्कर, यह ले लेगा जल्दी प्राण।
आयुर्वेद-शास्त्र मे इसका, मिलता केवल एक विधान॥

किसी सुखी जन का कुर्ता ले, पहन अगर सो जावें आप।
तो क्षण भर में भाग जायगा, रोग आपका अपने आप॥

( ५ )

सुनकर राजा ने आज्ञा दी, लाओ ऐसा कुर्ता ढूँढ़।
वैद्यराज की दवा सरल है, नहीं जरा भी है वह गूढ़॥
दौड़े दूत जहाँ पर जो थे, लगे खोजने इधर-उधर।
किन्तु सुखी जन एक न पाया, सबने ढूँढा जा घर-घर॥

( ६ )

लौट पड़े होकर हताश वे, सब प्रकार से हिम्मत हार।
उनमें से तब मिला एक को, भिक्षुक खड़ा नदी के पार॥
हँस-हँसकर वह भजन सूर के, बड़े प्रेम से गाता था।
च में अपने से वह, बातें कर इठलाता था॥

( ७ )

ढङ्ग देखकर, सोचा राजदूत ने यह मन में।
यह सुखी; नहीं दुख इसको; रहता है अपनी धुन में॥
जाकर पास कहा—हे भिक्षुक, कुर्ता दो मुझको अपना।
मुँह-माँगा तुम दाम यहीं लो, भाई मेरा काम बना॥

( ८ )

सुन हँसने लगा भिखारी, कहा—नहीं कुर्ता है पास।
कुर्ता क्या चिथड़े तक का भी, नहीं यहाँ है कुछ आभास॥

मुझ जैसे गरीब भिखमंगे, किससे लाए कपड़े माँग।
मुट्ठी भर चावल के दाता, देख बनाते मेरा स्वाँग॥

( ९ )

आकर दूतों ने राजा से, कहा—सुखी जन मिला नहीं।
सारा राज्य छान डाला, पर हमें दिखा वह नहीं कहीं॥
गाँव-गाँव घर-घर जा देखा, ढूँढ़ा वन-उपवन धर ध्यान।
नहीं मिला पर ऐसा कोई, सुखी जिसे हम लेवें मान॥

( १० )

दूतों की बातों से उसकी आँखें खुलीं आप ही आप।
क्या सबकी सब प्रजा दुखी है, सोचा मन में भय से काँप॥
झुँझलाहट तब उसकी सारी, हवा हो गई क्षण भर में।
लगा प्रबन्ध राज्य का करने, लेकर न्यायदण्ड कर में॥

( ११ )

उसके इस प्रयत्न से सारी, प्रजा हो गई सुख-सम्पन्न।
दुख का नाम मिटाया उसने, सुख के साधन कर उत्पन्न॥
इस प्रकार वह स्वयं होगया, सुखी, सरल, दाता, नीरोग।
हो सचेत, अवसर का उसने, किया बुद्धि से जब उपयोग॥

कठिन शब्द—

औषध-उपचार, मतिमान, निदान, न्यायदण्ड, सुख-सम्पन्न।

प्रश्न—

(१) इस कविता का तात्पर्य्य लिखो।

(२) इस संसार में सुखी कौन है ?

(३) आयुर्वेद-शास्त्र किसे कहते हैं ?

---

पाठ २९

## चन्द्रमा

जब मैं छोटा-सा था तब सुना करता था—"चन्द्रमा लड़के-लड़कियों का मामा है। उसमें एक बुढ़िया बैठी है जो सबकी नानी है।" हम लोग घंटों चन्द्रमा की ओर टकटकी बाँध कर देखते रहने पर भी नहीं अघाते थे।

अब मुझे विदित होगया कि चन्द्रमा किसी का मामा नहीं है। वह एक ग्रह है। यदि हम चन्द्रमा में किसी तरह पहुँच जायँ तो आग नहीं जला सकते क्योंकि वहाँ हवा नहीं है। हाँ, केवल इतना लाभ होता कि हम दिन में भी तारों को देख सकते।

चन्द्रमा में जो चमक है, वह भी उसकी नहीं है। वह आकाश में एक बड़े दर्पण की भाँति है जो सूरज के

चन्द्रमा की चाल

प्रकाश को हमारी ओर फेंकता है और हम समझते हैं कि चन्द्रमा चमक रहा है। जब यह पृथ्वी और सूरज के साथ एक सीध में होता है तब पूरा दिखलाई पड़ता है। उसे पूर्णमासी का चन्द्रमा कहते हैं। और दशाओं में यह घटता-बढ़ता रहता है।

यदि चन्द्रमा में प्राण होता और वह बोल सकता तो कदाचित वह हमको बहुत-सी बातें बतलाता। कहते हैं

पूर्णमासी का चन्द्रमा

किस किसको देखा होगा। हमें भी वह उसी तरह चुपचाप देख रहा है। कदाचित इसीलिये चन्द्रमा को देखकर हमें बड़ी शान्ति मिलती है।

आज-कल बड़े भारी भारी दूरबीन बन गए हैं। उनमें से देखने से ऐसा जान पड़ता है मानो हम वायुयान में बैठकर चन्द्रमा के पास तक पहुँच गए हैं। इन्हीं दूरबीनों से आकाशविद्या जाननेवाले पंडितों ने जान लिया है कि चन्द्रमा में कंकड़ पत्थर छोड़ और कुछ नहीं है। न पेड़, न पौधे, न पानी, न वायु ऊँचे ऊँचे पहाड़ हैं और गहरी गहरी घाटियाँ हैं पहाड़ों की जो छाया घाटियों पर पड़ती है उसी को हम लोग बुढ़िया या चन्द्रमा का कलंक कहते हैं। यह बात ध्यान देने की है कि चन्द्रमा यद्यपि निर्जीव है तथापि उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हो रहा है। जैसा वह सहस्रों वर्ष पहले था वैसा ही अब भी है। वायु और पानी से ही धरातल में परिवर्तन होता है। जहाँ ये दोनों पदार्थ नहीं वहाँ परिवर्तन कैसा?

ऊँचाई में चन्द्रमा के पहाड़ हिमालय से भी ऊँचे हैं। और उसके समान गहरी घाटियाँ भी पृथ्वी पर नहीं हैं। पर चन्द्रमा पृथ्वी से बहुत छोटा है। यदि पृथ्वी को काट काट कर कोई चन्द्रमा बनाना चाहे तो पचास चन्द्रमा बन

सकते हैं। पृथ्वी से इतना छोटा होने के कारण चन्द्रमा में पदार्थों को अपनी ओर खींचने की शक्ति भी बहुत कम है। जो बोझा पृथ्वी पर ६ मन भारी है वह चन्द्रमा पर एक ही मन का होगा। जो कुली यहाँ एक बोरा लेकर चल सकता है वही यदि चन्द्रमा में होता तो ६ बोरे लेकर चल सकता।

चन्द्रमा के मैदान, पहाड़ और घाटियाँ सब गोल हैं। यदि बड़े बड़े शंखों और घोंघों का ढेर हम देखें तो हम चन्द्रमा के धरातल का कुछ अन्दाजा लगा सकते हैं।

कठिन शब्द—

**अघाते, पदार्थ, कलंक, धरातल, परिवर्तन, दूरबीन।**

प्रश्न—

(१) चन्द्रमा पर आग क्यों न जल सकेगी ?
(२) चन्द्रमा पर कुली अधिक बोझा क्यों उठा सकेगा ?
(३) दूरबीन से देखने में चन्द्रमा कैसा लगता है ?
(४) चन्द्रमा का कलंक किसे कहते हैं ?

स्थानीय संस्थाओं (म्युनि०, डि० कौं०, लोकल बो०
आदि) का खर्च जनता के स्वास्थ्य-शिक्षा और सुभीते
के लिये होता है। अपनी सीमा में स्वास्थ्य के लिये अस्पताल
खोलना, ओषधि बाँटना, पीने के जल के लिये तालाब,
कुएँ खुदवाना, उन्हें स्वच्छ रखना, बिगड़ जाने पर उन्हें
सुधरवाना, शीतला के तथा प्लेग के टीके का प्रबन्ध
करना, बाजारों में वस्तुओं की बिक्री पर स्वास्थ्य की
दृष्टि से देख-रेख इत्यादि काम डिस्ट्रिक्ट कौंसिल किया
करती है। शिक्षा के लिये शालाएँ खोलना, पाठकों को वेतन
देना, शालाभवन बनवाना आदि भी इन्हीं के अधीन है।

सुभीते के लिये सडकें बनवाना और घाट तथा पुल
बँधवाने का प्रबन्ध भी डिस्ट्रिक्ट कौंसिलों के हाथ में
रहता है।

कठिन शब्द—

**संस्था, सदस्य, लोकल बोर्ड।**

प्रश्न—

(१) डिस्ट्रिक्ट कौंसिल की आय और व्यय के विभाग कौन
कौन हैं?

(२) डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के सदस्यों का चुनाव कैसे होता है?

(३) जनता के स्वास्थ्य के लिये डिस्ट्रिक्ट कौंसिल क्या करती है?

---

पाठ ३१

## बेटी की विदा

प्यारी बहिन सौंपती हूँ मै अपना तुम्हें खजाना:
है इस पर अधिकार तुम्हारे बेटे का मनमाना।
रक्त, मांस, हड्डी, तन, मेरा—है यह बेटी प्यारी:
करो इसे स्वीकार, हुई यह अब सब भाँति तुम्हारी ॥१॥
पूजे कई देवता हमने तब इसको है पाया:
प्राण समान पालकर इसको इतना बड़ा बनाया।
आत्मा ही यह आज हमारी हमसे बिछुड़ रही है:
समझाती हूँ जी को तो भी धरता धीर नहीं है ॥२॥
बहिन ढिठाई माता की तुम मन में नेक न धरियो:
इस कोमल बिरवा की रक्षा बड़े चाव से करियो।
है यह नम्र मेमने से भी भीरु मृगी से बढ़ कर:
कड़ी बात या चितवन से यह कंप जाती है थर थर ॥३॥
है गँवार यह भोली भाली नहीं मिष्टता जाने:
तिस पर भी गुरुजन की आज्ञा बड़े प्रेम से माने।
साँचे में तुम इसे ढालियो कभी न यह तड़केगी:
बहिन, सिखाने से चतुराई बेटी सीख सकेगी ॥४॥
यह गुड़िया, यह लक्ष्मी अपनी, जीवन-मूल दुलारी,
हृदय थाम कर करती हूँ मैं अब आँखों से न्यारी।

माता-नेह सोच तुम मन मे दुख मेरा अनुमानो;
ममता छिपती नही छिपाये, बहिन, सत्य यह जानो ॥५॥

इसका रूप निहार दिव्य मै पल पल सुख पाती थी;
गान समान सुरीली बोली इसकी मन भाती थी।
बहिन तुम्हे भी ये सब बाते जान पड़ेगी आगे;
अपने नैन रखोगी इस पर जब तुम नित अनुरागे ॥६॥

इसकी मन्द हँसी से मेरा मन अति सुख पाता था;
कठिन घाव भी जिससे दुख का अच्छा हो जाता था।
इसे उदास देख आँखों में भर आता था पानी;
छिपी नहीं है, बहिन, किसी से माता-प्रेम-कहानी ॥७॥

बड़ी लालसा भी निज मन की इसने नहीं बताई;
कर संकोच कठिन पीड़ा भी अपनी सदा छिपाई।
तो भी मै सब लख लेती थी इसके बिना कहेही;
यों ही तुम इसकी सब बातें लखियो, बहिन सनेही ॥८॥

अपना मांस-पिंड देती हूँ मै तन से कर न्यारा;
है यह जीवन मेरे जी का, आँखों का है तारा।
इस अनाथ बच्चे का पालन मातासम तुम कीजो;
मेरी इस बलहीन दशा में बहिन बाँह गह लीजो ॥९॥

करो बहिन स्वीकार दया कर मेरी इतनी बिनती;
बच्चों मे अपने तुम करियो इस बेटी की गिनती।

दीजे बहिन, भरोसा मुझको, हाथ हाथ में देकर;
बेटी-सम पालेंगी इसको हम माता-सम लेकर ॥१०॥

कठिन शब्द—

आत्मा, बिरवा, मेमना, भीरु, शिष्टता, साँचा, गुरुजन, साँचे, तड़केगी, जीवन-मूल, अनुमाने, दिव्य, अनुरागे, लालसा, लेकर ।

प्रश्न—

(१) इस पाठ में कौन किससे बोल रहा है ?
(२) हृदय थामने का भाव क्या है ?
(३) माता अपनी दशा पर क्यों रोती है ?

---

पाठ ३२

## भगवान बुद्ध

राजा विक्रमादित्य से सात सौ वर्ष पहले उत्तरी भारत में सबसे अधिक प्रबल राज्य कोशल का था। इस राज्य के दक्षिण में काशी थी और पूर्व-उत्तर में नेपाल था। यहां महाराज रामचन्द्रजी के वंशज राज्य करते थे, पर इसमें दो शाखाएं हो गई थीं। एक की राजधा

तो कपिलवस्तु, और दूसरे की श्रावस्ती थी। उस समय अयोध्या राजधानी न थी।

कपिलवस्तु बनारस से लगभग १०० मील उत्तर की ओर हिमालय की तराई में था। आज से अढ़ाई हजार वर्ष के कुछ ही पहले वहाँ शुद्धोदन का राज्य था। उनकी रानी महामाया थी। रानी के एक पुत्र हुआ जिसका नाम सिद्धार्थ रक्खा गया। यही सिद्धार्थ पीछे से संसार में गौतम बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

पढ़ने-लिखने में सिद्धार्थ अपने बचपन ही से बड़ा तीव्र बुद्धिवाला था। बाण चलाने और युद्ध करने की विद्या भी इसने सीखी थी। परंतु एकांत में बैठ कर विचार करने की आदत इसे लड़कपन से ही थी। दया और करुणा तो इसके स्वभाव में कूट-कूट कर भरी थी।

अठारह वर्ष की अवस्था में सिद्धार्थ का विवाह हुआ। राजा ने पुत्र का विचित्र स्वभाव देखकर भरसक इसे राजमहलों में ही रक्खा और संसार को देखने से बहुत बचाया। फिर भी सिद्धार्थ ने एक बूढ़े, रोगी और मृत मनुष्य को देखकर संसार के दुःखों पर विचार किया। तीस वर्ष की अवस्था में राजकुमार के एक पुत्र भी हुआ जिसका नाम राहुल रक्खा गया। एक दिन सिद्धार्थ नगर में घूमने निकला। वहाँ उसने एक साधु को देखा।

वह शांत और प्रसन्न-मन था। उसे देखने से ऐसा ज्ञात होता था कि मानों उसे किसी और बात की चिंता नहीं है। उसकी ऐसी दशा देखकर सिद्धार्थ के मन में भी वैराग्य का उदय हो गया।

एक रात को, जब सब सो रहे थे, राजकुमार चुपचाप महल से निकल पड़ा। सन्यासी के कपड़े पहिन वह इधर-उधर पर्यटन करने लगा। प्रथम कुछ दिन तक पटने में पंडितों से धर्मशिक्षा लेता रहा। पीछे गया के वन में तपस्या करने लगा। परंतु जब उसके मन को तप से संतोष न हुआ तब उसने सोचा कि तपस्या करके शरीर को पीड़ा देने से कोई लाभ नहीं। एक दिन सोचते-विचारते उसके चित्त में यह भाव आया कि शुद्ध जीवन बिताना और सब जीवों पर दया करना ही जीव को दुःख से छुटकारा दे सकता है। मनुष्य को जितने दुःख होते हैं सबका मुख्य कारण उसकी इच्छाएँ ही हैं। दुःख से बचना चाहे तो मनुष्य इच्छाओं को दबाए। इन विचारों से सिद्धार्थ की आँखें खुल गईं। उसी दिन से वह संसार में 'बुद्ध' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

अब उसने अपने नए मत का प्रचार करना आरंभ कर दिया। उस समय तक ब्राह्मण संस्कृत-भाषा में ऐसा उपदेश करते थे जो साधारण लोगों की समझ में न आता

था। बुद्ध उस समय की बोलचाल की भाषा में उपदेश देने लगे। उनकी शिक्षा छोटे-बड़े सभी समझते और बहुत मन लगा कर सुनते थे। थोड़े ही दिनों में उनके बहुत से चेले हो गए।

तीस वर्ष बीतने पर, बुद्ध एक बार अपने पिता की राजधानी में आए। उस समय वे साधु के वेष में थे। उनके बूढ़े पिता शुद्धोदन और बुद्ध की स्त्री तथा पुत्र ने भी उनके प्रभाव से बौद्ध-धर्म की दीक्षा ले ली।

प्रथम तो उत्तरी भारत में घूम-घूम कर बुद्ध ने स्वयं अपने धर्म का प्रचार किया। फिर भिक्षुकों का अर्थात् बौद्ध-संन्यासियों का एक संघ बनाया। उसके नियम निश्चित किए। मठों में रहने और साधना करने के ढंग निकाले। बौद्ध-मठों को "विहार" कहते थे। इनमें सदाचारी स्त्री और पुरुष दोनों ही रहते थे। विहारों के अधिक होने से ही सारे प्रान्त का नाम "बिहार" पड़ गया है।

धर्म-शिक्षा देते, घूमते-घामते, अस्सी वर्ष की अवस्था में कुशीनगर में अपने जन्म-स्थान के पास हो, अपनी शिष्य-मंडली से बात-चीत करते करते गौतम बुद्ध परलोक सिधारे।

कठिन शब्द—

**पर्यटन, शाखाएँ, तराई, वैराग्य, संन्यासी,**

**शुद्ध, भिक्षुक साधना।**

प्रश्न—

(१) विहार का नाम विहार क्यों पड़ा ?

(२) अर्थ लिखते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग करो—

कूट कूट कर भरी थी, छुटकारा दे सकना, आँखें खुलना, द्वार खोलना।

(३) बुद्ध क्यों विरक्त हुए, और उन्होंने अपना क्या मत निश्चित किया ?

(४) इनसे क्या समझते हो—

भिक्षु, विहार, मठ, मोक्ष, गया।

---

पाठ ३३

## नन्दिनी

( १ )

महाराज दिलीप अयोध्या के नरेश थे। उनकी रानी का नाम सुदक्षिणा था। एक बार पुत्र की इच्छा से दोनों अपने गुरु वशिष्ठजी के आश्रम को गए। वशिष्ठजी ने उन्हें बतलाया कि कामधेनु

के शाप के कारण राजा के पुत्र नहीं होता। इन्होंने एक उपाय बतलाया। वशिष्ठजी की गाय का नाम नन्दिनी था। वह कामधेनु की बेटी थी। उन्होंने राजा से कहा कि तुम नन्दिनी की सेवा किया करो। प्रसन्न होने पर नन्दिनी तुम्हारी इच्छा पूरी कर देगी। राजा ने अपने गुरु की बात मान ली। उस दिन से राजा रानी आश्रम में ही रहने लगे।

दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही राजा उठ बैठे। नन्दिनी ने अपने बछड़े को दूध पिलाया। फिर राजा ने बछड़े को अलग बाँधकर यज्ञ के लिये दूध दुहा। इसके बाद सुदक्षिणा ने नन्दिनी की पूजा की और राजा ने उसको, वन में जाकर चरने के लिये, खूँटे से खोल दिया।

वन में, गाय जहाँ मन में आया वहाँ बे-रोक-टोक चरने लगी। राजा उसको अच्छी अच्छी घास खिलाते। उसका बदन सुहलाते और उसके ऊपर बैठी हुई मक्खियों को उड़ाते। संध्या के समय कामधेनु वशिष्ठ के आश्रम की ओर लौटी। राजा भी धीरे धीरे उसके पीछे चलने लगे।

जिस समय नन्दिनी आश्रम के पास पहुँची उस समय रानी ने आगे बढ़कर उसका स्वागत किया। वैसे तो वह रँभाकर बछड़े के पास दौड़ जाती थी, पर आज वन

राजा विराट और सिंह की बातचीत

इस पर राजा ने सिंह से कहा—मैं कदापि आश्रम को नहीं लौट सकता। जो वस्तु रक्षा के लिए मुझे सौंपी गई है, उसकी रक्षा करना मेरा मुख्य कर्तव्य है। मैं क्षत्रिय हूँ। चाहे प्राण चले जायें, पर मैं उसकी रक्षा से मुख नहीं मोड़ सकता। मेरी तुमसे एक प्रार्थना है। यदि तुमको अपनी भूख ही बुझाना है, तो तुम इस गाय के बदले मुझे खा लो; इसको मत मारो।

यह सुनकर सिंह मुसकराने लगा। उसने कहा—राजन ! तुम भूल करते हो। यहाँ प्राणों की भेंट चढ़ानी व्यर्थ है। इस समय इस गाय की रक्षा करना तुम्हारे वश की बात नहीं है। यदि ईश्वर को इसकी रक्षा करनी होती तो वह कदापि इसे इस गुफा की ओर न आने देता। तुम सारी पृथ्वी के राजा हो। यदि तुम जीवित रहोगे तो करोड़ों नर-नारियों का उपकार कर सकोगे। यदि तुम्हें गुरु वशिष्ठ का भय हो तो तुम उनको अन्य गायें देकर प्रसन्न कर सकते हो। तुम्हारी मृत्यु से संसार की बड़ी हानि होगी। इसलिये तुम इस विचार को छोड़ दो और आश्रम को लौट जाओ।

राजा ने फिर सिंह से कहा—क्षत्रियों के लिये यश और कर्तव्य सबसे बड़ी वस्तुएं हैं। इसलिये मैं तुमसे

विनय करता हूँ कि तुम इस गाय को छोड़ दो और उसके बदले मुझे खा लो।

( ३ )

जब सिंह ने देखा कि राजा किसी प्रकार न मानेगा, तब उसने कहा अच्छा, आगे बढ़ो। सिंह के मुँह से यह बात निकलते ही राजा का चिपका हुआ हाथ छूट गया। राजा ने बड़ी प्रसन्नता से धनुष-बाण एक ओर फेंक दिया और आगे बढ़कर बैठ गए जिसमें सिंह उनको खा जाय। वे इसी आशा में बैठे थे कि सिंह उनके ऊपर झपटे पर देखते क्या हैं कि ऊपर से फूलों की वर्षा हो रही है और कोई उनसे कह रहा है—बेटा, उठ। राजा को बड़ा अचम्भा हुआ। वे विस्मय से चारों ओर देखने लगे। न तो वहाँ सिंह था और न कोई प्राणी। केवल वही नन्दिनी वहाँ खड़ी थी। राजा को चकित देखकर गाय ने कहा—राजन! वास्तव में यहाँ कोई सिंह नहीं था। ` ही तुम्हारी परीक्षा लेने के लिये यह सब खेल रचा था। मुझे निश्चय हो गया कि तुम अपने गुरु के सच्चे भक्त और मुझमें तुम्हारी अटल श्रद्धा है। मै तुमसे बहुत हूँ। तुमको जो वर माँगना हो माँगो। मै प्रसन्नता- तुम्हें वरदान दूँगी। मै कामधेनु की पुत्री हूँ

इसलिये जो तुम मांगोगे: उसे मै सहज ही मे दे सकता हूँ।

नन्दिनी को प्रसन्न देख राजा ने हाथ जोड़कर यह वर मांगा कि सुदक्षिणा की कोख से मेरे एक ऐसा पुत्र उत्पन्न हो जिससे मेरे वंश का यश बढ़े।

नन्दिनी ने कहा—राजन ! ऐसा ही होगा। तुम पत्तों के दोने में मेरा दूध दुहकर पी लो। अवश्य ही तुम्हारे पुत्र उत्पन्न होगा।

राजा ने कहा—माता ! जब आश्रम में बछड़ा पेट भर दूध पी लेगा और गुरुजी के यज्ञ के लिये दूध ले लिया जायगा, तब बचा हुआ दूध मै पी लूंगा।

इसके बाद कामधेनु धीरे धीरे आश्रम की ओर चल पड़ी। गुरु वशिष्ठ ने राजा को देखते ही जान लिया कि आज राजा का मनोरथ पूरा हो गया। तुरन्त ही राजा ने स्वयं गुरु और रानी को वरदान की प्राप्ति का हाल सुनाया। सारे आश्रम में आनन्द छा गया। धर्मात्मा राजा के आनन्द में सबने आनन्द मनाया। यथासमय राजा रानी को एक सुन्दर पुत्र प्राप्त हुआ।

कठिन शब्द—

स्वागत, शुभलक्षण, जीवजन्तु, तरकश, विस्मय, अटल श्रद्धा, यथावसर, कदापि, मनोरथ।

भड़क उठा। उसने आज्ञा दी—मैहमाशाह को तुरन्त शूली पर चढ़ा दो।

मैहमाशाह जान लेकर भागा, और रणथम्भोर के किले में पहुँचा। यह किला राजपूताने में है और बड़ी मजबूती से बनाया गया है। उस पर चाहे जैसा बलवान दुश्मन क्यों न हमला करे, उसे आसानी से नहीं जीत सकता। उन दिनों इस किले का स्वामी हमीर राव नामक एक राजपूत राजा था। वह बड़ा ही बहादुर था, यहाँ तक कि वह मृत्यु से भी लड़ने को तैयार रहता था। मैहमाशाह ने उसे अपना हाल सुनाया, और कहा—अब तो मैं आपकी शरण में हूँ, आप चाहे मुझे मारें, चाहे बचाएं।

मैहमाशाह की बातें सुनकर हमीर ने उसे जवाब दिया—मीर साहब, जब तक आपका जी चाहे, आप मेरे पास आनन्द से रहें। जब तक आप मेरे पास रहेंगे तब तक कोई आपका कुछ न बिगाड़ सकेगा।

मैहमाशाह के भाग जाने से अलाउद्दीन यों ही क्रोधित था। जब उसने सुना कि हमीर ने मेरे अपराधी को अपने पास रख लिया है, तब तो मारे क्रोध के वह जल उठा। उसने तुरन्त हमीर के पास एक दूत भेजा। दूत ने हमीर कहा—महाराज, आप बादशाह के अपराधी को अपने

पास रख लिया, यह बहुत बुरा किया। इसका फल अच्छा न होगा।

हमीर ने मुसकरा कर दूत को उत्तर दिया—मैंने जो कुछ किया है, उसके लिये मुझे कोई चिन्ता नहीं है। जब मैंने मेहमाशाह को शरण दी है, तब आप यह आशा न करें कि बादशाह उसे मुझसे पा सकेंगे। यदि मेहमाशाह की रक्षा करने में मुझे अपना और अपने सब राजपूत सिपाहियों का भी बलिदान करना पड़ेगा, तो भी कोई चिन्ता की बात नहीं। आप जाकर अपने बादशाह से कह दीजिए कि अब वह मेहमाशाह को पाने की आशा छोड़ दें।

दूत के मुँह से हमीर की बातें सुनकर बादशाह के क्रोध की सीमा न रही। वह तुरन्त एक बहुत बड़ी फौज लेकर दिल्ली से रणथम्भोर की ओर चल पड़ा। थोड़े ही दिनों में वह टिड्डी-दल रणथम्भोर पहुँच गया और उसने चारों ओर से किले को घेर लिया। कहते हैं कि बादशाही फौज लगभग दस मील तक फैली हुई थी। रणथम्भोर पहुँचकर बादशाह ने एक बार फिर हमीर से अपने अपराधी को माँगा। उसने सोचा था कि मेरा इतना बल देखकर हमीर डर जायगा और मेहमाशाह को लेकर मेरे पास दौड़ा आयगा। पर हमीर की छाती लोहे की थी। बादशाह की

आप अपना सर्वनाश न कीजिए. मुझे बादशाह के हवाले कर दीजिए और उससे संधि कर लीजिए। हमीर ने तेवरी बदल कर मेहमाशाह को जवाब दिया—मीर साहब, अब कभी मेरे सामने ऐसी बात न कहना। मैं राजपूत हूँ। मैंने तुम्हें शरण दी है। मेरे रहते बादशाह तुम्हें नहीं पा सकता।

दूसरे दिन किले में एक बहुत बड़ी चिता बनाई गई। उस पर घी. राल आदि जलनेवाले पदार्थ डाले गए। फिर हमीर की रानी ने उसमें आग लगा दी। चिता धू-धू करके जल उठी। उसकी भयङ्कर लपटें आकाश को छूने लगी। हमीर की रानी आगे थीं. और उनके पीछे दूसरी राजपूत-देवियाँ खड़ी हुई थीं। पहले हमीर की रानी ने चिता में प्रवेश किया। इसके बाद एक-एक करके सब राजपूत-देवियाँ चिता में कूद गई।

राजपूत लोग पत्थर की छाती करके वह भयङ्कर दृश्य देखते रहे। जब एक भी देवी चिता के बाहर न रही. तब हमीर पागल की नाईं बोला—सब समाप्त हो गया। अब चलो. हम भी युद्ध की आग में कूद पड़ें और समाप्त हो जाएँ।

सब लोगों ने केसरिया कपड़े पहने. माथे पर केसर के तिलक लगाए. और हथियारों से लैस होकर सब आपस

## पाठ ३६

# गोशाला

( १ )

जबलपुर में एक वृद्ध सज्जन रहते थे। उनका नाम
पं० गंगाप्रसाद अग्निहोत्री था। अभी थोड़े ही दिन हुए
उनका स्वर्गवास हुआ है। वे गो-सेवा के बड़े पक्षपाती थे।
उन महाशय ने इस विषय पर देश और परदेश की गोपालन-
विधि का अध्ययन किया था। उन्होंने एक सभा में इस
विषय पर व्याख्यान दिया था। उसका भाव यह था :—

हम सब आरोग्य और प्रसन्न रहना चाहते हैं। आरोग्य
रहने के लिये हमें हृष्ट-पुष्ट रहना चाहिए। हृष्ट-पुष्ट शरीर
पर रोग आक्रमण नहीं कर पाते। हृष्ट-पुष्ट रहने के लिये
हमें अच्छा घर, अच्छा भोजन और दूध घी चाहिए। हमारी
मिठाइयों में खोवा, घी पड़ता है। हम दही, मही, रबड़ी,
मलाई खाते हैं। ये पदार्थ हमें कहाँ से प्राप्त होते हैं? दूध,
दही, मलाई, रबड़ी, खोवा, घी, हमें गाय के दूध से प्राप्त
होते हैं। हमारी मिठाई में शक्कर पड़ती है। वह शक्कर ईख या
गन्ने से प्राप्त होती है। गन्ने खेत में होते हैं। खेत में हल
चलाने के लिये, खेती को सींचने के लिये और कुएँ से
पानी निकालने के लिये हमें बैलों अर्थात गो-वंश की

सहायता लेनी पड़ती है। हमारे भोजन के अन्न भी खेत ही से प्राप्त होते हैं। वहाँ भी हल चलाने और खेत सींचने के लिये उसी गो-वंश के बैलों की आवश्यकता पड़ती है। हमें अपना शरीर ढाँकने के लिये वस्त्र की आवश्यकता होती है। वस्त्र का सूत रुई से बनता है। रुई हमे खेत से प्राप्त होती है। इसमें भी हमे गो-वश की सहायता आवश्यक होती है।

हमारा भोजन या अन्न पकाया जाता है। उसके लिये गोबर के कण्डे ईंधन का काम देते है। हमारा गोबर से लीपा घर स्वच्छ और सुथरा रहता है। गोबर शीघ्र सूख जाता है और सूखने पर किसी प्रकार की दुर्गन्ध नहीं आती। हमारे पहिनने के जूते और कुएँ से पानी खींचने के मोट भी गाय के चर्म से बनते है।

इस प्रकार ध्यान करने से जान पड़ता है कि हम लोग गो-वंश की ही सहायता से हृष्ट-पुष्ट, आरोग्य और सुखी हैं। यदि उनकी सहायता न हो तो बकरी के हलके और भैंस के भारी तथा वादी करनेवाले दूध से काम चलना कठिन हो जाय। इस प्रकार यदि हमें गो-वश की सहायता न मिले तो हमारी दशा इतनी अच्छी न रहे जितनी कि वह अभी है।

( २ )

जिससे हमारा काम निकलता है उसे हम आदर देते हैं। अपने घर द्वार आदि को स्वच्छ

रखते हैं। जिस गो-वंश से हमें इतनी सहायता मिलती है उसके लिये हम क्या करते हैं ? जब वह चरकर लौटती है तब किसी गन्दे और सीडवाले घर में बाँध देते हैं। वहाँ उसका मूत्र, गोबर सड़ता है; मच्छड़-डाँस फैले रहते हैं; भूमि भी गीली तथा ऊबड़-खाबड़ रहती है। उसके खाने के लिये हम सूखा पयाल, भूसा या थोड़ी सी कड़वी डाल देते हैं। उसे रात में प्यास लगती होगी, मच्छड़-डाँस काटते होंगे, गीली भूमि अप्रिय लगती होगी, इस पर कभी हम ध्यान नहीं देते।

उसे हम खली, कराई (दाल की भूसी), तभी तक देते हैं जब तक वह दूध देती रहती है। इसका प्रयोजन यही रहता है कि वह दूध अधिक दे। यह भोजन में रुचि बढ़ाने या स्वाद के लिये उसे नहीं दी जाती। क्या यह उचित है ? क्या हम गाय, बैल को कभी नमक या बिनौला देते हैं ? क्या उनकी शरीर-रक्षा तथा स्वास्थ्य के लिये भोजन के साथ नमक की आवश्यकता न होती होगी ?

श्रीकृष्णचन्द्र हमारे भगवान के अवतार थे। उन्होंने गोपालों के साथ रह कर, गोपाल कहा कर, हम लोगों को गोपालन की शिक्षा दी है। भगवान होते हुए भी गोपाल कहाने में उन्हें लज्जा नहीं लगी। उन्होंने गोवर्धन गिरि की पूजा करवाई। इसीलिये न, कि गोवर्धन गिरि

से अच्छी अच्छी घास और स्वादिष्ठ भोजन गौओं को मिला करती थी। अब गोवर्धन की पूजा तो दूर रही ग्रामों की गोचर-भूमि भी छीन कर जोत ली जाती है।

न तो हम भगवान की शिक्षा मानते हैं और न यह सोचते हैं कि गो-वंश के ह्रास से हमे क्या हानि पहुँचेगी। क्या हमारी यह उदासीनता अपने पैर में कुल्हाड़ी मारने के समान हानि पहुँचानेवाली न होगी।

( ३ )

यूरोपियन और अमरीकन जातियाँ गो-वंश को हमारे समान, देवतातुल्य नही मानतीं। वे केवल उनकी उपयोगिता पर ध्यान देती हैं अर्थात उन्हें दूध और दूध से लभ्य पदार्थों के लिये पालती हैं। परन्तु उनकी गो-वंश की सेवा आदर्श सेवा है। उनकी गो-शालाएँ, जिन्हें वे डेयरी कहते है, जाकर देखिए तब विदित होगा और आश्चर्य होगा कि वे गो-वंश के सुख-दुख का कितना ध्यान रखते हैं।

उनकी डेयरी की भूमि पक्की रहती है। ढाल के फर्श पर गिरा मूत्र या जल शीघ्र ही बहकर [illegible] मे चला जाता है और फर्श सूखा ही रहता है।

गोबर करते ही तुरन्त हटा दिया जाता है। उनको चरनी
और खड़े होने की भूमि नित्य धोई जाती है। उनके रहने
की परदों में तार की जाली लगी रहती है ताकि मच्छड़
तथा डांस न आ पावें। वहाँ सांड़ भी नहीं रहती।
उन्हें भोजन वही दिया जाता है जो कि उन्हें रुचेः जिससे
वे पुष्ट हों और दूध अधिक दें। भोजन और जल नियत
समयों पर कई बार दिया जाता है। नमक के ढोंके रख
दिये जाते हैं ताकि वे इच्छानुसार नमक चाट सकें। गौओं
के बच्चों को भी वे सुख से रखते हैं। भोजन भी अच्छा
देते हैं ताकि वे अभी से पुष्ट हो समय आने पर खूब दूध
दें। डेयरी की प्रत्येक गाय प्रतिदिन ६ सेर से कम दूध नहीं
देती। कोई कोई दुधार धेनु तो एक जून में १६ सेर तक
दूध देती है। यदि ठीक भोजन दिया जाए और सुख से
रक्खी जाएँ, तो गायें क्यों न मनमाना दूध दें। सारांश यह
है कि डेयरी में सब प्रकार से गो-वत्स को सुखी बनाने की
चेष्टा की जाती है जिससे दूध अधिक और स्वच्छ मिले।
दूध स्वच्छ बरतनों में दुहा जाता है और स्वच्छ बोतलों में
भर कर तुरन्त घर घर पहुँचा दिया जाता है।

खेती में काम करनेवाले बैल भी इसी प्रकार से सुखी
और संतुष्ट रक्खे जाएँ तो उनसे बहुत अधिक लाभ हो
सकता है।

सत्य-संध प्रभु वध कर एही ।
आनहु चर्म कहति वैदेही ॥

तब रघुपति जानत सब कारन ।
उठे हरषि सुरकाज सवारन ॥
मृग विलोकि कटि परिकर बाँधा ।
करतल चाप रुचिर सर साँधा ॥

प्रभु लछमनहि कहा समुझाई ।
फिरत विपिन निसिचर बहु भाई ॥
सीता केरि करेहु रखवारी ।
बुधि विवेकु बलु समय विचारी ॥

प्रभुहिं विलोकि चला मृग भाजी ।
धाये रामु सरासनु साजी ॥
निगम नेति सिव ध्यान न पावा ।
माया मृग पाछे सो धावा ॥

कबहुँ निकट पुनि दूरि पराई ।
कबहुँक प्रगटइ कबहुँ छिपाई ॥
प्रगटत दुरत करत छल भूरी ।
एहि विधि प्रभुहिं गयेउ लइ दूरी ॥

तब तकि राम कठिन सर मारा ।
धरनि परेउ करि घोर चिकारा ॥

लछिमन कै प्रथमहि लै नामा।
पाछे सुमिरेसि मन महुँ रामा॥
प्रान तजत प्रगटेसि निजु देहा।
सुमिरेसि रामु समेत सनेहा॥
अंतर प्रेमु तासु पहिचाना।
मुनि दुर्लभ गति दीन्हि सुजाना॥

दोहा—विपुल सुमन सुर वरषहिं गावहिं प्रभु-गुन-गाथ।
निजपद दीन्ह असुर कहँ दीनवन्धु रघुनाथ॥

खल वधि तुरत फिरे रघुवीरा।
सोह चाप कर कटि तूणीरा॥
आरत-गिरा सुनी जब सीता।
कह लछिमन सन परम सभीता॥
जाहु वेगि संकट तव भ्राता।
लछिमन विहँसि कहा सुनु माता॥
भ्रुकुटि विलास सृष्टि लय होई।
सपनेहुँ संकट परइ कि सोई॥
मरम वचन जब सीता वोली।
हरि प्रेरित लछिमन मति डोली॥
वन-दिसि-देव सौंपि सब काहू।
चले जहाँ रावन-ससि-राहू॥

सून बीच दसकंधर देखा।
आवा निकट जती के भेखा॥
जाके डर सुर असुर डेराहीं।
निसि न नींद दिन अन्न न खाहीं॥
सो दससीस स्वान की नाईं।
इत उत चितइ चला भड़ियाई॥
जिमि कुपंथ पग देत खगेसा।
रह न तेज तन बुधि लवलेसा॥
नाना विधि कहि कथा सुहाई।
राजनीति भय प्रीति देखाई॥
कह सीता सुनु जती गोसाईं।
बोलेहु बचन दुष्ट की नाईं॥
तब रावन निज रूप देखावा।
भई सभय जब नाम सुनावा॥
कह सीता धरि धीरज गाढ़ा।
आइ गयेउ प्रभु खल रहु ठाढ़ा॥
जिमि हरिबधुहि छुद्र सस चाहा।
भयेसि काल बस निसिचर नाहा॥
सुनत बचन दससीस लजाना।
मन महुँ चरन बंदि सुख माना॥

वर्ष पूर्व राज्य-सिंहासन पर बैठा। इसके पश्चात आठ वर्ष तक वह अपना समय शिकार आदि मनोरंजक बातों में ही व्यतीत करता रहा। नवें साल में उसने कलिंग-राज्य पर चढ़ाई की। हिन्दुस्तान के जिस प्रान्त को अब उत्तरी सरकार कहते हैं और जो बंगाल की खाड़ी के किनारे है, वही उस समय कलिंग-राज्य कहलाता था। चन्द्रगुप्त का अधिकार बंगाल देश पर तो हो गया था, परन्तु कलिंग-राज्य स्वतंत्र था। अशोक ने उस पर भी अपना अधिकार कर लिया। युद्ध में कलिंग-देशवालों की हार हुई और अशोक की जीत।

इस युद्ध में कोई डेढ़ लाख मनुष्य कैद किए गए, एक लाख मारे गए, और इससे भी अधिक मनुष्य युद्ध से उत्पन्न होनेवाली आपत्तियों और दुःखों से नष्ट हुए। उन घायलों की दशा को देखकर अशोक के हृदय में बड़ी दया उत्पन्न हुई। परिणाम यह हुआ कि अशोक ने बौद्धमत की दीक्षा ले ली। इसके पश्चात उसने दूसरों से युद्ध करके उनके देशों को जीतना छोड़ दिया और वह धर्मोपदेशों के द्वारा मनुष्यों के मनों पर अच्छे प्रभावों के डालने की चेष्टा करने लगा। अपना सारा समय उसने बौद्ध-धर्म के ही प्रचार में लगा दिया, और अन्त में राज्य छोड़कर बौद्ध साधु बन बैठा।

उसने अपने राज्य में, स्थान स्थान पर धर्मसम्बन्धी आदेश लिखवा दिए। आदेश चट्टानों तथा पत्थर के खम्भों पर खुदवा दिए गए थे। उनमें से कितने ही आदेश तो अभी तक वैसे ही खुदे हुए मिलते है। उड़ीसा, मैसोर, पंजाब, बम्बई और दूसरे प्रान्तों में भी उसके आदेश मिले है। इससे प्रसिद्ध है कि इस सम्राट का राज्य पूरे भारतवर्ष पर था। केवल दक्षिणी भारत का ही एक छोटा सा भाग उसके बाहर रह गया था।

शिकार खेलना, यज्ञो मे पशुओं का मारना, एवं अन्य प्रकार से जीव-हिंसा करना, ये सब बातें राज्य भर में बन्द करा दी गई। यह देखने को कि उसकी आज्ञाओं का कैसा पालन होता है, उसने कितने ही गुप्तचर नियत कर दिए। सूबे के कर्मचारियों को आज्ञा दे दी गई कि वे मनुष्यों को धर्म का उपदेश करें। सड़कों के किनारे किनारे बरगद, आम आदि के वृक्ष लगवा दिए गए। कितने ही कुएँ बनवा दिए गए और बावलियाँ भी खुदवा दी गईं। स्थान स्थान पर यात्रियों के लिए धर्मशालाएँ और प्यासों के लिये पौसले भी बनवाए गए। दीन-दुखियों और रोगियों के लिये औषधालय खोले गए। उनमें सब प्रकार की औषधियाँ सबको बिना मूल्य मिलती थीं।

यद्यपि अशोक स्वयं बौद्ध हो गया था तथापि वह अन्य सभी धर्मों को बड़े आदर की दृष्टि से देखता था। उसकी आज्ञा थी कि कोई भी व्यक्ति किसी भी धर्म की कभी. कहीं. निन्दा न करे। उसके राज्य में प्रत्येक मनुष्य निडर होकर अपने धर्म का पालन कर सकता था। बौद्ध-धर्म फैलाने के लिये उसने अनेक देशों में उपदेशक भेजे थे। वे बड़ी बड़ी दूर पहुँच गए थे। सीरिया. मिस्र. यूनान. लंका अर्थात एशिया. अफ्रीका. योरप तीनों महाद्वीपों में वे पहुँच गए थे। जो उपदेशक-मंडली लंका गई थी उसका नेता. महाराज अशोक का पुत्र. महेन्द्र था। उसने दूर दूर तक मठ बनवा दिए थे। इस सम्राट ने धर्म के प्रचार करने में कोई प्रयत्न उठा न रक्खा। यह उसी के परिश्रम का फल था कि बौद्ध-धर्म संसार के अधिकांश देशों में फैल गया। उसने बौद्ध-धर्म की एक बड़ी सभा भी की।

सम्राट अशोक प्रतिवर्ष अपनी राजधानी. पाटलिपुत्र. में विद्वानों की एक सभा करता था और उनकी योग्यता के अनुसार उनको पारितोषिक देता था।

अशोक ने चालीस वर्ष तक राज्य किया। ईसवी सन से २३२ वर्ष पहले वह परलोक सिधारा। उससे अधिक प्रतापी. धार्मिक सम्राट कोई भी नहीं हुआ। न

कोई मुसलमान बादशाह उसके बराबर हुआ और न इतना बड़ा राज्य ही किसी और बादशाह को प्राप्त हुआ।

अशोक के शिला-लेख पाली भाषा में हैं। उनमें से एक लेख जो मैसोर की रियासत में एक चट्टान पर खुदा हुआ मिला है, उसमें लिखा है :—

माता-पिता की आज्ञा का पालन करो। जीव-रक्षा में तत्पर रहो। सदैव सत्य बोलो। इन नियमों का पालन करना ही धर्म-मार्ग पर चलना है। शिष्य को गुरु की पूजा करनी चाहिए। सबको अपने पड़ोसियों के साथ प्रेमपूर्वक बर्ताव करना चाहिए।

महाराज अशोक के आदेश बड़े उदार हैं। उनके अनुसार चलने से सब लोग सदाचारी बन सकते हैं।

इस सम्बन्ध में यह भी लिखना आवश्यक है कि जो स्तम्भ महाराज अशोक ने बाईस सौ वर्ष पहले स्थापित किए थे वे आज भी बहुत से स्थानों में खड़े हैं। उन पर की गई कारीगरी उच्च श्रेणी की है और देखते ही बनती है।

कठिन शब्द—

राज्यप्रतिनिधि, मनोरंजक, प्रभाव, धर्मोपदेश, धर्मसंबंधी, आदेश, जीव-हिंसा, कर्मचारी, गुप्तचर, मंडली, शिलालेख, स्थापित, उदार।

प्रश्न—

(१) अशोक ने बौद्ध-धर्म क्यों ग्रहण किया ?

(२) उसके मुख्य मुख्य आदेश क्या थे ?

---

पाठ ३९

# तुलसीदास

## दृश्य १

स्थान—[चित्रकूट, नदी से लगा हुआ मार्ग, एक पागल ब्राह्मण का प्रवेश]

ब्राह्मण—मैं निर्धन हूँ। तीन दिनों से भूखा मर रहा हूँ। कोई इतना भी नहीं पूछता कि इस ब्राह्मण को भोजन मिला या नहीं। अब तो नहीं सहा जाता। इस कष्ट और अपमान से तो मृत्यु ही अच्छी है।

[नदी के किनारे जाकर पागल ब्राह्मण मरने के लिये गले में पत्थर बाँधता है]

[तुलसीदास का प्रवेश]

तु०—[इधर उधर देखकर] अहा, कैसा रमणीक स्थान है। इधर यह कौन नहा रहा है ? अरे ! यह नहा

रहा है कि गले में पत्थर बांध रहा है ? [झपटकर ब्राह्मण को पकड़ लेना]

ब्राह्मण—मुझे छोड़ दो. छोड़ दो. नहीं तो ठीक न होगा।

तु०—ब्राह्मण देवता ! यह तुम्हें क्या सूझी है ? अपने प्राण क्यों दे रहे हो ? ऐसा करना घोर पाप है !

ब्रा०—परन्तु जिसको जीने में कोई सुख नहीं उसके लिये मरना कोई पाप नहीं है।

तु०— तुम क्यों प्राण देने पर उतारू हुए हो ?

ब्रा०—तुम जाओ। तुम मेरा दुख नहीं मिटा सकते।

तु०—तो सुनकर दो आँसू तो बहा सकता हूँ।

ब्रा०—इससे लाभ ?

तु०—लाभ हो या न हो। जब तक तुम मुझे अपना हाल न सुना दोगे तब तक मैं तुम्हें न छोड़ूंगा।

ब्रा०—(रोकर)

भूखे बच्चे बिललाते दिन रात हैं,
नहीं पूछते पास पड़ोसी बात हैं:
भीख नहीं मिलती है. और न काम है.
कैसे हो निर्वाह विधाता वाम है ?
रोती है ब्राह्मणी. दुःख पाती सदा,
अब यह संकट अधिक नहीं जाता सहा:

छोड़ो, छोड़ो ! मरने दो मुझको अभी,
मेरे मन को शान्ति मिल सकेगी तभी ।

तु०—ठहरो ! इतनी भूल न करो; तुम ब्राह्मण होकर निर्धनता से घबड़ाकर प्राण दे रहे हो !

ब्रा०—यह सीख बहुत भली है, पर जिसके पास खाने को भोजन और पहिनने को वस्त्र हो उसके लिये ।

तु०—[आप ही आप] ब्राह्मण बिना धन के न मानेगा [ब्रा० से] देखो, सुखीजनो से दुखीजन भगवान को अधिक प्यारे हैं ।

ब्रा०—हाँ, सच है; किन्तु मेरे पीछे तो गृहस्थी लगी है । क्या आप जानते नही कि 'भूखे भजन न होइ गुपाला' ।

तु०—अच्छा, तुम कितना धन चाहते हो ?

ब्रा०—जितने में हम सब सुख से जीवन बिता सकें और पड़ोसी लोग हमारी हँसी न उडा सकें ।

तु०—चार आने प्रतिदिन ?

ब्रा०—हाँ, कम से कम ।

तु०—अच्छा, चार आने प्रतिदिन हम तुम्हें देंगे पर तुम यह प्रतिज्ञा करो कि तुम हमारा काम सचाई से करोगे ।

ब्रा०—कौन काम ?

तु०—दिन रात भगवान रामचन्द्र का ध्यान करना।

ब्रा०—हाँ, करूँगा: यह क्या कठिन है !

तु०—[हँसकर] यही तो सबसे कठिन है—

दुख मे सुमिरन सब करैं, सुख में करै न कोय,
जो सुख में सुमिरन करै, दुख काहे को होय।

[पूजा की झोली में से एक डिबिया निकालकर देते हुए]

लो देवता, दिन भर भजन कर चुकने के बाद साँझ को इसमें से एक चवन्नी ले लिया करना। बीच में कभी इसे न खोलना, और इसका भेद भी किसी से न कहना, नहीं तो फिर कुछ न मिलेगा।

ब्रा०—[हाथ जोड़कर] महाराज, सचमुच आप कोई बड़े भारी महात्मा हैं, जो आपने ऐसे संकट में मेरी रक्षा की।

तु०—ऐसी प्रार्थना उस परमात्मा से करो जो संकट में रक्षा करता है।

ब्रा०—बहुत अच्छा महाराज। [प्रणाम करके जाता है]

दृश्य २

[तुलसीदास बैठे हुए स्तुति करते हैं। राम लक्ष्मण अहेरी के वेश में धनुष-बाण लिए वहाँ से निकल जाते हैं]

तु०—ओहो, इस तपोभूमि में भी लोग आखेट खेले विना नहीं रहते—कलियुग का ऐसा ही प्रताप है।

[हनुमानजी का आना, तुलसीदास का प्रणाम करना]

ह०—[हँसकर] कहो तुलसीदास—प्रभु का दर्शन हुआ ?

तु०—महाराज, कहाँ ?

ह०—क्या अभी नहीं हुआ ?

तु०—नही तो—

ह०—अभी यहाँ से कोई गया था ?

तु०—हाँ, दो अहेरी बालक।

ह०—वही तुम्हारे इष्टदेव राम-लक्ष्मण थे।

[हनुमानजी जाते हैं। तुलसीदासजी पछताने लगते हैं। इतने में कुछ शब्द सुनकर चोक उठते हैं]

तु० दा०—अहा, यह रामलीला के लिए रामदल निकल रहा है। चलूँ और इसे देखकर मन को संतोष दूँ।

[तुलसीदासजी जाते हैं]

दृश्य ३

[दो मनुष्यों का प्रवेश]

पहला—हाँ, क्या कहा ? उस ब्राह्मणी का पति जी उठा।

दूसरा—हाँ।

प०—किस प्रकार ?

दू०—वह उसकी रथी के साथ सती होने जा रही थी। मार्ग में उसे तुलसीदास नाम के साधु मिले जो अभी काशी से आए हैं। ब्राह्मणी ने उन्हें प्रणाम किया। उन्होंने आशीर्वाद दिया कि 'सौभाग्यवती हो।' लोगों ने कहा कि महाराज यह इसके पति की रथी है; यह तो सती होने जा रही है और आप कहते हैं कि सौभाग्यवती हो! उन्होंने अपने कमंडल में से थोड़ा सा जल उसके मुँह में डालकर, 'राम कहो', 'राम कहो' कहा तो वह राम राम कहता हुआ उठ बैठा।

प०—भला!

दू०—तो चलो, ऐसे महात्मा का दर्शन करना चाहिए।

प०—वे रहते कहाँ हैं ?

दू०—सन्त लोग कहाँ रहते हैं? बस, जहाँ मिल जायें वहीं रहते हैं।

[तुलसीदासजी का प्रवेश]

तु०—वाह, क्या अच्छी रामलीला हुई है। [दोनों से] विभीषण को राजतिलक देकर रामदल के अवध

नाटने की लीला यहां काशी में अच्छी होती है। तुमने देखी ?

प०—[न पहचान कर] ब्राह्मण देवता, क्या आज बहुत गहरा छाना है ? भला आजकल और रामलीला !

दू०—महाराज, तनिक सावधान रहा करो।

तु०—तो क्या तुम लोगों को मेरी बात का विश्वास नहीं है ?

दू०—विश्वास ! ह ह ह ह ! [हंसता है]

प०—ह ह ह ह ! [हंसता है]

तु०—चलो मैं अभी दिखा दूं।

दोनों—चलो। [जाते हैं]

## दृश्य ४

[हनुमानजी का प्रवेश]

ह०—धन्य है, तुलसीदास ! धन्य है ! वाल्मीकि के अवतार ! तुझे धन्य है, जो भगवान की तेरे ऊपर इतनी दया है ! अपने दर्शन के लिये ही भगवान ने तुझे वह लीला दिखलाई थी। और नहीं भला, आजकल और रामलीला !

[तुलसीदास का प्रवेश]

तु०—[प्रणाम करके] खेद है, मैं फिर भूला। हे

दयानिधान, मैंने फिर धोखा खाया। श्रीभगवान ने अपनी असीम कृपा से मुझे दर्शन दिए पर मुझ ढीठ ने उनके चरणों में गिरकर दंड प्रणाम भी न किया।—हा—

ह०—भक्तजी, पछताने की कोई बात नहीं। कलियुग में प्रत्यक्ष रूप से प्रभु का दर्शन पाना असंभव है। तुम बड़े भाग्यवान हो कि तुम्हें इस भाँति से दर्शन हो गया। जाओ, रघुनाथजी का सदा ध्यान रक्खो और उनका भजन करो।

तु०—बहुत अच्छा महाराज। [प्रणाम करके चले जाते हैं]

[पटाक्षेप]

कठिन शब्द—

**घोर पाप, शान्ति, सुमिरन, महात्मा, संकट, स्तुति, अहेरी, आखेट, कलियुग, प्रताप, इष्टदेव, रामदल, रथी, सती, सौभाग्यवती, सावधान, असीम, प्रत्यक्ष, असंभव।**

प्रश्न—

(१) आशय समझाओ 'गहरी घानी है'।
(२) वाल्मीकि का अवतार किन्हें कहा है? क्यों?
(३) तुलसीदास ने रामचन्द्रजी को दोनों बार क्यों न पहिचाना?

पाठ ४८

# विनय

प्रभु हो ऐसी तो न बिसारो।
कहत पुकार नाथ तुव रूठे कहुँ न निबाह हमारो।
जो हम बुरे होइ नहि चूकत नित हो करत बुराई।
तो फिर भले होइ तुम छाँडत काहे नाथ! भलाई।
जो बालक अरुझाइ खेल में जननी सुधि बिसरावै।
तो कछु माता ताहि कुपित ह्वै ता दिन दूध न प्यावै।
मात पिता गुरु स्वामी राजा जो न दया उर लावै।
तो शिशु सेवक प्रजा न कोइ विधि जग में निबहन पावैं।
दयानिधान कृपानिधि केशव करुणा भक्त-भय-हारी।
नाथ न्याव तजते ही बनि है हरीचन्द को बारी॥

कठिन शब्द—

**बिसारो, तुव, रूठे, अरुझाइ, कछु, कुपित, निबहन, भक्त-भय-हारी, तजते।**

प्रश्न—

(१) कवि क्या चाहता है?

(२) यदि माता, पिता, गुरु, स्वामी, राजा दया न करें तो क्या हो?

## डाकघर

गरमी की छुट्टी होने पर माधवलाल का विचार पचमढ़ी जाने का हुआ। उसने आवश्यक सामान बांध लिया। उनके भाई साधुशरण स्टेशन तक पहुँचाने गए। स्टेशन पहुँचने पर माधवलाल ने देखा कि वे सौ रुपये के नोट लाना भूल गए थे। उनके पास केवल २५) के नोट और चार रुपये थे। इतना रुपया उनकी यात्रा के लिये काफी न था। गाड़ी के आने का समय हो गया था। घर जाकर समय पर लौटना संभव न था। उन्होंने साधुशरण को अपने सन्दूक की कुंजी देकर कहा—मैं तो चलता हूँ। सौ रुपये डाक से भेज देना। माधवलाल ने पिपरिया का टिकट कटाया और रेलगाड़ी पर बैठ रवाना हो गया।

साधुशरण ने घर आकर एक सौ रुपये के नोट निकाले। उन्हें एक लिफाफे में रक्खा। फिर गोंद से उसे बन्द कर, सुई से छेद दो स्थानों पर तागे की गाँठी दे दी। उस पर लाख से अपनी मुहर भी लगा दी। फिर पता और रकम की तादाद लिख कर लिफाफा डाकघर ले गया। पोस्टमास्टर ने कहा कि इस पर

पैसे का टिकट लिफाफे के लिये, तीन आने के टिकट रजिस्ट्री के लिये और तीन आने के टिकट बीमा के लिये, अर्थात कुल सवा सात आने के टिकट लगा दीजिए। रजिस्ट्री कराने से चिट्ठी डाकद्वारा सावधानता से भेजी जायगी ताकि खो न जाए। यदि खो गई तो बीमे के तीन आने देने से डाकविभाग तुम्हें सौ रुपये भर देगा। टिकट लगा देने पर डाकबाबू ने उस पर नम्बर चढ़ा कर रजिस्टर पर लिख लिया और मुहर लगाकर एक रसीद दे दी।

उस रसीद को लेकर साधुशरण ने सावधानता से रख लिया। यदि वह लिफाफा न पहुँचता तो उसी रसीद का नम्बर लिखकर डाकखाने द्वारा उसका पता लगाया जा सकता था। पर डाकखानेवाले बीमा सावधानता से भेजते हैं जिससे उन्हें हानि न उठानी पड़े। जितना अधिक रुपया भेजा जाय उतनी ही अधिक बीमा की फीस देनी पड़ती है।

चौथे दिन बीमा के पहुँचने की रसीद भी आ गई। रसीद साधुशरण से पहले ही भरा ली गई थी। इसका अलग खर्च न देना पड़ा।

एक सप्ताह पश्चात माधवलाल का कार्ड आया। उसमें उन्होंने सौ रुपये के नोट पाने का समाचार

दिया था और लिखा था कि एक उनकी पुस्तक. जो वे ले जाना भूल गये थे, तथा उनकी दवा की शीशी भी डाक से भेज दी जाय। पुस्तक साधुशरण ने एक कागज में लपेटी, बंडल बनाया और उस पर पता लिख दिया। फिर एक आने का टिकट लगा उसे बुक पोस्ट द्वारा भेज दिया। यदि उसकी रजिस्टरी कराना चाहता तो तीन आने और लगते। वजन के हिसाब से बुक पोस्ट की दर घटती बढ़ती रहती है। दवाई की शीशी को साधुशरण ने एक डब्बे में बन्द कर उस पर पता लिखा और दो आने का टिकट लगा कर भेज दिया। इस प्रकार पदार्थों को भेजना पारसल करना कहलाता है। दवा की शीशी को भी यदि वह रजिस्ट्री से भेजना चाहता तो तीन आने और लगते। वजन के हिसाब से पार्सलों की भी दर घटती बढ़ती रहती है।

छुट्टी पूरी होते तक माधवलाल ने सब रुपये खर्च कर डाले और लौटने के खर्च के लिये २५) मनीआर्डर से मंगाये। साधुशरण ने डाकघर जाकर मनीआर्डर का फार्म लेकर भरा। उसमें भेजनेवाले तथा पानेवाले का नाम और पता लिखा। फिर अङ्क और अक्षरों में पचीस रुपये की रकम लिखी और मनीआर्डर फार्म डाक बाबू को दिया। अब मनीआर्डर फीस की 'पारी २.

[illegible]
लोगों पर पहुँचा देंगे। डाकखाने इनका दाम, पार्सल तथा
मनिऑर्डर का खर्च, और इसका कुल तथा मनी-आर्डर
का खर्च इनसे लेकर अपनी फीस भी ले लेंगे और
दुकानदार का रुपया उसके पास पहुँचा देंगे। इस प्रकार
के पार्सलों को वैल्यू पेबल पार्सल कहते हैं।

डाकखाने में हम रुपया भी जमा कर सकते हैं। यदि आवश्यकता हो तो प्रतिसप्ताह हम रुपये उठा भी सकते हैं। डाकखानों में वर्ष भर में ७५०) से अधिक जमा नहीं किया जाता। जमा की हुई रकम पर ३) रु० सैकड़ा प्रतिवर्ष ब्याज भी मिलता है। बहुत छोटे देहाती डाकघरों में रुपये जमा नहीं किए जाते।

आजकल कुछ अधिक पैसे लेकर वायुयान-द्वारा भी पत्रादि दूर दूर के देशों में भेजे जाने लगे हैं। इनका विवरण बड़े डाकघरों में जाना जा सकता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि डाकघरों से जनता को बड़ा सुभीता पहुँचता है।

कठिन शब्द—

**विदित, सावधानता, हस्ताक्षर, फीस।**

मोहनसिंह—बहुत दिन से गोदू को नहीं देखा है। वह हम लोगों की राह देखती होगी, हम न जाएँगे तो वह बहुत उदास होगी।

भागचन्द—हम लोग और किसी समय चलते तो अच्छा होता। इस समय चलने में तो बड़ा कष्ट है।

मोहनसिंह अब तो रेल निकल जाने से आवागमन बहुत सरल हो गया है। यदि तुम्हें बहँगी या डोली पर जाना पड़ता तो तुम्हारी क्या दशा होती?

भागचन्द—मैं तो कभी न जाता। अच्छा पिताजी, आवागमन के कौन कौन से उपाय हैं?

मोहनसिंह—आवागमन के अनेक उपाय हैं। कोई टट्टू या घोड़े पर चलता है, कोई बैलगाड़ी या घोड़ागाड़ी पर चलता है। कुछ देश ऐसे हैं जहाँ गधे की सवारी में अनादर नहीं माना जाता। मरुस्थलों में ऊँट की सवारी की जाती है। पर्वतीय प्रदेशों में बकरे, खच्चर और सुरागाय बोझा ढोने के काम में लाए जाते हैं। नदी या नहर हो तो नाव से काम लिया जा सकता है। नावें डाँड से खेई जाती हैं या पाल बाँधकर वायु की सहायता से चलती हैं। परन्तु बड़ी नावें अथवा जहाज इसी प्रकार भाप के द्वारा चलाई जाती हैं। जैसे रेल।

वायुयान या हवाई जहाज

भागचन्द्—आपने मेरी साइकिल का नाम ही न लिया।

मोहनसिंह—नदी नाले उतरने चढ़ने की कठिनाई पर तुमने बात उठाई थी। इसलिये मैंने साइकिल का नाम नहीं लिया। साइकिल नदी-नालों और पहाड़ों पर नहीं उतर चढ़ सकती। ऐसे स्थानों में साइकिल तुम्हें न ले जायगी, बल्कि तुम्हें ही उसे ढोना पड़ेगा। हाँ, जहाँ घोड़ा-गाड़ी, तांगा, एक्का, बग्घी, फिटन जा सकें वहाँ साइकिल भी जा सकती है। परन्तु अब गाड़ी-तांगों का वह मान न रहा। उनका स्थान मोटरकार और मोटर लारियों ने ले लिया है। जिन सड़कों पर तांगे-बग्घियाँ चल सकती हैं उन पर मोटरें भी चल सकती हैं। मोटरें रेल के बराबर बल्कि उससे भी अधिक तेज दौड़ सकती है। इसलिये उनका प्रचार बढ़ता जाता है। परन्तु मोटरों के लिये अच्छी सड़क होना आवश्यक है। अब एक ऐसी सवारी निकली है जो मोटर, रेल, सभी से तेज चलती है और उसे न सड़क की आवश्यकता है, न पटरी की। इसका नाम वायुयान या हवाई जहाज है। वह मोटर की तरह पेट्रोल से चलता है। सम्भव है कि कुछ ही दिनों में हवाई जहाज का प्रचार भी इतना ही बढ़ जाय जितना आजकल रेलगाड़ी या मोटरों का है

भागचन्द—जब लोग नदी पहाडों पर साइकिल, मोटर आदि का उपयोग ही नही कर सकते तब वे उन्हें खरीदते ही क्यों हैं ?

मोहनसिंह—उपयोग क्यों नही कर सकते ? सड़क और पुल बन जाने पर ये सवारियाँ पहाड़ पर चढ सकती और नदी पार कर सकती है। सड़कों में धीरे धीरे उतार चढाव रक्खा जाता है। नालों और नदियों पर पुल बनाने में व्यय अवश्य अधिक पडता है परन्तु एक बार पुल बन जाने पर बहुत दिनों के लिये सुभीता हो जाता है। अभी जबलपुर मे नर्मदा नदी के तिलवारे घाट पर पुल बनाया गया है। अब बरसात में भी मोटरें उस पुल पर से नदी पार कर लिया करेंगी।

भागचन्द—क्या रेल की सडक में भी उतार चढ़ाव होता है ?

मोहनसिंह—हां, रेल की सड़क का उतार चढ़ाव बहुत क्रमपूर्वक होता है, इसलिये तुम्हें ज्ञान नही पडता। वैसे ही जब रेलगाडी टेढी मेढी सडक पर घूमती है तब भी तुम्हें मोड़ नहीं जान पड़ता।

भागचन्द—जान क्यों नहीं पड़ता ? कहीं कहीं डब्बे की खिडकियों से देखने से आगे पीछे के सब डब्बे दिखने लगते हैं। वही तो मोड़ है न ?

मोहनसिंह—हाँ। एक बात और जानने योग्य है। यदि हम गोंदिया से गाड़ी बदलकर नागपुर न आ डोंगरगढ़ की ओर चले जाते तो रेल की सड़क पर एक बोगदा देखने को मिलता। वहाँ पहाड़ फोड़कर सुरङ्ग बनाई गई है। गाड़ी उसके भीतर से होकर जाती है। जब गाड़ी बोगदे के भीतर प्रवेश करती है तब उसमें अँधेरा छा जाता है। अपना हाथ फैलाओ तो वह भी नहीं दिखाता। पर गाड़ी वेग से भागती हुई मिनट दो मिनट में सुरङ्ग पार कर जाती है। जहाँ दूर दूर तक बोगदों के भीतर से रेल की सड़क जाती है, वहाँ बोगदों के भीतर प्रकाश का प्रबन्ध भी रहता है।

इतने में नागपुर से गाड़ी आ गई। यात्री उतरने लगे। तब ये लोग उस गाड़ी में बैठकर नागपुर चले गए।

कठिन शब्द—

**आवागमन, साधन, अनादर, मरुस्थल, वायुयान, प्रचार, क्रमपूर्वक, बोगदा, सुरङ्ग।**

प्रश्न—

(१) भाप के द्वारा कौन कौन यान चलाए जाते हैं?

(२) बोगदा किसे कहते हैं?

(३) मोटर और वायुयान क्यों दिनों दिन बढ़ रहे हैं?

---

पाठ ४३

## बाल-लीला

( १ )

मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी।
किती बार मोहिं दूध पिअत भई यह अजहूँ है छोटी।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यों ह्वै है लाँबी मोटी॥
काढ़त गुहत अन्हावत ओंछत नागिन सी भ्वैं लोटी।
काचो दूध पिआवत पचि पचि देत न माखन रोटी॥
सूर श्याम चिर जीवो दोऊ हरि हलधर की जोटी॥

( २ )

मैया हौं न चरैहों गाय।
सिगरे ग्वाल घिरावत मोसों, मेरे पायँ पिराय।
जो न पत्याहि पूछ बलदाउहिँ, अपनी सौंह दिवाय।
यह सुनि सुनि जसुमति ग्वालन को गारी देत रिसाय॥
मैं पठवति अपने लरिका कों, आवै मन बहराय।
सूर श्याम मेरो अति बालक, मारत ताहि रिंगाय॥

कठिन शब्द—

**बेनी, अन्हावत, ओंछत, भ्वैं, पचि पचि, जोटी, घिरावत, पत्याहि, सौंह, बहराय, रिंगाय।**

प्रश्न—

(१) पहले पद्य में कृष्णजी क्या कहते हैं ?
(२) कृष्ण को यशोदा क्यों वन भेजती है ?

---

पाठ ४४

## मेवाड़ का सिंह

उदयपुर के राना प्रतापसिंह के स्वर्गवास को चार सौ वर्ष हो गये; परन्तु उनके जीवन का पवित्र चरित राजपूतों के हृदय में नया ही बना है। उनकी वीरता, देश-प्रीति, और दृढ़ता का स्मरण करके क्षत्रियों को क्रोध भी आता है, आनन्द भी होता है, और उनकी आँखों से आँसू भी निकलने लगते हैं।

प्रतापसिंह के पहले मेवाड़ में जितने राना हो गए हैं, उनकी राजधानी चित्तौर थी। उनके पिता राना उदयसिंह के समय में अकबर बादशाह ने चित्तौर पर चढ़ाई करके उसे अपने अधिकार में कर लिया था। इस लड़ाई में कई हजार राजपूत मारे गए थे और चित्तौर छोड़ कर उदयसिंह को अरवली पहाड़ के जङ्गलों में जाकर रहना पड़ा था। वहाँ उन्होंने, अपने नाम पर, [illegible]

बसाया था। ४२ वर्ष की अवस्था में उदयसिंह ने शरीर छोड़ा, और पिता के मरने पर प्रतापसिंह को राजगद्दी मिली।

चित्तौर छिन जाने के साथ ही राना उदयसिंह का प्रायः पूरा देश भी छिन गया था। केवल दो एक पहाड़ी किले, और उदयपुर के आस-पास की थोड़ी सी बची हुई भूमि का अधिकार ही प्रतापसिंह को मिला। प्रतापसिंह को अपने पूर्वजों का राज्य छिन जाने का बड़ा दुख था। वे उसे फिर से प्राप्त करने के उद्योग में सदा लगे रहते थे। परन्तु राजपूताने के अन्य राजा अकबर से मिल गये थे; इसलिए प्रतापसिंह अपनी इच्छा पूरी नहीं कर सके। चित्तौर का राज्य फिर मिलना तो दूर रहा, जो कुछ प्रतापसिंह के अधिकार में था, वह भी उनके हाथ से थोड़े ही दिनों में जाता रहा। इसका कारण यह था—

उस समय जयपुर के राजा मानसिंह अकबर बादशाह के सेनापतियों में से एक प्रसिद्ध सेनापति थे। एक बार दक्षिण से लौटते समय, प्रतापसिंह से मिलने के लिये वे उदयपुर में ठहरे। जब राजा मानसिंह के भोजन का समय आया तो राना प्रतापसिंह ने स्वयं साथ न बैठकर अपने लड़के को भेज दिया। मानसिंह से यह अपमान सहा न गया। उसका बदला लेने के लिये दिल्ली से

एक बड़ी भारी मुगल सेना लेकर उन्होंने प्रतापसिंह पर चढ़ाई कर दी। प्रतापसिंह ने भी बाईस सौ वीर राजपूतों को इकट्ठा करके हल्दीघाटी में मुगल सेना का सामना किया। इस लड़ाई में राजपूतों ने बड़ी वीरता दिखाई; परन्तु अन्त में मानसिंह की जीत हुई। कोई चौदह सौ राजपूतों के रुधिर से हल्दीघाटी लाल हो गई। यह लड़ाई सन् १५७६ ई० के श्रावण महीने में हुई थी।

युद्ध के अन्त में महाराणा प्रताप अपने चेतक नामी घोड़े पर सवार, एक ओर चल पड़े। उन्हें जाते देख दो मुगल सर्दारों ने उनका पीछा किया, परन्तु उनका घोड़ा चेतक बड़ा बहादुर और तेज था। वह उस समय घायल हो गया था; तथापि छोटी-मोटी नदियाँ और नाले पार कर उसने प्रतापसिंह की रक्षा की। जब वह प्रतापसिंह को दूर ले गया, और पीछा करनेवाले मुगल कोसों पीछे रह गए, तब व्याकुल होकर वह भूमि पर गिर पड़ा और अपने स्वामी की ओर प्यार से देख, उसने प्राण छोड़ दिए। ऐसे स्वामि-भक्त घोड़े के स्मरण के लिये, जहाँ पर वह मरा था वहाँ, प्रतापसिंह ने एक स्मारक बनवा दिया है।

हल्दीघाटी की लड़ाई के बाद उदयपुर भी महाराणा के हाथ से निकल गया। इसी समय से महाराणा प्रतापसिंह को

दुर्भाग्य ने सब ओर से घेर लिया। तब से उनको एक क्षण भी सुख से रहने का दिन नहीं आया। अपनी स्त्री और सन्तान को साथ लिए हुए एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ पर, दूसरे से तीसरे पर, और तीसरे से चौथे पर जाकर, उनको अपना और अपने कुटुम्ब को प्राण-रक्षा करनी पड़ी। आज यहाँ, कल वहाँ, और परसों किसी दूसरे स्थान में! इसी प्रकार वे बराबर घूमते और नाना प्रकार के कष्ट सहते रहे। जङ्गली फल उनका भोजन था, घास-फूस उनका बिछौना था, और खाने-पीने के समय पेड़ों के पत्ते उनके बरतन थे। उनका पता लगाने के लिये मुगलों के दूत पहाड़ों और घाटियों में घूमा करते थे। कभी कभी वे इसी विपत्ति में फँस जाते थे कि अपनी स्त्री, पुत्र आदि को विश्वास-पात्र भीलों के यहाँ रख कर उन्हें कहीं न कहीं चला जाना पड़ता था। कभी कभी उनको फल तक खाने को नहीं मिलते थे। ऐसी दशा में घास के बीजों की रोटी खाकर वे अपने दिन काटते थे। एक बार सन्ध्या को उनकी लड़की के खाने के लिये एक रोटी रक्खी थी। उसे एक वन-बिलाव उठा ले गया। यह देखकर लड़की चिल्ला उठी और बिलख बिलख कर रोने लगी। अपनी संतान की ऐसी दुर्दशा देखकर प्रतापसिंह का वज्र के समान कड़ा हृदय भी पिघल उठा। इस

रोटी एक वनबिलाव उठा ले गया

समय उनको इतना दुःख हुआ कि उन्होंने अकबर की शरण में जाने का विचार कर लिया। परन्तु, बीकानेर के राजा के छोटे भाई पृथ्वीराज के समझाने पर उन्होंने वह विचार छोड़ दिया।

बहुत वर्षों तक इस प्रकार कष्ट भोग कर प्रतापसिंह मारवाड़ की ओर गये। इसी समय उनके मन्त्री ने अपने पूर्वजों की इकट्ठी की हुई बहुत-सी सम्पत्ति उनके सम्मुख रखकर अपूर्व स्वामि-भक्ति दिखलाई। उसी धन से प्रतापसिंह ने फिर सेना इकट्ठा करके मुगलों से युद्ध किया। इस युद्ध में उनकी जीत हुई और चित्तौर, अजमेर, तथा मङ्गलगढ़ को छोड़ कर उन्होंने अपना सारा राज्य अकबर से छीन लिया। परन्तु, मेवाड़ की प्राचीन राजधानी चित्तौर को न पाने के कारण उनके हृदय की चिन्ता नहीं गई। उसी चिन्ता ने उनको निर्बल कर दिया। धीरे धीरे रोग ने प्रतापसिंह के शरीर को अपना घर बना लिया और शीघ्र ही उनको यह संसार सदैव के लिये छोड़ देना पड़ा।

बहुत दिनों तक भारी आपदाओं में फंसे रह कर भी प्रतापसिंह ने धैर्य्य नहीं छोड़ा। उन्होंने अपने देश के ऊपर अपनी प्रीति कम नहीं होने दी। उन्होंने कई बार विफल-मनोरथ होने पर भी उद्योग करने में कमी नहीं की। आपत्ति

में घबड़ाना न चाहिए; अपने देश के कल्याण के लिये कोई बात उठा न रखनी चाहिए; और एक बार सफल न होने पर उसे पूरा करने के लिये फिर भी प्रयत्न करना चाहिए—प्रतापसिंह के चरित से यही शिक्षा मिलती है।

कठिन शब्द—

**विपत्ति, जीविका, पूर्वज, स्वयं, अपमान, रुधिर, व्याकुल, कुटुम्ब, विलम्ब, धैर्य, विफल-मनोरथ।**

प्रश्न—

(१) मानसिंह के साथ राणा ने भोजन क्यों न किया?
(२) चेतक के बारे में तुम क्या जानते हो?
(३) प्रताप को सेना भर्ती करने के लिये धन कहाँ से मिला?
(४) महाराणा के जीवन से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है?

---

पाठ ४९

## नल और दमयन्ती

( १ )

प्राचीन समय में राजा वीरसेन निषध देश में राज्य करते थे। उनके पुत्र का नाम नल था। वह बड़ा विद्वान, वीर और रूपवान था। वह अश्वविद्या में बड़ा निपुण था। उस समय विदर्भ देश में भीम नामक राजा राज्य करते थे। उनके एक पुत्री थी जिसका नाम दमयन्ती था। [illegible]

को इसके विवाह की चिन्ता हुई। राजा भीम से लोग आकर नल की प्रशंसा करते और राजा नल के यहाँ जाकर दमयन्ती के रूप और गुण का बखान करते। एक दूसरे के गुण सुनकर, नल और दमयन्ती को एक दूसरे से विवाह करने की इच्छा हुई।

एक समय राजा नल ने एक तालाब में कुछ हंसों को देखा। उसने उनको पकड़ना चाहा। और सब हंस तो भाग गए, केवल एक हस राजा के हाथ आया। उस पक्षी ने राजा से विनय की कि महाराज! आप मुझे न मारें; मैं आपका सँदेसा ले जाकर दमयन्ती से कहूँगा, जिससे वह आपके अतिरिक्त किसी दूसरे से विवाह न करे। राजा नल ने उसका कहना मान कर उसे छोड़ दिया। वह हंस अपने साथियों में जा मिला और विदर्भ देश की ओर उड़ चला। सब हंस विदर्भ नगर में पहुँच कर दमयन्ती के महल पर उतर पड़े। उन पक्षियों को देखकर ,दमयन्ती बहुत प्रसन्न हुई। वह उन्हें पकड़ने को दौड़ी तो वे पक्षी इधर उधर उड़ गए। जिस हंस से नल की बातें हुई थीं, जब दमयन्ती उसे पकड़ने गई, तब उसने राजा नल के रूप और गुण की प्रशंसा करके दमयन्ती को नल के साथ विवाह करने की सलाह दी। वह पहले ही से राजा नल को अपने मन से वर

चुकी थी। हंस के द्वारा नल के प्रेम का पता पाकर और भी प्रसन्न हुई और अपना मनोरथ हंस के द्वारा राजा नल के पास भेजा। हस ने आकर राजा नल को दमयन्ती का समाचार कह सुनाया।

राजा भीम ने अपनी कन्या को विवाह योग्य जानकर स्वयंवर रचा। देश भर मे दमयन्ती के स्वयंवर का समाचार भेजा गया। न्योता पाकर बड़े बड़े राजा दमयन्ती का स्वयंवर देखने के लिये राजा भीम के नगर में आने लगे। राजा भीम ने उन सबका यथायोग्य सत्कार किया। राजा नल भी दमयन्ती के स्वयंवर में पहुँचे।

स्वयंवर के दिन राजा भीम ने सब राजाओं को स्वयंवर-सभा में बुलाया। दमयन्ती भी वहाँ लाई गई। उसने राजा नल के गले में जयमाला डाल दी। राजा भीम ने राजा नल के साथ दमयन्ती का विवाह कर दिया। राजा नल कुछ दिन वहाँ रह कर, दमयन्ती के साथ अपने नगर को लौट आये। वे सुखपूर्वक रहने लगे। कुछ समय बाद नल और दमयन्ती के इन्द्रसेन नाम का एक पुत्र और इन्द्रसेना नाम की एक कन्या हुई।

( २ )

यों तो राजा नल बड़े गुणी थे पर उनको जुआ खेलने की आदत पड़ गई थी। जब दमयन्ती ने सुना कि

राजा जुआ खेलते हैं तब उसने उन्हें बहुत रोका, पर राजा ने उसकी बात न सुनी। कोई भी उनका जुआ खेलना बन्द न कर सका। जब दमयन्ती ने देखा कि राजा नल किसी का कहना नहीं मानते तब उसने सारथी को बुलाकर कहा—इन्द्रसेन और इन्द्रसेना को मेरे पिता के यहाँ पहुँचा आ। दमयन्ती की आज्ञा से उन बालकों को रथ पर चढ़ाकर सारथी विदर्भ देश पहुँचा आया।

धीरे धीरे राजा नल जुए में सब राज-पाट हार गए। वे केवल एक वस्त्र पहिन, दमयन्ती को साथ ले, अपनी राजधानी छोड़कर जंगल की ओर चल दिए। राजा नल के चले जाने पर पुष्कर ने नगर में यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो कोई नल को आश्रय देगा वह मेरे हाथ से मारा जाएगा। इस भय से राजा नल को किसी ने ठहरने तक न दिया। वे जंगल में तीन दिन तक केवल जल पीकर रहे। इसके पश्चात कुछ फल मूल खाकर पेट भरा। आगे चलकर राजा नल ने एक पेड़ पर कुछ पक्षियों को बैठे देखा। उन्होंने उनके पकड़ने का विचार कर उन पर अपनी धोती फेंकी। पर वे पक्षी धोती समेत उड़ गए। अपनी यह दुर्दशा देखकर राजा नल ने दमयन्ती से कहा कि देखो, पहाड़ पर जो मार्ग जाता हुआ दिखाई देता है वह दक्षिण की ओर गया है।

वही तुम्हारे पिता के देश (विदर्भ) को जाता है। उसने कहा—क्या आप चाहते हैं कि मै अपने पिता के घर चली जाऊँ ? मुझसे यह न होगा। आप तो अकेले वनों में मारे मारे फिरें और मैं अपने पिता के यहाँ जाकर चैन से रहूँ। यह कभी न होगा। मैं आपके ही साथ रह कर आपके कष्टों को दूर करती रहूँगी। यदि आपकी यह इच्छा है कि मैं अपने माता पिता के पास चली जाऊँ तो कृपाकर आप भी मेरे साथ चलें। वे आपका बड़ा आदर करेंगे। हम दोनों वहाँ सुखपूर्वक रहेंगे। पर नल ने विदर्भ देश को जाना स्वीकार न किया। राजा नल इसी प्रकार भूखे प्यासे फिरते रहे। दमयन्ती थककर सो गई। नल वहाँ से चुपचाप चले गए। दमयन्ती जंगल में अकेली सोती रह गई।

( ३ )

जब दमयन्ती जागी तब नल को न देख रोने लगी। उसने आसपास खोज की। कहीं भी पता न चला। अन्त मे वह रोती, पीटती आगे बढ़ी। मार्ग में उसे एक अजगर ने पकड़ लिया, परन्तु एक बहेलिये ने आकर उसकी रक्षा की।

दमयन्ती जंगलों में घूमती हुई व्यापारियों के साथ चन्देरी के राजा सुबाहु के देश में जा निकली। उसे देखकर राजमाता ने उसे किसी भले मानस की स्त्री

जान, नौकर द्वारा, अपने पास बुलाया और पूछा—तुम कौन हो, किसकी बेटी हो और क्यों मारी मारी फिरती हो? दमयन्ती ने अपना सब हाल कहा, परन्तु अपना और पति का नाम न बताया। राजमाता ने कहा कि तुम मेरे यहाँ रहो: तुम्हारा पति भी घूमता फिरता यहीं आजायगा। दमयन्ती उसके साथ अपने दुःख के दिन काटने लगी।

इधर राजा नल दमयन्ती को वन में अकेली छोड़कर एक घने वन में जा पहुँचे। वहाँ उन्हें एक साँप ने काट खाया। उसके विष से वे मरे तो नहीं पर उनका रंग काला होगया। अपना बदला हुआ रूप देख कर राजा प्रसन्न हुए। उन्होंने सोचा कि अब मुझे कोई न पहचानेगा वे अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के यहाँ गए। राजा ने पूछा तुम कौन हो, क्या चाहते हो और क्या काम कर सकते हो? नल ने कहा—मैं बाहुक नामक राजा नल का सारथी हूँ। घोड़ों को चलाने में मैं निपुण हूँ। मैं रसोई भी अच्छी बना सकता हूँ। राजा ने उसे नौकर रख लिया।

( ४ )

जब दमयन्ती के पिता राजा भीम को यह समाचार मिला कि राजा नल जुए में राज्य हारकर दमयन्ती के साथ वन को चले गये हैं, तब उन्होंने बेटी और दामाद

खोज में अपने दूत भेजे। उनमें से सुदेव नाम के ब्राह्मण ने घूमते घूमते चन्देरी के राजा के यहाँ जाकर दमयन्ती को पहचाना। उसने दमयन्ती के पास जाकर अपना परिचय दिया और कहा कि मैं तुम्हीं को ढूँढ़ने आया हूँ। दमयन्ती ने रो रो कर अपने माता पिता, और भाई का हाल उस ब्राह्मण से पूछा। राजमाता ने वहाँ आकर ब्राह्मण से पूछा कि यह किसकी स्त्री और किसकी पुत्री है? यह अपने पति और माता-पिता से किस प्रकार बिछुड़ गई है? सुदेव ने दमयन्ती का पूरा हाल कह सुनाया। जब राजमाता को मालूम हुआ कि यह विदर्भ देश के राजा भीम की पुत्री और राजा नल की रानी है तब उसे बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि वह दमयन्ती की मौसी लगती थी।

मौसी की आज्ञा से दमयन्ती अपने पिता के घर चली गई। दमयन्ती के मिल जाने से राजा भीम को बड़ा आनन्द हुआ। परन्तु राजा को नल की चिन्ता बनी रही। उन्होंने देश-देशान्तरों में नल का पता लगाने को ब्राह्मण भेजे। एक ब्राह्मण ने लौट कर कहा कि मैं अयोध्या नगरी में राजा ऋतुपर्ण के यहाँ गया था। वहाँ राजा के बाहुक नामी एक सारथी ने आकर मुझसे कुशल पूछी। मैंने जब यहाँ का समाचार सुनाया तब उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

दमयन्ती ने समझ लिया कि हो न हो वे राजा नल ही हैं। उसने उस ब्राह्मण को अयोध्या नगरी में राजा ऋतुपर्ण के यहाँ सन्देसा देकर भेजा कि विदर्भ देश के राजा की पुत्री दमयन्ती अब फिर अपना स्वयंवर करना चाहती है, क्योंकि राजा नल का तो अब कहीं पता नहीं है। अतएव आप कृपाकर कल सवेरे ही वहाँ अवश्य पधारें। इस स्वयंवर के लिये बहुत से राजा और राजकुमार एकत्र हुए हैं। कल सूर्य्य निकलने तक आप पहुँच जायं तो अच्छा है, क्योंकि वह सवेरे ही किसी राजा को वरेगी। अयोध्या पहुँचकर उसने राजा से दमयन्ती के स्वयंवर का सन्देसा कहा।

ब्राह्मण की बात सुनकर राजा ने बाहुक से कहा कि मैं कल सवेरे ही दमयन्ती के स्वयंवर में पहुँचना चाहता हूँ। यह सुनकर नल को बड़ा दुःख हुआ। उसने मन ही मन यह विचारा कि दमयन्ती से ऐसा काम कभी न होगा। मेरे बुलाने के लिये ही शायद यह उपाय सोचा गया है। बाहुक ने राजा से कहा कि कोई चिन्ता नहीं, मैं आपको कल सवेरे ही पहुँचा दूंगा। बाहुक ने जैसा कहा वैसा ही किया। सूर्य्य निकलने से पहले ही उसने राजा को पहुँचा दिया। यह देख राजा ने बाहुक से कहा कि तुम मुझे अश्वविद्या सिखा दो तो मैं तुमको अक्षविद्या (जुए

नल और दमयन्ती की सुहाग भेंट

में पासा डालने की विद्या) सिखा दूं। नल ने राजा को अन्वविद्या सिखाकर राजा से अक्षविद्या सीख ली।

जब राजा ऋतुपर्ण राजा भीम के यहां आए तब राजा भीम ने उनका बड़ा सत्कार किया। दमयन्ती ने बाहुक की कई प्रकार से परीक्षा की और अन्त में निश्चय किया कि यही मेरा पति राजा नल है। उसने अपने माता-पिता से आज्ञा लेकर बाहुक को बुलाया और उसकी अन्तिम परीक्षा ली। जब दमयन्ती ने नल को और नल ने दमयन्ती को देखा तब दोनों अपनी अपनी आंखों में आंसू भर लाए। नल ने कहा कि तुमने जो अपराध [illegible] स्वभाव था। [illegible] दुःख का [illegible] परन्तु मुझे दुःख है कि तुम दूसरा [illegible] हो। क्या यह बात सच है? [illegible] हाल कह सुनाया [illegible] खोजा गया था। [illegible] राजा नल [illegible] ली सुन्दर [illegible]

[illegible]

अयोध्या नगरी को लौट गए। इधर राजा नल भी कुछ दिन ससुराल में रहकर, अपनी स्त्री और पुत्र को साथ ले, अपने देश चले गए। अपने राज्य में पहुँच कर उन्होंने अपने भाई पुष्कर से फिर जुआ खेलकर अपना राज्य वापस ले लिया। राज्य पाकर वे दमयन्ती के साथ सुखपूर्वक रहने लगे।

कठिन शब्द—

**अश्व-विद्या, रूपवान, रूपवती, समाचार, यथायोग्य, सत्कार, जयमाला, आश्रय, राजमाता, प्रभाव, देश-देशान्तर, ढिँढोरा।**

प्रश्न—

(१) स्वयंवर कैसे रचा जाता है ?
(२) पुष्कर ने ढिंढोरा क्यों पिटवाया ?
(३) राजा नल ने अपना नाम क्यों बदल डाला ?
(४) दमयन्ती ने दूसरे स्वयंवर की खबर क्यों फैलाई ?

---

पाठ ४६

## पहेलियाँ

पानी में निशि-दिन रहे, जाके हाड़ न मांस।
काम करे तलवार का, फिर पानी में वास॥ १॥

बाँबी वाकी जल भरी, सिर पर जारी आग।
जबहिं बजाई बाँसुरी, निकसो कारो नाग ॥२॥
आदि कटे छै-पँच गुनो, मध्य कटे 'अस' होय।
अन्त-मध्य को जोड़िये, तिय सतवन्ती होय ॥३॥
पग-विहीन अरु मुख-रहित, नारी विज्ञ लखात।
शत शत योजन धायके, कहत हृदय की बात ॥४॥
सावन-भादों बहुत चलत है, माघ पूस में थोड़ी।
सुनियो री ऐ चतुर सहेली, अजब पहेली 'मोरी' ॥५॥
एक अचंभा देखो चल, सूखी लकड़ी लागे फल।
जो कोई उस फल को खाय, पेड़ छोड़ वह और न जाय ॥६॥
फाटो पेट दरिद्री नाम, उत्तम घर में वाको ठाम।
श्री को अनुज विष्णु को सारो, पंडितजी यह अर्थ विचारो ॥७॥

कठिन शब्द—

सतवन्ती, बाँबी, योजन, श्री, अनुज।

प्रश्न—

(१) पहेली के [illegible]
(२) [illegible]

पहेलियों के उत्तर—

कुम्हार का डोरा, [illegible], [illegible], पाती, मोरी, [illegible], [illegible]।

पाठ ४७

## मुगल बादशाह

मुगल बादशाहों में छः अधिक प्रसिद्ध हो गए हैं—बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ और औरङ्गजेब। दिल्ली के बादशाह इब्राहीम लोदी को हराकर भारतवर्ष में मुगल-राज्य को जमानेवाला बाबर था। चार ही वर्ष राज्य कर वह सन १५३१ ई० में मर गया। तब उसका पुत्र हुमायूँ बादशाह हुआ। हुमायूँ के बाद उसका पुत्र अकबर राजसिंहासन पर बैठा। मुगल बादशाहों में सबसे बड़ा बादशाह अकबर था। वह बड़ा वीर और बुद्धिमान था। उसके बहुत से शत्रु थे जो चाहते थे कि उसका राज्य छीन लें परन्तु उसने उन्हें हराकर अपना राज्य मजबूत कर लिया।

एक बार उसको एक शत्रु से लड़ना पड़ा जिसका नाम हेमू था। अकबर की जीत हुई। सिपाही उसको पकड़ कर अकबर के सामने लाए और कहा कि हुजूर शत्रु को अपने हाथ से मारिए। इस समय यह बिलकुल आपके वश में है। अकबर ने कहा—यह घायल हो गया है और इस समय अशक्त है। मैं इस पर हाथ न उठाऊँगा। लोगों ने बहुत यत्न किए परन्तु अकबर ने हेमू
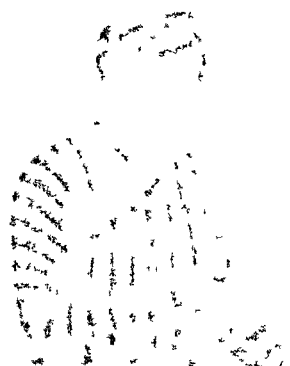
रुपया-पैसा ले लेकर धनी हो जाते थे और गरीबों के पास खाने तक को कुछ न रहने देते थे। जब अकबर को यह विदित हुआ तब उसने अमीरों को अत्याचार करने से रोका। इससे प्रजा उस पर बहुत प्रसन्न हुई।

अकबर के उपरान्त जहाँगीर दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। पर सच पूछो जाय तो शासन का भार जहाँगीर की बेगम नूरजहाँ पर था।

जहांगीर

भारत की विख्यात स्त्रियों में नूरजहाँ का नाम लिया जाता है। अपने बुद्धि-बल के प्रभाव से इसने बादशाह, शाह-जादा और दरबार के सभी सरदारों को अपनी मुट्ठी में कर

लिया था। जहाँगीर के राज्य-काल के पिछले सोलह वर्षों में मुगल-राज्य का शासन इसी ने किया था। नूरजहाँ स्वयं बड़ी बुद्धिमती और पढ़ी लिखी स्त्री थी। दीन दुखियों पर वह बड़ी दयालु रहती थी।
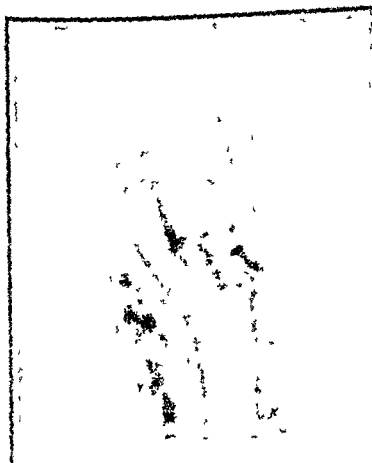
तैयार किया था। यह इमारत देखने में बहुत लम्बी चौड़ी नहीं है परन्तु इसकी पच्चीकारी का काम देखकर देखनेवाले चकित रह जाते हैं। सराहना सुनकर या चित्र देखकर इस विचित्र इमारत का ठीक ठीक ज्ञान नहीं हो सकता। वह तो देखने ही से प्राप्त हो सकता है। इसे देखने के लिये यूरोप, अमेरिका आदि से यात्री आया करते हैं।

औरङ्गजेब

शाहजहाँ ने यह स्मारक अपनी प्यारी बेगम मुम-[illegible] की कब्र पर बनवाया था। इसलिये इसको [illegible] या ताजबीबी का रौजा कहते हैं। शाहजहाँ चाहता था कि यमुना नदी के दूसरे किनारे पर ठीक

में पड़े रहते ? यदि मेरे पंख लगे होते तो मैं उड़कर एक बार सारी दुनिया देखता। मान लो मेरे पंख लग गये और मैं पृथ्वी की यात्रा करने लगा। आओ अब तुम्हें पृथ्वी का हाल सुनाऊँ।

देखो, यह हमारा भारतवर्ष है—

"हमारा है यह भारतवर्ष।<br>
फैला कर निज बाहु हिमालय,<br>
खड़ा अनादि काल मे निर्भय,<br>
करता है घोषित उसकी जय।<br>
द्वार-रक्षक वह है दुर्धर्ष,<br>
हमारा है यह भारतवर्ष।"

भारत उत्तर मे हिमालय की ऊँची दीवार से घिरा है। न जाने कब से हिमालय हम लोगों की रक्षा कर रहा है। वह ऐसा रक्षक है कि उत्तर की ओर से शत्रु उसे लाँघकर देश में नहीं घुस सकते। यदि हिमालय न होता तो यहाँ पानी की एक बूँद भी न गिरती।

इसके उत्तर मे तिब्बत का देश है। तिब्बत का धरातल भारत से बहुत अधिक ऊँचा है। यहाँ बड़ी ठंडी हवा चलती है। पर अपने गरम कपड़ों के कारण यहाँ के लड़के उसकी परवाह नहीं करते। वे हाथ जोड़कर नमस्कार नहीं करते। जीभ निकाल कर स्वागत करना ही उनका

नमस्कार है। यह ढंग हमें बेहूदा लगेगा, पर तिब्बत में ऐसा करना शिष्टाचार समझा जाता है।

हिमालय की बर्फ से ढँकी एक चोटी

तिब्बत के आगे चीन देश मिलेगा। यह बड़ा प्राचीन देश है। यहाँ के लोग बड़ी लम्बी चोटी रखते हैं और बड़े मोटे तल्ले के जूते पहनते हैं। चीनी लोग रंग-बिरंगे और ढीले ढाले रेशमी या सूती कपड़े पहनते हैं। यहाँ के लड़के और लड़कियाँ अपने माता-पिता के बड़े भक्त होते हैं।

चीन के पास ही जापान द्वीप है। यह फूलों का देश है। जापानी लोग फूल बहुत पसन्द करते हैं। यहाँ के लड़के अपने सुन्दर वस्त्र पहनने पर फूल के समान सुन्दर देख पड़ते हैं। जापानी लड़के पतंग खूब उड़ाते हैं। चीनी लड़कों की भाँति ये भी बड़े सुशील और माता-पिता

जापान से दक्षिण, प्रशान्त-महासागर के मध्य में, आस्ट्रेलिया महाद्वीप है। पहले इस देश का संसार को

कंगारू

कोई पता न था। इसे योरप के साहसी यात्रियों ने खोज निकाला है। इस समय यह अँगरेज़ों के अधिकार में है। वे यहाँ आकर बस गये हैं। आस्ट्रेलिया विचित्र देश है। यहाँ के पशु-पक्षी सभी विचित्र होते हैं। यहाँ कंगारू नाम

इस प्रकार हमने ससार भर की परिक्रमा कर डाली और यह देख लिया कि ससार के भिन्न-भिन्न देशों की क्या दशा है।

कठिन शब्द—

**अनादि, घोषित दुर्धर्ष, धरातल, शिष्टाचार, मूलनिवासी परिक्रमा।**

प्रश्न—

(१) भारतवर्ष का उत्तरी भाग किस पर्वत से घिरा है? उसके आगे कौन से देश है?

(२) आस्ट्रेलिया को किसने खोज निकाला?

(३) कंगारू जानवर में क्या विचित्रता है?

(४) जो पहला योरोपीय यात्री भारत आया था उसका नाम क्या था?

(५) डेनमार्क देश में क्या विशेषता है?

---

पाठ ४९

## राजपूताना

... और चन्द्रवंशीय राजपूत क्षत्रिय कहाते है। ये लोग ... है, उस प्रदेश का ही नाम राजस्थान

योरप में पिछली बार जो युद्ध हुआ था उसमें यह देश बुरी तरह हारा था। जर्मनी के पास ही हालैंड का विचित्र देश है। यह देश समुद्र की सतह के नीचे है। यहाँ बड़े-बड़े बाँध बाँध कर समुद्र का जल रोका गया है। यदि बाँध टूट जाय तो सारे देश में जल भर जाय। यहाँ के लोग बड़े ढीले-ढाले कपड़े और काठ के जूते पहनते हैं।

हालैंड के पास डेनमार्क और डेनमार्क के उत्तर में नार्वे और स्वीडन के देश हैं। नार्वे और स्वीडन के उत्तरीय भाग में गर्मी में दो महीने तक सूर्य्य नहीं डूबता। इसी प्रकार जाड़ों में दो महीने तक रात ही रात रहती है। वहाँ जाड़ों में लड़के-लड़कियाँ बर्फ पर दौड़ लगाते हैं। उन्हें यह खेल बहुत पसन्द है।

स्वीडन के बाद रूस देश मिलता है। जाड़े में यहाँ बड़ी कड़ी सर्दी पड़ती है। यह बड़ा भारी देश है।

इसके दक्षिण में काला सागर और उससे आगे तुर्कों का देश मिलता है। तुर्क लोग वीर होते हैं। तुर्कों के देश के एक ओर अफ्रीका का मिस्र देश और दूसरी ओर ईरान है। ईरान और उसके बाद अफगानिस्तान होकर हम फिर अपने भारत में आ पहुँचे।

स्पेन की रानी ने ही भेजा था । पर वह रास्ता भूल कर अमेरिका जा पहुँचा । स्पेन में लड़के-लड़कियों को नाचने-गाने का बड़ा शौक है । पोर्तगाल देश भी बहुत सुन्दर है। जो पहला योरोपीय यात्री भारत आया था उसका नाम वास्को-डि-गामा था और वह इसी पोर्तगाल का रहने-वाला था ।

वास्को-डि-गामा

स्पेन के बराबर ही समुद्र में घुसा हुआ इटली का देश है । इटली के पास ही यूनान है । ये दोनों योरप के बड़े पुराने देश है। इटली के लड़के रंग-बिरंगे कपड़े पहनते हैं और गाने के बड़े शौकीन होते हैं । इटली के उत्तर में आल्प्स नामक प्रसिद्ध पर्वत है । स्विस जाति के लोगों का स्विटजर-लेंड नामक देश इसी पर्वत पर बसा है । आल्प्स पहाड की ऊँची चोटियाँ बारहों महीने बर्फ से ढँकी रहती हैं । वहाँ के लोग शिकार के बड़े शौकीन होते हैं ।

स्विटजरलेंड के उत्तर में जर्मनी का बड़ा देश है ।

[illegible] होता था। जर्मनी के पास ही [illegible] देश है। यह देश समुद्र [illegible] बाँध बाँध कर समुद्र का जल रोका गया है [illegible] देश [illegible] के लोग बड़े ढीले-ढाले कपड़े और पाँव में [illegible] पहनते हैं।

हालैंड के पास डेन्मार्क और डेन्मार्क के उत्तर में नार्वे और स्वीडन के देश हैं। नार्वे और स्वीडन के उत्तरी भाग में गर्मी में दो महीने तक सूर्य नहीं डूबता। इसी प्रकार जाड़ों में दो महीने तक रात ही रात रहती है। यहां जाड़ों में लड़के-लड़कियां बर्फ पर दौड़ लगाते हैं। उन्हें यह खेल बहुत पसन्द है।

स्वीडन के बाद रूस देश मिलता है। जाड़े में यहाँ बड़ी कड़ी सर्दी पड़ती है। यह बड़ा भारी देश है।

इसके दक्षिण में काला सागर और उसके आगे तुर्कों का देश मिलता है। तुर्क लोग वीर होते हैं। तुर्कों के देश के एक ओर अफ्रीका का मिस्र देश और दूसरी ओर ईरान है। ईरान और उसके बाद अफगानिस्तान पार करके फिर अपने भारत में आ पहुँचे।

इस प्रकार हमने संसार भर की परिक्रमा कर डाली और यह देख लिया कि संसार के भिन्न-भिन्न देशों की क्या दशा है।

कठिन शब्द—

**अनादि, घोषित, दुर्धर्ष, धरातल, शिष्टाचार, मूलनिवासी, परिक्रमा।**

प्रश्न—

(१) भारतवर्ष का उत्तरी भाग किस पर्वत से घिरा है? उसके आगे कौन से देश हैं?

(२) आस्ट्रेलिया को किसने खोज निकाला?

(३) कंगारू जानवर में क्या विचित्रता है?

(४) जो पहला योरोपीय यात्री भारत आया था, उसका नाम क्या था?

(५) डेनमार्क देश में क्या विशेषता है?

---

पाठ ४९

## राजपूताना

सूर्य और चन्द्रवंशीय राजपूत क्षत्रिय कहाते हैं। ये लोग जहाँ निवास करते हैं, उस प्रदेश का ही नाम राजस्थान

अथवा राजपूताना है। इस विस्तृत प्रदेश के उत्तर में शतद्रु नदी और दक्षिण में मरुभूमि अथवा जङ्गल है। पश्चिमी सीमा पर सिन्धु नदी और पूर्व में बुन्देलखण्ड है।

इस प्रान्त का क्षेत्रफल १. २८, ९८७ वर्गमील और जन-संख्या एक करोड़ के लगभग है। राजपूत क्षत्रियों में सूर्य और चन्द्र वंश के अतिरिक्त एक और अग्निकुल था। अग्निकुल की चार शाखाएँ प्रसिद्ध हैं। उनके नाम प्रमार, परिहार. चालुक्य अथवा सोलङ्की और चौहान हैं। सूर्य. चन्द्र और इन चारों शाखाओं से मिल कर और भी बहुत से राजकुल बन गए हैं। इस प्रकार राजपूताने में इस समय ३ . कुल वर्तमान हैं। इन छत्तीस कुलों में प्रत्येक ने राजपूताने में कभी न कभी ख्याति पाई है।

राजपूताने में मेवाड़ सबसे अधिक प्राचीन और प्रसिद्ध राज्य है। यह मारवाड़ के पूर्व-दक्षिण में है। इसका क्षेत्रफल १२, ७५२ वर्गमील है। और सन् १९११ ई० की मनुष्य-गणना के अनुसार यहाँ की जन-संख्या २२.९५.२७७ है। यहाँ के महाराणा को ३१ तोपों की सलामी होती है और सेना में २५३ कमान. १.३३८ गोलन्दाज. ६.२४० सवार और १.३८,००० सिपाही हैं।

उसके बाद प्राचीनता में जैसलमेर का नाम आता है। यह भी सबसे पुरानी रियासत है। मेवाड़ का नया नाम उदयपुर, मारवाड़ का जोधपुर, कृष्णसर का बीकानेर और आमेर का जयपुर है। कोटा और बूँदी दोनों पुराने नाम हैं। सबसे पहले जिस वीर पुरुष ने मेवाड़राज्य की प्रतिष्ठा की थी, उसका नाम महाराज कनकसेन था।

राजपूतों के वंश में बाप्पा रावल बहुत बड़े प्रतापी और शूरवीर राजा हो गये हैं। उनके बाहुबल की धाक अफगानिस्तान और ईरान तक में थी। उस समय के बड़े बड़े शूरवीरों को उन्होंने लोहे के चने चबवाये थे। अफगानिस्तान और ईरान की कई स्त्रियों से उन्होंने अपनी शादियाँ की थीं। उनकी इस विजय का कारण उनकी भीलों की सेना थी। भीलों ने अपने रक्त का तिलक लगाकर उन्हें राजा बनाया था। इसी लिए बाप्पा के वंशधर आज भी राज्याभिषेक के समय रक्त का तिलक लगाया करते है। कहते है, बाप्पा ने भगवती पार्वती की आराधना की थी और देवी ने उन्हें वरस्वरूप कुछ अस्त्र-शस्त्र प्रदान किया था। उनमे से बाप्पा की एक तलवार आज भी उदयपुर के किले में मौजूद है। इसका वजन ३२ सेर है। विजयदशमी को उदयपुर के महाराणा उसकी पूजा करते हैं।

क्षत्रिय राजाओं ने बहुत समय से अपने अधिकार को सुरक्षित रक्खा था। परन्तु अकबर के समय वे हीन-बल हो उठे थे। नीति-कुशल अकबर ने समझ लिया था कि राजपूतों को बलपूर्वक दबा देना असम्भव है। इसलिये उसने नाना युक्तियों द्वारा उन्हें हतवीर्य किया। उसने मित्र बन कर उनका धीरे धीरे सर्वनाश किया। सबसे पहले आँबेर के राजा बिहारीमल्ल ने मुगलों की दासता स्वीकार की और राजप्रासाद की लोलुपता के कारण उसने अपनी कन्या का विवाह अकबर से कर दिया। कतिपय राजपूत राजा बिहारीमल्ल के प्रदर्शित पथ पर चलकर अपनी जाति के गौरव के घातक हुए। मेवाड़पति हिन्दू-सूर्य महाराणा इस जघन्य व्यापार से सदैव पृथक् रहे। यही नहीं, उन्होंने इस जातीय कलङ्क को मिटाने का बड़ा उद्योग भी किया।

राजपूताने के इतिहास में राजपूत क्षत्राणियों का नाम भी अमर रहेगा। इन वीर महिलाओं ने धर्म की तुलना में जीवन को सदैव तुच्छ समझा और विपत्ति के समय आग में जलकर अपने प्राणों की आहुति दे दी। जलकर प्राण देने का उनका यह व्रत जौहर व्रत कहलाता है। आजकल राजपूताने में छोटे-मोटे २१ नरेशों के अतिरि

सैकड़ो जागीरदार जो महाराजा साहब, आवजी साहब व
ठाकुर साहब आदि कहलाते हैं, शासन करते हैं।

कठिन शब्द—

**ख्याति, सङ्गठन, प्रतिष्ठा, राज्याभिषे
आराधना, मुक्ति, लोलुपता, आहुति।**

प्रश्न—

(१) राजपूताने का यह नाम क्यों पड़ा ?
(२) यह प्रदेश क्यों मशहूर है ?

---

Printed and published by K Mittra, at The Indian
Press, Ltd, Allahabad